"MALKHAN SINGH KI KAVITA MEIN DALIT CHETANA"

A dissertation submitted during 2015 to the University of Hyderabad in partial fulfillment of the award of a **M.phil Degree** in Department of Hindi, School of Humanities.

By

SANDEEP KUMAR

14HHHL14

2015

Department of Hindi

School of Humanities

University of Hyderabad

Central University (P.O)

Prof. C. R. Rao Road

Gachibowli

Hyderabad – 500 046

Telangana

INDIA

D E C L A R A T I O N

I **SANDEEP KUMAR**, hereby declare that this dissertation entitled "**MALKHAN SINGH KI KAVITA MEIN DALIT CHETANA**" (**'मलखान सिंह की कविता में दलित चेतना'**) submitted by me under the guidance and supervision of **Prof. V. KRISHNA** is a bonafide research work. I also declare that it has not been submitted previously in part or full to this University or any other University or Institution for the award of any degree or diploma. I hereby agree that my dissertation can be deposited in Shodhganga /INFLIBNET.

Name: **SANDEEP KUMAR**

(Signature of the Student)

Regd. No. 14HHHL14

Date:

Hyderabad

C E R T I F I C A T E

This is to certify that the dissertation entitled "**MALKHAN SINGH KI KAVITA MEIN DALIT CHETANA**" (**'मलखान सिंह की कविता में दलित चेतना'**) submitted by **SANDEEP KUMAR** bearing Reg. No.14HHHL14 in partial fulfillment of the requirements for the award of Master of Philosophy in Hindi is a bonafide work carried out by him under my supervision and guidance which is a plagiarism free dissertation.

As far as I know the dissertation has not been submitted previously in part or full to this or any other University or Institution for the award of any degree or diploma.

Signature of the Supervisor

Head of the Department

Dean of the School

अनुक्रमणिका

भूमिका 1-4

प्रथम अध्याय - मलखान सिंह का व्यक्तित्व और कृतित्व 5-24

1.1 मलखान सिंह का जीवन परिचय

1.2 शिक्षा और रोजगार

1.3 परिवेश और वातावरण

1.4 रचना-प्रक्रिया

द्वितीय अध्याय - मलखान सिंह की कविता में दलित चेतना 25-76

2.1 दलित चेतना

2.2 सामाजिक चेतना

2.3 राजनीतिक चेतना

2.4 सांस्कृतिक चेतना

2.5 आर्थिक चेतना

2.6 शैक्षिक चेतना

तृतीय अध्याय - अभिव्यक्ति के विविध आयाम 77-105

3.1 भाषा

3.2 शैली

3.3 बिम्ब

3.4 प्रतीक

3.5 मिथक

उपसंहार 106-108

परिशिष्ट 109-120

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

प्रथम अध्याय

मलखान सिंह का व्यक्तित्व और कृतित्व

1.1 मलखान सिंह का जीवन परिचय

1.2 शिक्षा और रोजगार

1.3 परिवेश और वातावरण

1.4 रचना-प्रक्रिया

द्वितीय अध्याय

मलखान सिंह की कविता में दलित चेतना

2.1 दलित चेतना

2.2 सामाजिक चेतना

2.3 राजनीतिक चेतना

2.4 सांस्कृतिक चेतना

2.5 आर्थिक चेतना

2.6 शैक्षिक चेतना

तृतीय अध्याय

अभिव्यक्ति के विविध आयाम

3.1 भाषा

3.2 शैली

3.3 बिम्ब

3.4 प्रतीक

3.5 मिथक

भूमिका

दलित साहित्य दलित समाज के जीवन संघर्षों का सीधा-सीधा वर्णन करता है। वह पूर्व परम्परागत सामाजिक पाखण्ड और वाह्यआडम्बरों का विरोधी साहित्य है और साथ ही हजारों वर्षों से गुलामी की जिन्दगी जी रहे लोगों की चेतना को जागृत करता है । दलित साहित्यकार समाज में मानवीय स्वतंत्रता, समानता और बंधुता को सर्वोपरि मानता है। दलित समुदाय भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, ब्राह्मणवाद, पूंजीवाद आदि सामाजिक व्यवस्था का विरोध करते हुए इन बन्धनों से मुक्ति के लिए संघर्ष करता है। दलित साहित्य वह साहित्य है जो दलित जीवन के भोगे हुए यथार्थ, दुःख और पीड़ा का वर्णन समाज सापेक्ष करता है।

हिन्दी साहित्य की मुख्य विधाओं में कविता का महत्वपूर्ण स्थान है। यह मात्र कविता नही है बल्कि जीवन के अभिव्यक्ति का माध्यम है। दलित कविता वह कविता नहीं है जिसमें प्रेम, सौन्दर्य और विलासिता का वर्णन किया गया हो। इस कविता में कवि शोषित, पीड़ित दलित समाज के दर्द को बयान करता है । हिन्दी साहित्य में दलित कविता की शुरुआत '1914' में हीरा डोम की कविता 'अछूत की शिकायत' से मानी जाती है। हीरा डोम पहली बार दलित जीवन की सच्चाई को अपनी कविता के माध्यम से व्यक्त किया है। दलित कविता के विषय में कँवल भारती का मानना है कि दलित कविता का इतिहास सौ साल से भी ज्यादा पुराना है इसे हम और पीछे ले जा सकते है। मध्यकाल से वैदिक काल तक दलित ने अपनी व्यथा को हर युग और काल में व्यक्त किया है। वह अत्याचारों और अन्यायों के खिलाफ सदैव मुखर रहा है। उसने

अपने विरुद्ध व्यवस्था के प्रतिबंधों को कभी भी न तो चुप-चाप स्वीकार किया है और न सहन किया है । आर्यों के वैदिक दर्शन के विरुद्ध अनार्यों, मूलनिवासियों की आजीवक जीवन धारा ने व्यापक जन-जागरण किया । मनुस्मृति से पता चलता है कि शूद्रों ने ब्राहमण की सत्ता को कभी स्वीकार नहीं किया और सदैव समानता के स्तर पर ही उससे व्यवहार किया ।

कबीरदास और संत रैदास का भी दलित कविता के विकास में महत्वपूर्ण योगदान रहा है जिसे भुलाया नहीं जा सकता है । कबीरदास ने अपने समय में ही जाति-पांति, पाखण्ड, अंधविश्वास का जमकर विरोध किया था । वही धारा डॉ. अम्बेडकर के समय में अपने वास्तविक रूप में मुखरित हुई । यहीं से दलित कविता को वास्तविक स्वरुप मिलता है । डॉ. अम्बेडकर के विचारों को आधार बनाकर अनेक दलित कवियों ने समाज के यथार्थ का वर्णन किया है । दलित कवि स्वतंत्रता, समानता और बंधुता का पक्षपाती है ।

दलित समाज आज भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक रूप से पिछड़ा है, साथ ही साथ उसमें जातिवाद, ब्राह्मणवाद, अन्धविश्वास भी जड़ें जमाएँ हुए हैं । जिसे समाप्त कर अम्बेडकर वादी समाज की स्थापना करना ही दलित कवियों का मुख्य उद्देश्य है । दलित कवियों में मलखान सिंह स्थान अद्वितीय है । उन्होंने कविता के माध्यम से दलित समाज के जीवन की मार्मिक अभिव्यक्ति की है । मलखान सिंह अपनी कविता 'सुनो ब्राह्मण' में दलितों के प्रति हो रहे अन्याय, शोषण और अत्याचार का हू-ब-हू वर्णन करते हैं । मलखान सिंह की कविताओं पर शोध विषय का चयन करने का सुझाव मुझे हैदराबाद केन्द्रीय विश्व विद्यालय के प्राध्यापक डॉ. भीम सिंह जी से मिला तब मैंने मलखान सिंह की कविताओं को पढ़ा तो मुझे कथ्य और शिल्प

की दृष्टि से कविता ने बहुत प्रभावित किया। मुझे लगा की इसमें दलित जीवन के उन सभी मर्मो को समेटा गया है जिसे दलित सदियों से सहता चला आ रहा है।

मैंने अपने लघु-शोध प्रबंध को अध्ययन एवं विवेचन की दृष्टि से तीन अध्यायों में विभक्त किया है। प्रथम अध्याय में मलखान सिंह का व्यक्तित्व और कृतित्त्व है। इस अध्याय के अन्तर्गत मलखान सिंह के जीवन वृत्त को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इस अध्याय के अन्तर्गत उनके द्वारा प्राप्त अनुभवों शिक्षा, रोजगार, परिवेश-वातावरण और रचना प्रक्रिया को विवेचित किया गया है।

द्वितीय अध्याय में मलखान सिंह की कविता में दलित चेतना के अन्तर्गत दलित चेतना, सामाजिक चेतना, राजनीतिक चेतना, सांस्कृतिक चेतना, आर्थिक चेतना और शैक्षिक चेतना को विवेचित करने का प्रयास किया गया है।

तृतीय अध्याय 'अभिव्यक्ति के विविध रूप के अन्तर्गत' भाषा, शैली, बिम्ब, प्रतीक, मिथक इत्यादि को विश्लेषित किया गया है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध के निष्कर्षो को उपसंहार के अन्तर्गत समाहित करने का प्रयास किया गया है। अंत में परिशिष्ट के साथ-साथ समस्त ग्रंथों की सूची दी गयी है, जिसका इस शोध प्रबंध में उपयोग किया गया है।

इस शोध कार्य को पूरा करने में शोध निर्देशक प्रो.वी.कृष्ण सर का उचित मार्ग दर्शन मिला। उन्होंने अपने व्यस्ततम क्षणों में मेरी शंकाओं, उलझनों एवं प्रश्नों को सुलझाकर इस लघु-शोध कार्य को सरल एवं सहज बनाया है। अतः मै उनके प्रति कृतज्ञता अर्पित करता हूँ।

हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो.आर.एस.सर्राजु तथा विभाग के सभी प्राचार्यों जिनके प्रोत्साहन एवं सहयोग के बिना यह लघु-शोध असंभव था। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

मै परम पूजनीय पिता जी और स्वर्गीय माता जी के चरणों में नतमस्तक हूँ, जिनके स्नेह और आशीर्वाद के बल पर यहाँ तक पंहुच सका हूँ। मै अपने उन सभी मित्रों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने मेरी सहायता की।

शोधार्थी

संदीप कुमार

प्रथम अध्याय

मलखान सिंह का व्यक्तित्व और कृतित्व

1.1 मलखान सिंह का जीवन परिचय

मलखान सिंह की पहचान दलित कवि के रूप में होती है। उन्होंने 'सुनो ब्राह्मण' नामक कविता संग्रह लिखकर दलित जीवन की मार्मिक वेदना को प्रस्तुत किया है। उनका जीवन अनुभव ही उनके कविता का माध्यम है। दलित परिवार में जन्म लेने के कारण उन्होंने जो देखा, भोगा और अनुभव किया उसका यथार्थ वर्णन अपनी कविताओं में करते हैं।

वर्तमान समय में ऐसे ही कवियों की आवश्यकता है क्योंकि आज देश को आजाद हुए 68 वर्ष पूरे हो चुके हैं। परन्तु दलित समाज आज भी सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक रूप से पिछड़ा है। कवि ने उसी समस्याओं को कविता के रूप में व्यक्त किया है जिससे दलित समाज के लोगों को एक नवीन दृष्टि प्राप्त होती है और साथ ही उसके समाज के स्थिति का बोध होता है कि किस प्रकार का जीवन दलित समाज वर्तमान में जी रहा है।

मलखान सिंह का जन्म 30 सितम्बर 1948 ई. को उत्तर प्रदेश अलीगढ़ जनपद के 'बसई काजीपुर' नामक गाँव के एक दलित परिवार में हुआ था। बसई काजीपुर वर्तमान समय में 'हाथरस' जनपद में स्थित है। उनके पिता का नाम भोजराज सिंह और माता का नाम कलावती देवी था। वे बहुत ही सरल स्वाभाव और प्रतिभा के धनी व्यक्ति हैं। उनको जीवन में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, परन्तु वे उन समस्याओं के सामने कभी भी नतमस्तक नहीं हुए। उन्हें गरीबी, जातिवाद, अपमान, घृणा, अंधविश्वास आदि कठिनाइयों का सामना करना

पड़ा। इन समस्याओं के होते हुए भी उनके अंदर एक अद्‌भुत कला का उदय हुआ जो कविता के रूप में दिखाई देता है।

उनका व्यक्तित्व मित्रों के लिए उदारभाव और गरीबों एवं पीड़ितों के लिए सहानुभूति का रहा है। जिसकी झलक इनके कविताओं में दिखाई देती है। इनका सम्बन्ध ग्रामीण परिवेश से रहा। जिसका चित्रण कविता में देखने को मिलता है। जो उनकी चेतना में बिम्ब के रूप में प्रतिबिम्बित होता है। ऐसा प्रतिबिम्ब उनकी कविता 'मै आदमी नहीं हूँ (भाग एक)' में दिखाई देता है –

"मै आदमी नहीं हूँ स्साब

जानवर हूँ

दो पाया जानवर

जिसकी पीठ नंगी है।"[1]

'मैं आदमी नहीं हूँ स्साब' यह शब्द मार्मिक संवेदना से भरा है जो स्वयं आदमी को एक जानवर की संज्ञा दे रहा है, यहाँ मानव के रूप में जानवर की कल्पना कितना घृणास्पद शब्द है और सोचने पर मजबूर करता है की मानव की ऐसी दशा क्यों है ?

कविता लिखने की उनके अंदर जो कला है वह अनुभव परक रही है और वही अनुभव कविताओं के रूप में दिखाई पड़ता है। उनका अनुभव ही उनके कवित्व के दायरे को बढ़ाता है, क्योंकि कविताओं में किसी एक पक्ष को उजागर नहीं किया गया है। उन्होंने समाज की वास्तविक समस्याओं को उठाया है। जैसे जातिवाद, पाखण्ड, अन्धविश्वास, शिक्षा, राजनीति, आर्थिक, पिछड़ापन इत्यादि।

[1] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 7

उनकी पारिवारिक दशा भी ठीक नहीं रही । अर्थाभाव, सामाजिक भेदभाव, छूआछूत और दलित परिवार में जन्म लेने के कारण इनके पिता जी चौथी-कक्षा से आगे की शिक्षा नहीं प्राप्त कर सके। परिवार के अन्य सदस्यों की यही स्थिति रही। कोई तीसरी कक्षा से आगे शिक्षा प्राप्त नहीं कर सका।

उनके माता-पिता ने जिस जीवन को जिया उनका यथार्थ चित्रण मुझे गुस्सा आता है नामक कविता में देखा जा सकता है :-

"मेरी माँ मैला कमाती थी

बाप बेगार करता था

और मै मेहनताने में मिली जूठन को

इकठ्ठा करता था खाता था।"[2]

इस तरह यह कविता मलखान सिंह की पारिवारिक स्थिति का वर्णन करती है। इस कविता में उस पीढ़ी की गाथा है, जिसमें गरीबी, मजबूरी, और लाचारी है। किस प्रकार माँ–बाप दूसरों के शोषण के शिकार है। माँ दूसरों के घर में मैला ढोती थी (सफाई करती थी) और बाप मुफ्त में दूसरों की सेवा करता था जिसे ग्रामीण भाषा में बेगारी कहा जाता है और उस काम के बदले खाने के लिए सिर्फ जूठन मिलता था। जिसे मैं इकट्ठा करता था और खाता था।

वर्तमान समय में कुछ परिवर्तन हुआ है जो इस कविता में स्पष्ट है कि आज मेरी पत्नी वही काम कर रही है। जो बाप किया करते थे और बेटा स्कूल गया है, जबकि मैं कविता लिख रहा हूँ। जब भी कोई साहित्यकार अपने अनुभव को समाज के सामने लाता है तब वह सम्पूर्ण समाज का सत्य प्रकट करता है। आर्थिक अभाव होने के कारण उनके पिता जी नौटंकी मण्डली चलाते थे।

[2]मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं.: 16

नौटंकी (स्वांग) को गीत के माध्यम से मंच पर प्रस्तुत किया करते थे। मण्डली का अध्यक्षीय और संचालन का कार्य भार स्वयं उनके पिता संभालते थे जिन्हें गीत संगीत बहुत प्रिय लगता था। इसीलिये वे नौटंकी में गीत भी गाते थे। जिसे बालक मलखान सिंह बहुत ध्यान से सुना करते थे और स्वयं उनके मन में गीत गाने की लालसा होने लगती थी। यही कारण है कि पिता के मुख से सुने हुए गीतों को वे अपना प्रथम प्रेरणा स्रोत मानते हैं। क्योंकि वहीं से कविता के प्रति उनके मन में प्रेम उत्पन्न हुआ। जो आगे चलकर कविता के रूप में प्रस्फुटित हुआ। वे अपने माता-पिता के अकेले संतान हैं। जन्म के कुछ ही दिनों बाद उनकी माँ बीमार पड़ गयी जिससे माँ का स्नेह भी उनको नही मिल सका, इनकी माँ को अस्थमा की शिकायत थी। जो बाद में टी.वी में बदल गयी। टी.वी को छूआछूत की बीमारी माना जाता था। एक मात्र संतान होने के कारण उनको सदा माँ से दूर रखा गया, क्योंकि अगर माँ के पास रहेगें तो उनको भी परेशानी हो सकती है। इसीलिए उनके घर वाले इन्हें माँ से दूर ही रखते थे।

जब तक उनकी उम्र 18-19 वर्ष तक पहुँचती है। तब तक उनके माँ की बीमारी ने अपना विकराल रूप धारण कर लिया और कुछ ही दिन बाद माँ की मृत्यु हो गई। इनका माँ से वेहद लगाव था। लेकिन दुर्भाग्य कि इन्हें माँ से दूर ही रहना पड़ता था। लेकिन दादा-दादी इन्हें बहुत दुलार से रखते थे और कभी भी माँ की कमी का अहसास नहीं होने दिया। इन्हें दादा-दादी का स्नेह यादगार रहा है। माँ का समय से पहले निधन होना इनके लिए बहुत ही दु:खद समाचार रहा, क्योंकि कभी न कभी माँ से मिलने की एक आस थी जो मृत्यु की खबर पाते ही अधूरी ही रह गई।

इस प्रकार मलखान सिंह का जीवन बचपन से ही अनेक कष्टमय भरा था। जिसमें दमघोटू गरीवी और माँ का समय से पहले निधन हो जाना बहुत बड़ी समस्या रही। गरीबी, अर्थाभाव, अन्धविश्वास और जाति-पाँति इत्यादि समस्याएं तो उनको मानो विरासत में मिली थी। जिससे लड़कर ही उन्होनें अपनी अलग पहचान बनाया।

1.2 शिक्षा और रोजगार

एक दलित को दलित समाज में जन्म लेना ही भारतीय समाज की सबसे बड़ी विड़म्बना है । क्योंकि भारतीय समाज में जातिवाद, अंधविश्वास, पाखण्ड का बोलबाला है, जिसका शिकार समय-समय पर दलित परिवार में पैदा हुए व्यक्ति को होना पड़ा । इन समस्याओं की परवाह किये बगैर जो निरंतर संघर्षशील रहा । वही व्यक्ति आगे चलकर समाज के लिए आदर्श बना ।

मलखान सिंह का भी जन्म दलित परिवार में हुआ है । जहाँ उन्होंने गरीबी, जातिवाद, शोषण और अन्याय को बहुत ही नजदीक से महसूस किया है । उनकी प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही हुई और दशवीं एवं बारहवीं की पढ़ाई अलीगढ़. डी.एस.इंटर कालेज से उत्तीर्ण की । इसके बाद स्नातक 'बलवंत राजपूत कालेज आगरा' और परास्नातक राजनीति शास्त्र विषय से आगरा कालेज आगरा से उत्तीर्ण किये ।

विद्यार्थी जीवन में इनके सामने जातिगत, अपमान, तिरस्कार और भेदभाव जैसी समस्या प्रमुख रही । अपमान जातिवाद की गहन अनुभूति उन्हें तब होती है जब वह उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्रावास में थे । तब वहाँ भी उन्होंने जाति भेद-भाव को देखा कि सवर्ण छात्रों द्वारा दलित छात्रों का अपमान किया जाता था । निम्न जाति के छात्रों को नाम से नहीं बल्कि जाति से संबोधित किया जाता था । यह जातिवाद सिर्फ छात्रों तक सीमित नहीं रहा । बल्कि अध्यापक भी जाति का इस्तेमाल करते थे । अध्यापकों द्वारा जो जातिवाद और वर्णवाद का पहाड़ा पढ़ाया जाता है उसका स्पष्ट वर्णन 'गूंगा नही था मै' कविता संग्रह मैं जयप्रकाश कर्दम ने 'वर्णवाद का पहाड़ा' नामक कविता में अभिव्यक्त किया है -

"हम शुक्रगुजार हैं

कि तुमने

हमें पढ़ाया

प्रगति का रास्ता दिखाया

लेकिन समता के मार्ग पर तुम

खुद नहीं चल पाए ...|"[3]

जाति-पाँति और वर्गभेद समाज में किस कदर से हावी रहा है इसका वर्णन किया उपर्युक्त कविता में किया गया है। लेकिन विद्यालयों में जातिवाद इस कदर हावी हुआ था कि कोई भी अध्यापक उससे ऊपर कभी नहीं उठ पाया है। यह कितनी संकीर्ण विचारधारा रही है, कि वह केवल वर्गभेद का पहाड़ा पढ़ाता रहा है और अपनी पूरी उम्र इसी को पढ़ाने में गुजार दिया है। पीढ़ी दर पीढ़ी यह कड़ी चलती रही। जबकि हमने कभी भी उनकी इज्जत कम नहीं होने दिया। उनका हुक्का हमने मांजा उनके चिलम को भरते रहे। पानी भरकर उन्हें पिलाने को लालायित रहे हैं लेकिन कभी उन्होंने हमें अपना लोटा नही छूने दिया है। उसका अपसोस रहा है की हम क्यों लालायित थे। जबकि हमें तुमने कभी मानवीय नजर से देखा तक भी नहीं। कविता में उन आध्यापकों पर व्यंग्य किया गया है जो हमेशा से वर्णभेद की कहानियां सुनाते रहे, जो कभी भी न तो सही मार्ग पर चल पाए और न ही चलने का रास्ता दिखा पाए। बल्कि जाति-पाँति, ऊँच-नीच रुपी विष को घोलने में कभी भी पीछे नहीं रहे। पूरे समाज में इसका प्रसार करते रहे। जिसका प्रभाव दलित समाज में इस प्रकार हावी रहा उसका चित्रण मलखान सिंह की इन पक्तियों में दृष्टव्य है-

"परिचित श्रीमान से बात करते

जीभ हकलाती है

[3] जय प्रकाश कर्दम, गूंगा नही था मैं, पृ. सं. 22

अपरचित श्रीमान से हाथ मिलाते

हाथ कांपता है ...।"[4]

उन्होंने शिक्षोपरांत नौकरी के रूप में 1979 में राजकीय कालेज में राजनीति शास्त्र विषय के प्रवक्ता के रूप में कार्य किया और फिर बाद में पदोन्नति और प्रोन्नति के आधार पर (B.S.A बेसिक शिक्षा अधिकारी) और फिर (DIOS जिला विद्यालय निरीक्षक) के रूप में सेवाएँ की। दलित जाति के होने के कारण इन्हें अनेक अनुभव प्राप्त हुए। जो उन्होंने साक्षात्कार के दौरान बताया है कि- "मैंने एक विधार्थी के रूप में जो भोगा और अधिकारी के रूप में अनुभव किया है। वह बहुत ही पीड़ा दायक रहा। क्योंकि जहाँ भी मै जाता था उससे पहले मेरी जाति वहां पहुंच जाती थी और मौजूद लोग अपनी नाक-भौं सिकोड़ने लगते थे। इस प्रकार एक विद्यार्थी, एक अध्यापक और एक अधिकारी का अनुभव उनके विचारों में हमेशा एक विषय के रूप में उभरता रहा जिसकी वास्तविक छाप कविताओं में दिखाई देती है।"[5]

किस प्रकार से समाज में एक तरफ स्वतंत्रता और समानता की बात की जा रही है तो दूसरी तरफ जातिवाद, गरीबी, से लोगों को मुक्ति नही मिल रही है। जातिवाद इस प्रकार जड़ बना चुका है। जिसका सामना निरंतर दलितों को करना पड़ा रहा है। जिसको अपने सर को ढकने के लिए किराये पर एक छत का मिलना भी मुश्किल रहा है। जिसका वर्णन उन्होंने अपनी कविता 'छत की तलाश' नामक में करते हैं -

"इस अपरिचित बस्ती में

घूमते हुए मेरे पांव थक गए हैं

[4] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 21

[5] शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार

अफ़सोस ! एक भी छत

सर ढ़कने को तैयार नही हैं...|"[6]

परिचित बस्ती में ही नहीं बल्कि अपरिचित बस्ती में भी गैर-सा सलूक किया जाता रहा है। चाहे कोई भी वर्ग रहा है दलित जाति सबके लिए खटकती रही है। दलित जाति का कोई भी विद्यार्थी अगर पढ़ना-लिखना चाहता है तो उसे इस प्रकार के व्यंग्यों का भी सामना करना पड़ा है, कि पढ़ने-लिखने से कोई कुजात - सुजात नहीं हो जाता। जिसका वर्णन कविता में किया गया है -

"इस तथ्य को बचपन में ही

" जान लिया था मैंने कि

पढ़ने लिखने से कुजात

सुजात नहीं हो जाता।"[7]

1.3 परिवेश और वातावरण

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसके जीवन पर रहन-सहन, खान-पान, आचार-विचार का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। वह जिस परिवेश में रहेगा उसका प्रभाव उसके जीवन पद्धति में किसी न किसी रूप अवश्य पड़ता है। मलखान सिंह के जीवन की शुरुआत उस परिवेश में हुई, जिस समाज के लोग सामाजिक और राजनीतिक दृष्टि से पिछड़े हैं। जहां पर गरीबी, अशिक्षा और अर्थाभाव सर्वव्याप्त था। दलित समाज में जन्म लेने के कारण उन्होनें जिस

[6] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 29

[7] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 16

जीवन को जिया है और महसूस किया है। उसका यथार्थ चित्रण कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। 'सुनो ब्राह्मण' की भूमिका में उन्होंने विचार स्पष्ट किये हैं - "मैं नही जानता कि मैं कविता क्यों लिखता हूँ ? हाँ इतना अवश्य जानता हूँ कि जाति-पांति, छूआछुत पाखण्ड, शोषण और अत्याचार का शिकार जब मैं स्वयं होता हूँ या किसी सहोदर को होते देखता हूँ, तो मेरे अंदर कुछ उबलने लगता है कुछ घुमड़ने लगता है, जिसे मैं शब्दों में पकड़ने की कोशिश करता हूँ। लेकिन पूर्ण को कभी पकड़ नहीं पाता। पूर्ण को एक साथ न पकड़ पाने की छटपटाहट ही अंश के रूप में मेरी कविताओं को जन्म देती चलती है।"[8]

उन्होंने कविताओं में ग्रामीण जीवन का चित्रण किया है, उनकी कविताएं गांव के वास्तविक छवि को सामने प्रस्तुत करती है कि गांव में दलित जीवन की स्थिति क्या है ? और वह अपने जीवन में किन-किन मुसीबतों को झेलता रहा है। इन घटनाओं को कविताओं के माध्यम से उन्होंने बताने की कोशिश की है। कविताओं में ग्रामीण अंचल का सामाजिक परिवेश का वर्णन किया गया है जिसकी झलक देखने को मिलती है।

गांव में आज भी जातिवाद, गरीबी, अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार पल रहा है। जिसे इन्होंने बड़ी सहजता के साथ व्यक्त किया है और वहां हो रहे शोषण उत्पीडन के विरूद्ध कविता के माध्यम से आक्रोश व्यक्त किया है। इन्होनें कविताओं को एक लक्ष्य बनाया है। उस व्यवस्था को नकार है जो उन्हें नरकीय जीवन जीने के लिए धकेलती रही है। कवि ने कविताओं के माध्यम से सन्देश देने का प्रयास किया है कि ब्रह्मणवादी व्यवस्था उनको नरक में धकेल रहा है। गांव में किस प्रकार अन्याय और जुल्म पल रहा है। उन्होंने इस संकलन की 'एक पूरी उम्र' नामक कविता में इसका वर्णन किया है-

[8] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, : 5

"यकीन मानिए

इस आदमखोर गांव में

मुझे डर लगता है

बहुत डर लगता है

- - -

सीखचों के भीतर

उम्र भर सताएगा।"[9]

गांव में किस प्रकार लोगों में भय व्याप्त रहता है की वह खुलकर शौच भी नही कर सकता है और न ही अपनी किसी बात को स्पष्ट कह सकता है। वह हमेशा से बिना किसी अपराध किये फँसाया जाता रहा है। क्योंकि सभी स्थानों पर सत्ता तो उसी चतुर चालक व्यक्ति की है जो इनको दबाता और सताता रहा है। गरीबों को तो हर तरफ से अपने समाज व्यवस्था रूपी जाल से निकलने का अवसर ही नही दिया गया। क्योंकि उनके पास न तो खेत था और न रहने के लिए घर ही था। ऊपर से महाजन का कर्ज भी कभी कम होता ही नहीं था। जबकि मेहनत उनसे रात-दिन करवाई जाती थी। परन्तु उनका उचित मूल्य कभी नहीं दिया गया। उनके सामने न तो भूख से लड़ने का साधन है और न ही खेती के लिए जमीन। जिसको मलखान सिंह ने इसी समस्या को नजदीक से देखा और अनुभव किया। इस व्यवस्था का भुक्तभोगी कोई एक व्यक्ति नही है बल्कि पूरा दलित समाज सदियों से शिकार होता रहा है। जिसको 'भूख ' नामक कविता में व्यक्त किया गया है -

"भूख ! आँख खुलते ही तुझे

[9] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 11

चौखट पर बैठा देखा है

देखा है कि तुझे

आँगन में पसरा देख

मेरी माँ फूट-फूट कर रोई है ।"[10]

गरीबी, लाचारी, भुखमरी से जूझते आज भी गांव में देखने को मिल जायेगा । ये कविताएं जीवन की सच्चाई को उजागर कर रही हैं। भूख, पीड़ा, गरीबी और अन्याय के अलावा समाज को सबसे ज्यादा दूषित करने वाला जातिवाद, पाखंडवाद और धर्मवाद है । जातिवाद मानवीय गरिमा को नष्ट करती है, जो समाज में फैला हुआ है । जिसे इन्होनें सामान्य बालक से लेकर अधिकारी पद तक पहुँच कर देखा है । यानी गांव से लेकर शहर तक, सभा से लेकर सभागार तक है जिसका स्पष्ट चित्रण कविता में किया गया है -

" मै गांव में हूँ

जाति छप्पर में आ टंगी है

काले झण्डे सी

मैं दगडे में हूँ

जाति कंधो में आ फँसी है... ।[11]"

[10] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं 23

[11] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 20

यह जाति ही नहीं है यह फटी बंडी की तरह चिपकी रहती है जो समाज का सबसे बड़ा संकट है । कवि ऐसे ही परिवेश में पला-बढ़ा है, जो उसके मस्तिष्क में विचारोत्तेजक भावना उत्पन्न करती है, जिसे उन्होंने भूमिका में में स्पष्ट किया है । कि- "अस्तु मेरी कविताएं मेरी भोगी हुई यातनाएं है । इन्हें लिखते समय कभी मै रोया हूँ कभी क्रोध से पागल हो उठा हूँ तो कभी अनायाश किसी सार्थक बिम्ब के हाथ में आ जाने पर बच्चों की तरह किलकारी मार घंटो हँसा हूँ ।"[12]

दलित वर्ग से निकले किसी विधार्थी को कितना कष्ट मिलता है यह वही जानता है । जिसे यह पीड़ा मिली हो क्योंकि जाति रूपी यह विष उसके शैक्षिक जीवन को प्रभावित करता है । जिसे स्वयं उन्होंने झेला है । अपनी अनुभूतियों का वर्णन कवि इस प्रकार करता है-

“इस अपरिचित बस्ती में
घूमते हुए मेरे पांव थक गए हैं
अफ़सोस ! एक भी छत
सर ढकने को तैयार नही है ।
हिन्दू दरवाजा खुलते ही
कौम पूछता है और -
नाक भौं सिकोड़ -
गैर सा सुलूक करता है ।”[13]

[12]मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 5
[13]मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं.: 29

अपरिचित बस्ती में वह जाता है तो उसे 'जातिवाद' अपमान का सामना करता पड़ता है । जबकि वह हिन्दू है उसके साथ गैर-हिन्दूवादी व्यवहार होता है । जाति का पता चलते ही मकान का मालिक नाक भौं सिकोड़ लेता है । लगता है की वह इंसान ही नहीं है । इस समाज व्यवस्था के प्रति कवि के मन में आक्रोश आता है इसी आक्रोश को 'हमारे गांव में' नामक कविता में दिखाई देता है -

"इसका मतलब

यह हरगिज नहीं कि

जन को गुस्सा नहीं आता है ।

आता है बहुत-बहुत आता है

लेकिन अफ़सोस ! यह गुस्सा

साँपिन बन अपनों को ही खाता है...।"[14]

समाज में व्याप्त व्यवस्था के खिलाफ आक्रोश व्यक्त करना कि वह शोषण और दमन करता है । यह आवाज अकेले उठाने से कुछ नही हो सकता है । यहां एक बात स्पष्ट है कि सबसे पहले दलित समाज को शिक्षित, संगठित और संघर्ष को डॉ.अंबेडकर के विचारों का पालन करना सीखना होगा । तभी परिवर्तन लाया जा सकता है । जिस परिवेश से कवि निकलकर आता है । उसका प्रभाव कविता में या रचना में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है । इसी प्रकार 'अंधड़' कविता संग्रह के 'हमारे दिन हमारी रात' शीर्षक में स्पष्ट वर्णन है । यहाँ प्रत्येक महीनों में दुःख व्याप्त रहता है जिसका वर्णन कविता स्पष्ट में दिखाई देता है ।

[14] मलखान सिंह, ,सुनो ब्राह्मण,पृ.सं 36

"कैसा होता है चौमाशा

मूसलाधार बरसात में

दगडें का बहावा जब

ज्वार बन उफनाता है ...।"[15]

कविता में मानवीय संवेदना को प्रस्तुत किया गया है, जिसमें वर्णन है कि हर मौसम कि मार गरीब को झेलना पड़ता है । चाहे शीत का मौसम हो या वर्षा ऋतु का हो । ऐसे परिवेश से जो भी कवि निकल कर आता है । वह उसकी रचना में दिखाई देता है । वह अपनी व्यथा के साथ पूरे समाज की व्यथा को उजागर कर रहा है परन्तु समाज में परिवर्तन को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता ।

1.4 रचना-प्रक्रिया

रचना प्रक्रिया ऐसी प्रक्रिया है जो अनुभव और ज्ञान के आधार पर निर्मित होती है । गजानन माधव मुक्तिबोध के अनुसार रचना-प्रक्रिया के मुख्य तीन रूप होते हैं जो इस प्रकार है ।

(1) "कला का पहला क्षण है जीवन का उत्कृष्ट तीव्र अनुभव-क्षण

(2) दूसरा- क्षण है इस अनुभव का अपने कसकते-दुखते हुए मूलों से पृथक हो जाना और एक ऐसी फैन्टेसी का रूप धारण कर लेना मानो यह फैटेंसी आँखों के सामने ही खड़ी हो ।

[15] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशाधीन

(3) तीसरा और अंतिम क्षण है इस फैंटेसी के शब्द-बद्ध होने की प्रक्रिया का आरम्भ और उस प्रक्रिया की परिपूर्णावस्था तक की गतिमानता ।"[16]

मलखान सिंह ने कविता को माध्यम बनाकर अपने जीवन की संघर्ष को प्रस्तुत किया है जिसमें ऐसा बोध होता है कि यह उनके जीवन की गाथा है, जिसे उन्होंने मार्मिक ढंग के साथ प्रस्तुत किया है जो अन्य कवियों के तरीको से भिन्न है । क्योंकि ज्यादा तर दलित कवियों ने अपनी जीवन गाथा को आत्मकथा के रूप में प्रस्तुत किया है । किन्तु इन्होने तो एक नई प्रक्रिया का इस्तेमाल किया है । वह है- कविता के रूप में अपने पूर्ण जीवन की कथा कहना है । बजरंग बिहारी तिवारी ने साक्षात्कार के दौरान उनसे पूछा था –"आपने अपने बारे में अलग से कुछ लिखा ? तो उन्होंने जवाब देते हुए कहा कि कविता ही मेरी आत्मकथा है मेरे अनुभव उसमें है । मेरे संघर्ष भी उसमें है, एक कुरूप सामाजिक व्यवस्था हमें हर पग पर आड़े आती है । हमें अपनी योग्यता सिद्ध करने में एक लम्बे संघर्ष के दौर से गुजरना पड़ता है यह सामजिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि यह प्रत्येक क्षेत्र में है, राजनीति धर्म, आर्थिक सभी में जाति से संघर्ष करते हुए,अपनी योग्यता को अतिरिक्त रूप से प्रामाणिक करते हुए आगे चलना पड़ता है ।"[17] उनकी पंक्तियों में आत्म कथानक रूप भी दिखाई देता है कि –

"इस बदबूदार-

छत के नीचे जागते हुए

मुझे कई बार लगा है कि -

[16] गजानन माधव मुक्तिबोध, एक साहित्यिक की डायरी, पृ.सं. 18

[17] कथादेश, सं. हरिनारण, पृ.सं. 68-69

मेरी बस्ती के सभी लोग

अजगर के जबड़े में फंसे...|"[18]

दलित कविता के कवियों में मलखान सिंह अपनी पीढ़ी के अकेले कवि नही हैं । इनके अलावा अन्य कई कवि हैं । जिनकी एक नहीं बल्कि अनेक कविता संग्रह आ चुके हैं, जो दलित संवेदनाओं को प्रस्तुत करते हैं । इन सबके बीच मलखान सिंह का एक मात्र कविता संग्रह है । और दूसरी अंधड़ नामक कविता संग्रह प्रकाशनाधीन है । उनको पहले संग्रह में इतनी प्रसिद्धि मिली कि जितना चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' को कहानी 'उसने कहा था' से मिली थी । उनकी नजर में कविता अपने अनुभव को प्रकट करने का सबसे सशक्त माध्यम है । उन्होंने साक्षात्कार के दौरान इस बात को स्वयं स्वीकार किया है कि जो हम पद्य में कह सकते हैं वह गद्य के माध्यम से नही कह सकते उन्होंने कहा - "इसलिए हम गद्य में अपना दुःख दर्द नही लिख सके पद्य में उसे आसानी से लिख लेते हैं गद्य लिखेंगे तब भी वह चीज नहीं आ पाएगी जो पद्य में लिख लेता हूँ । दूसरी बात की कविता अपने आप में इतनी जबरदस्त विद्या है की अगर उसमें खो गए तो उसमें तैरते रहता है आदमी । गहराई का यह आलम है कि एक-एक कविता चार-चार, पांच-पांच साल लगा दिए लिखने में जिसकी नींव कब पड़ी बीज कब पड़ा पता नही । कविता तो एक ऐसी चीज है इसे जितनी पकाइए उतना अच्छा है । 'सुनो ब्राह्मण' जैसी कविता कम से कम पंद्रह साल के अनुभवों के बाद निकलती है । 1980 से मेरी कवितायें प्रकाशित होने लगीं । 1996 में मेरा काव्य संकलन प्रकाशित हुआ । पंद्रह सोलह वर्षों के बीच कितनी बार कविता में परिवर्तन हुआ होगा । ज्यों-ज्यों वैचारिक परिपक्वता आती गई त्यों-त्यों वो कटती-बढ़ती चली गयी ।"[19]

[18] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 13

[19] साक्षात्कार, मलखान सिंह, "धर्मवीर यादव, 'गगन,नन्द कुमार चोले और शरतचन्द्र मिश्र" दलित अस्मिता,जनवरी जुलाई : 2014 पृ. सं. 37

रचना-प्रक्रिया के अंदर न केवल भावना, कल्पना, बुद्धि होती बल्कि किसी रचनाकार का जीवन अनुभव और उसकी संवेदनात्मक दृष्टि समाहित होती है। जिसे वह अपने जीवन की पीड़ा को देखकर समाज के प्रति संवेदना को अभिव्यक्त करने का माध्यम बनाता है। समाज में व्याप्त समस्याएं विषमता, भेदभाव, उत्पीड़न, अत्याचार, जातिवाद के विरूद्ध एक लोकतान्त्रिक समाजवादी समाज की स्थापना करना ही दलित कविताओं का मूल उद्देश्य रहता है। समतावादी समाज की स्थापना की बात वह करता है तो एक युग बदलने की बात करता है। जो सचमुच बदलने की बात करता है। और पूरे समाज के स्वतंत्र होने की बात करता है। इनकी कविता ' नही चाहिए-2' में देखा जा सकता है।

"नहीं चाहिए

नहीं चाहिए

तुम्हारा सच

तुम्हारा झूठ...|"[20]

समाज में व्याप्त, स्वर्ग, नर्क, झूठ, सच के नाम पर अगर छल किया जाता रहे है, तो वह नही चाहिये। फिर वह कहना चाहता है की नया समाज का गठन करेंगे जिसमें नया सूरज निकलेगा जो जाति धर्म, भाषा के आधार पर कोई भेदभाव नही करेगा, इन भेद रुपी पहाड़ को गिराकर नया समाज का निर्माण करेंगे। जिसमें स्वतंत्रता समानता होगी। उनकी कविताओं की रचना-प्रक्रिया नया रूप प्रदान करती है, जो निम्न रूप में द्रष्टव्य होता है, जिसमे आत्मकथानक अनुभव, यथार्थवादी दृष्टि, भोगा हुआ सच बदलाव का दृष्टिकोण लेकर निर्मित हुआ है।

[20] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

"कवि होने के लिए अपने वास्तविक जीवन की सीमाओ को तोड़कर 'विश्वचेतस'और आत्मचेतस होना पड़ता है साथ ही युगीन वास्तविकता के आर पार भेदने वाली मर्म दृष्टि पानी होती है ।"[21] इनकी रचना में मर्म, संवेदना, सहानभूति, वास्तविकता, बदलाव आदि पूर्ण रूप में मिलता है, जो औरों से भिन्न है । प्रमुख दलित कवि श्यौराज सिंह बेचैन की रचना प्रक्रिया इस प्रकार है, "बेचैन ने अपनी रचना- प्रक्रिया को अपनी कविता में व्यक्त किया है । वह कविता है, 'दर्द समेट लिखा मैंने ।' यह संकलन की सबसे मार्मिक कविता है और इस मायने सबसे महत्वपूर्ण भी है कि जहाँ यह कवि के जीवन के दुखद याथार्थ से रूबरू कराती है , वहाँ इससे यह स्पष्ट होता है कि कविता का अर्थ मनोरंजन नहीं –बल्कि पीड़ा का उदघाटन करना है । कवि कहता है-

"गिरता उठता चला

ज्ञान की कुछ ऊँचाई तक पहुँचा

पर्वत राई लगा

स्वार्थ से ऊपर बैठ लिखा मैंने ।

मादक लगी न रात

चाँदनी साधक लगी न स्मृतियाँ

सूरज ठंडा लगा

धूप में जिस दिन बैठ लिखा मैंने ।"[22]

---

[21] मुक्तिबोध के सौन्दर्य सिंद्धातो का विवेचन, डॉ एस श्यामराव, पृ.सं. : 96

[22] दलित कविता का संघर्ष, कँवल भारती, पृ. सं. : 170

लेकिन मलखान सिंह की कविता रचना-प्रक्रिया का अलग अनुभूति है जो उन्होंने 'सुनो ब्राह्मण' की भूमिका में लिखा है कि "मेरी कवितायें मेरी भोगी हुई यातनाएं हैं । उन्हे लिखते समय कभी रोया हूँ, कभी क्रोध से पागल हो उठा हूँ, तो कभी अनायास किसी सार्थक बिम्ब के हाथ आ जाने पर बच्चों की तरह किलकारी मार घंटों हँसा हूँ । यह उनकी अनुभूति है जिसका उनको गहन अनुभव है जो कहीं और से नही मिला बल्कि, स्वयं के जीवन के दर्द का बयान है, यही उनकी रचना-प्रक्रिया भी हो सकती है और उनका आत्म-संघर्ष भी ।"[23] इनकी रचना-प्रक्रिया में वह झलक है जो दर्द है तो 'दर्द की दवा' भी है, क्योंकि अपने किसी सहोदर को बता देना चाहते कि परिवर्तन, बदलाव, सबके जीवन में होता है । मित्रों निराश न हो "मै निराश नहीं हूँ" कविता में कहते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर परिवर्तन होता है -

"ऐसे ही

अंधड़ भरे दिन से

जूझते हुए मित्र ने

मौसम को जूता दिखा

चीख कर कहा था कि

धरती बदलती है ...।"[24]

कवि ने स्पष्ट किया है यह अंधड़ भरा दिन आदिकाल से चला आ रहा है, इससे भयभीत नहीं होना है बल्कि अब इसको बदलने की जरूरत है, क्योंकि धरती से लेकर आकाश तक सब बदल

[23] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. 5

[24] मलखान सिंह, सुनो ब्राहमण, पृ. सं.:42

गया है । “मलखान सिंह घनीभूत दलित संवेदना के कवि है, यह संवेदना चार स्तरों से होकर निर्मित हुई है ।

पहले स्तर पर दलित यातना में तीव्र बोध है, यातना वैयक्तिक नहीं है, सामुदायिक है सदियों दलित समुदाय पर जो अत्याचार होते रहे हैं वह सामूहिक स्मृतिकोश में मौजूद है यातना के इस पूँजीभूत रूप को कवि ने अपनी रचना की पूँजी बनाया है । दूसरे स्तर पर मलखान सिंह ने उन कारणों की पहचान की जो इस यातना के लिए जिम्मेदार रहे हैं । तीसरे स्तर पर उत्पीड़नकारी, ब्राह्मण केन्द्रित समाज व्यवस्था का सम्पूर्णतया नकार है और चौथे स्तर पर उनका भास्वर आक्रोश व्यक्त है यह आक्रोश उन ताकतों के खिलाफ है जो दमन का सिलसिला टूटने नई देती और समता मूलक समाज बनाने की हर कोशिश को नाकाम करने में जुटी रहती है, असल में मनुवादी समाज व्यवस्था के प्रति कवि का गुस्सा इतना प्रबल है कि उनकी रचनाशीलता के अन्य पक्ष नही दिखते, सिर्फ आक्रोश का ज्वर उमड़ता नजर आता है । उनकी कविता में आक्रोश निश्चित ही केन्द्रीय तत्व है और वही उनकी रचना–प्रक्रिया है ।”[25]

[25] दलित संवेदना और मलखान सिंह की कविताये, बजरंग बिहारी, पृ. सं.: 68-69

द्वितीय अध्याय

मलखान सिंह की कविता में दलित चेतना

2.1 दलित चेतना

दलित चेतना जानने से पहले, दलित शब्द का अर्थ क्या है ? और दलित किसे कहते है ? यह जानना आवश्यक है। दलित शब्द के कई अर्थ है जैसे जिसका दलन और दमन हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनिष्ट, मर्दित, पस्त-हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि। समाज का वह वर्ग जो सबसे कमजोर, शोषित, जिसकी भावनाओं को निरंतर मर्दन किया गया है और जिसे हमेशा धोखा छल, अन्याय, अपमान का शिकार बनाकर, लूटा गया हो वही दलित है।

दलित चेतना के विषय में ओमप्रकाश वाल्मीकि का विचार है - "दलित साहित्य के सरोकारों में दलित चेतना की महत्वपूर्ण भूमिका है। इस चेतना के बिना साहित्य लिजलिजा और काल्पनिक उड़ानों से भरपूर माना जायेगा। दलित चिन्तक कँवल भारती की यह मान्यता इस तथ्य को प्रमाणित करती है कि आधुनिक हिन्दी दलित साहित्य वह है जो दलित मुक्ति के सवालों पर पूरी तरह अम्बेडकरवादी है। सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में उसके सरोकार वे हैं जो अम्बेडकर के थे।"[26]

दलित चेतना से तात्पर्य दलितों की मुक्ति है जो स्वयं डॉ अम्बेडकर भी चाहते थे। दलित लेखक उन्हीं के विचारों का पालन करती है। उनके विचारों का वर्णन ओमप्रकाश वाल्मीकि ने इस प्रकार से किया है- "दलित चेतना डॉ अम्बेडकर के जीवन दर्शन से

[26] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, पृ. सं.: 30

मुख्य उर्जा ग्रहण करती है । इस तथ्य से सभी दलित लेखक एकमत हैं । दलित चेतना के प्रमुख बिंदु निम्नवत हैं -

1 मुक्ति और स्वतंत्रता के सवालों पर डॉ.अम्बेडकर के दर्शन को स्वीकार करना ।

2. बुद्ध का अनीश्वरवाद, अनात्मवाद, वैज्ञानिक दृष्टि बोध, पाखण्ड़-कर्मकांड का विरोध ।

3.वर्ण-व्यवस्था विरोध, जातिभेद –विरोध, साम्प्रदायिका विरोध ।

4.अलगाववाद नहीं भाईचारे का समर्थन ।

5.सामाजिक बदलाव के लिए प्रतिबद्धता । इत्यादि विचार जिनका पालन दलित लेखक करते हैं ।"[27]

साक्षात्कार के दौरान मलखान सिंह दलित चेतना के सन्दर्भ में अपना विचार प्रस्तुत करते हैं- "भारतीय समाज के अंतिम पायदान पर बैठा हुआ वह व्यक्ति दलित है जिसके पास सदियों से सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक अधिकार नहीं था जो सामाजिक असमानता और घृणा का शिकार था । ब्राह्मणवादी व्यवस्था द्वारा थोपी गयी बन्दिशों के अधीन वह पाशविक जीवन जीने के लिए बाध्य था इन वन्दिशों को जागरूकता के द्वारा उखाड़ फेकना ही दलित चेतना है । जिसका लक्ष्य लोकतांत्रिक समाज की स्थापना है ।"[28]दलित शब्द से अनेक प्रकार की पीड़ा का बोध होता है, ये अपमान भरा शब्द है जिसकी पीड़ा की अनभूति केवल दलित समाज में जन्में व्यक्तियों को हो सकती है । दलित जीवन या भारतीय समाज व्यवस्था में स्त्री के पराधीन जीवन के सम्बन्ध में सूर्यनारायण रणसुभे ने दलित साहित्य और मैनेजर पाण्डेय का आलोचना- कर्म में उल्लेख करते हैं -

[27] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, पृ. सं.:31

[28] शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार

"काम्बले नामक एक दलित स्त्री की आत्मकथा मराठी में 'जिणं अमुचं' शीर्षक से प्रकाशित हुई उसका हिन्दी अनुवाद 'जीवन हमारा' शीर्षक से 1995 ई. में प्रकाशित हुआ । इस हिंदी की भूमिका डॉ मैनेजर पाण्डेय ने लिखी है तथा आत्म कथा के बहाने दलित स्त्री जीवन अथवा यूं कहे की भारतीय स्त्री जीवन पर उन्होंने अपने विचार व्यक्त किये हैं । महात्मा ज्योतिबा फुले ने 1973 में लिखा था । जो सहता है, वही जानता है । इस वाक्य से आगे पाण्डेय जी ने एक छोटा- सा वाक्य जोड़ देते हैं और जो जानता है वही कह सकता है । इस छोटे से वाक्य द्वारा उन्होंने यह स्पष्ट किया है कि दलित ही दलित जीवन पर लिख सकता है ।" [29]

दलित चेतना का सम्बन्ध दलित समाज को जागृत करना है, अर्थात हजारों वर्षो से चली आ रही ब्राह्मणी सामाजिक व्यवस्था के प्रति अपनी दृष्टि डालकर देखना जो उसे अपमान, गुलामी अत्त्याचार, अछूत, भेदभाव, वर्णभेद, रंगभेद, जैसी बनी जंजीरों में जकड़ा हुआ था और अपनी मानवीय गरिमा खो चुका था । उन्हीं बनायीं जंजीरों को तोड़कर दमन करके अपने मानवीय चेतना को जागृत करना दलित चेतना है । मलखान सिंह की कविताओं में दलित चेतना के तीव्र स्वर 'मै आदमी नही हूँ' कविता में दिखाई देता है -

"मै आदमी नही हूँ स्साब

जानवर हूँ

दो पाया जानवर

जिसे बात – बात पर

मनु पुत्र-माँ चो-बहन चो

[29] रविरंजन, आलोचना का आत्म संघर्ष पृ. सं. :42

कमीन कौम कहता है ।"[30]

"दलित साहित्य में दलित चेतना के प्रेरणा स्रोत मराठी गुजराती साहित्य से चलकर हिंदी में आया है, उसकी संरचना का मूल आधार बौद्ध चिंतन है । ज्योतिबा फुले और डॉ. अम्बेडकर के विचार और दर्शन के स्तर पर यह नीग्रो साहित्य और अमेरिकी अश्वेत महिला लेखन से प्रभावित है । इसके प्रेरणा के पीछे क्रांति की दृष्टि रही है ।"[31] दलित चेतना मलखान सिंह के समकालीन दलित कवियों में स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ती है, जिसमें कुछ प्रमुख दलित कवि, जय प्रकाश कर्दम, श्यौराज सिंह बेचैन, ओमप्रकाश वाल्मीकि, कँवल भारती और रमणिका गुप्ता जिनकी कविताओं में आक्रोश दिखाई पड़ता है ।

मलखान सिंह के यहाँ यही विरोध और भी तीव्र हो जाता है । उन्होंने पाखंड, अन्धविश्वास का विरोध जिस तेवर के साथ किया है । उसका सीधा प्रभाव पाखंडी, अत्त्याचारी के मन और मस्तिष्क में सीधा चोट पहुचाती हैं । कविता के माध्यम से कवि ने सीधे-सीधे भूदेव को संबोधित किया है -

"सुनो भूदेव

तुम्हारा कद

उसी दिन घट गया था

जिस दिन कि तुमने

[30] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण : 7

[31]ओमप्रकाश बाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ.सं. 89-90:

न्याय के नाम पर

जीवन को चौखटों में कस

कसाई बाड़ा बना दिया था ।"[32]

उपर्युक्त कविता में भूदेव को संबोधित करते हुए सामजिक, राजनीतिक, जातिगत व्यवस्था का उल्लेख किया गया है ।

मलखान सिंह के कृतित्त्व और व्यक्तित्व पर विचार करते हुए चौथी राम यादव लिखते हैं- "आक्रोश भरा साहसिक हस्तक्षेप, तार्किक दृष्टि और प्रखर इतिहास बोध मलखान सिंह के व्यक्तित्व की ख़ास पहचान है जो सरहपा गोरखनाथ, रैदास और विशेषता: कबीर के माध्यम से उन्हें विरासत में मिली है ।"[33] वह जो ब्राह्मणवादी व्यवस्था का संस्थापक है उसकी पोल (रहस्य) भी कविता खोलती है कवि कहता है कि वह अपनी वर्चस्वादी सत्ता पर आंच नहीं आने देगा उसके लिए उसे कुछ भी करना पड़े । वह चिकना घड़े के सामान है जो अपने हित के लिए भेष भी बदल सकता है गौकसी करवा सकता है और मोक्ष के नाम पर भोली भाली जनता को ठग भी सकता है । समाज व्यवस्था और उसकी विषमताओं का हू-ब-हू वर्णन इस कविता में मिलता है -

"वह अव्वल दर्जे का

बहुरुपिया है

अपने दुर्ग को बचाने हेतु

कही रामनामी ओढ़

[32] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण पृ. सं. :47

[33] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

कीर्तन गाता है ।

कही गिरजा की सीढ़ी से

रास्ता मोक्ष का दिखता है ।"[34]

कवि को गाँव से काफी लगाव है, जिसका अनुभव संवेदनात्मक चेतना का परिचय कराती है । जो मुक्ति के ज्ञानात्मक संवेदना के सामान प्रतीत होता है । गाँव में हो रहे शोषण, अत्याचार, अंधभक्ति का विरोध करता है और 'हमारे गाँव' नामक कविता में 'हरि और जन' के माध्यम से पूरी ग्रामीण व्यवस्था का वर्णन किया है कि गाँव में कुछ हरि और जन होते है । हरि उच्च वर्ग का प्रतीक माना गया है जो गांव के अन्य लोगों के साथ भेदभाव करता है । वह गांव के निम्नवर्ग के लोगों से घृणा करता है । यहाँ तक की वह उनके साथ न उठता है न बैठता है और वह परछाई तक से परहेज करता है । प्यास से व्याकुल अगर कोई जन कुएं के घाट पर पैर रख दे तो ऐसा लगता है, कि पानी मूत में बदल जाता है । जन को पानी तो नहीं मिलता है लेकिन माँ-बाप की गलियां और फिर वहां पैर न रखने की धमकियां मिलती रही हैं । जबकि जन के द्वारा बनाये जूता, बुना हुआ कपड़ा, साफ-सफाई, चौका बर्तन, धुला हुआ कपड़ा पहनने से हरि को कोई पहरेज नहीं होता है ।

कविताओं के माध्यम से जन जागरण उत्त्पन्न करना कवि का मुख्य उद्देश्य है, हजारों वर्षों से चली आ रही दूषित विचार धाराओं को बदलने की छटपटाहट, गुलामी, छुआछूत, भेदभाव, उत्पीड़न से मुक्ति जीवन में सद्भावना, प्रेम, भाईचारे का राग, छेड़ना, मनुष्य-मनुष्य में भेद न हो आपसी सद्भावना बने, समाज में यही कवि का मुख्य उद्देश्य है । मेहनत करने वाला व्यक्ति भूखा न रहे और श्रम करने वालों को उचित मूल्य मिले । कवि 'छत

[34] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 37

की तलाश' नामक कविता में प्रेम और बंधुत्व के साथ ही साथ स्वतंत्रता बंधुत्व और भाई चारे का संदेश दिया है -

"चौरस जमीं पर

मकां ऐसा बनाऊँगा

जहाँ हर होठ पर

बंधुत्व का संगीत होगा

मेहनत कश हाथ में ।"[35]

मलखान सिंह की कविताओं की प्रभावात्मकता और उसके मानवीय उद्देश्यों को देखते आलोचक चौथीराम यादव का कहा है - "इनकी विशिष्टता यह है कि यहाँ विमर्श सतह से उतराता नही दिखाई देता बल्कि यही कि विचारधारा दृष्टि का उन्मेष करती है । यह सही है की इतना वरिष्ठ कवि होने के वावजूद इन्होंनें अपेक्षाकृत कम लिखा है लेकिन जो भी लिखा है वह विचारोत्तेजक और तार्किक है, मन और मस्तिष्क को झकझोरने वाला है । इसमें सामान्य मनुष्य संघर्ष शील जीवन यथार्थ की अभिव्यक्ति है । इससे भी आगे बढकर इनकी कविताएँ वर्चस्ववादी सता-संस्कृति को खुली चुनौती देती है और चेतावनी भी ।

"मत भूलो की अब । मेहनतकश कंधे

तुम्हारा बोझ ढ़ोने को ।

तैयार नहीं हैं । विल्कुल तैयार नहीं हैं

[35] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं: 30

देखो । बंद किले

से बाहर । झांक कर देखो ..."[36]

मलखान सिंह के अंदर गंभीर चेतना है और सामाजिक जागरूकता है जो सीधे बिना घुमाये-फिराए, सीधा जवाब देते हैं 'हमारे मेहनती कंधो से तुम्हारी शान' है और उसके बदले में हमको अपमान, तिरस्कार, भेदभाव आदि देते हो । अब परिवर्तन को देखने के लिए जरा बाहर देखो सब कुछ बदल रहा है ।

जयप्रकाश कर्दम ने 'किले' नामक कविता में यथार्थ का चित्रण करते है -

"ब्राह्मण का मान

ठाकुर का शान

सेठ की तिजोरी

खेत-खलिहान

मिल- कारखाने... ।"[37]

दलितों को श्रम में तो आगे रखा गया लेकिन जब उनको अधिकार देने की बारी आयी, तो उनको वंचित होना पड़ता है । 'ओम प्रकाश वाल्मीकि' तब तुम क्या करोगे' नामक कविता में सीधा सवाल पूंछा है । कि अगर तुम्हे अधिकारों से वंचित कर दिया जाये तो तुम क्या करोगे ?

"यदि तुम्हे,

पुस्तकों से दूर रखा जाए

[36] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं. : 48

[37] जय प्रकाश कर्दम,गूंगा नही था मैं,शाहदरा दिल्ली : 13

जाने नहीं दिया जाए

विद्या मन्दिर की चौखट तक

ढिवरी की मंद रोशनी में !"[38]

उपर्युक्त कविता में सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है कि अगर शिक्षा मंदिर से तुम्हें दूर रखा जाये तो तुम क्या करते ? इस सामाजिक व्यवस्था के प्रति आक्रोश तो बहुत पहले से कविताओं में दिखाई दे रहा है, जिसकी वास्तविक चेतना वर्तमान कवियों में दिखाई देती है । मलखान सिंह उन कवियों में महत्पूर्ण है जो बदलाव और चेतना का चित्रण 'हमारे गाँव में' नामक कविता में करते हैं । परम्परागत रूप से जो भी होता रहा है उसका विरोध हर समय हुआ है लेकिन हमारे अपने ही बीच के लोग उस विरोधी दल के जाल में फँस अपनों को ही डसने को तैयार हो जाता रहा है । क्योंकि वह पेट की मार से हमेशा परास्त हो गया है । पेट को भरने के लिए ही वह बेगारी तक करता रहा है, क्योंकि इसको भरने के लिए उसके पास कोई साधन नहीं रहा है । सामाजिक समानता लाने के लिए आर्थिक समानता का होना भी अनिवार्य है ।

स्वयं डॉ अम्बेडकर ने भी यही माना है कि " यह विवाद रहित सत्य है की आपके पास कम से कम थोड़ी बहुत मानव-शक्ति तो है, पर आर्थिक शक्ति कुछ भी नहीं है । आपके पास न कोई व्यवसाय है, न कोई सरकारी नौकरी और न कोई जमीन है । रोटी के टुकड़े भी उच्च जातियों के लोग आपको फेंककर देते हैं । ये आपके जीने के साधन है कि आपके पास न भोजन है न कपड़ा है । क्या आपके पास धन शक्ति हो सकती है ? आपके पास तो अपने ऊपर हो रहे अन्याय के खिलाफ अदालत जाने की भी क्षमता नहीं है । हजारों अछूत बिना कोई शिकायत

[38] ओम प्रकाश बाल्मीकि,तब तुम क्या करोगें? कँवल भारती,दलित निर्वाचित कविताएँ,साहित्य उपक्रम : 61

किये हिन्दुओं के हाथ अपमानित, पीड़ित और प्रताड़ित हो रहे हैं, क्योंकि वे अदालत का खर्चा वहन करने में समर्थ नहीं हैं।"[39]

2.2 सामाजिक चेतना

सामाजिक चेतना से तात्पर्य समाज में अपने अस्तित्व की तलाश से है । सामाजिक और चेतना दोनों शब्द अलग-अलग तो है लेकिन दोनों की अहमियत इस दृष्टि से है कि 'मनुष्य एक समाजिक प्राणी है' वह समाज में रहता है। बिना मनुष्य के समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती 'लेकिन उन मनुष्यों की स्वाभाविक प्रवृति रही है। यह जानने कि समाज में उनकी क्या स्थिति रही है और वह अपने बारे में यह जनाना चाहता है कि वह समाज कैसा था और अब उसके समाज में क्या परिवर्तन आया है ? क्योंकि उसके अंदर हमेशा से कुछ नया करने की इच्छा रही है। समाज में उसके प्रति अपनी दृष्टि को जागृत करना अपने स्थिति की तलाश करना ही सामाजिक चेतना है।

भारतीय हिन्दू समाज का इतिहास का रूप बहुत ही विद्रूपतापूर्ण है जो दूर से देखने और सुनने में बहुत अच्छा लगता है, परन्तु वास्तविकता यह है की इसे नजदीक से देखने पर मन और मस्तिष्क को जरूर झकझोरती है । इतिहास से हमें यह जानकारी मिलती कि सामाजिक व्यवस्था को चार भागों में बाँटा गया है जो इस प्रकार है - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र। जिनकी स्थिति और अधिकार क्रमानुसार घटते हुए रूप में हैं।

इनमें से चौथा वर्ण यानी शूद्र जिन्हें सामाजिक अधिकारों से वंचित किया गया। इन्हें उसी समाज के लोगों ने उपेक्षित कर दिया और समाज में घृणित दृष्टि से देखते है जिससे उनकी मानवीय गरिमा एक लम्बी अवधि तक दबी रही । समाज में सब को समान अधिकार मिलना चाहिए परन्तु सामाजिक स्थिति इससे भिन्न रही जिसे हम स्वार्थी नीति कह

[39] कँवल भारती, समाजवादी अम्बेडकर पृ. सं. : 96

सकते हैं। इसी स्वार्थी नीति के खिलाफ जो चेतना जागृत हुई उसने इस व्यवस्था में परिवर्तन की मांग और अपने अधिकार तथा आदर्श को प्राप्त करने के लिए जूझने लगा। तभी दलित सामाजिक चेतना का जन्म हुआ।

"यदि समाजवादी, समाजवाद को एक निश्चित वास्तविकता में बदलने के इच्छुक हैं, तो उन्हें स्वीकार करना होगा की सामाजिक सुधार की समस्या मूलभूत समस्या है और वे इससे बचकर नही भाग सकते। भारत में फैली सामाजिक व्यवस्था एक ऐसा मामला है, जिससे समाजवादियों को निपटना होगा।"[40] सामाजिक परिवर्तन के बदलाव की इस दिशा में दलित साहित्यकारों का विशेष योगदान रहा जो दलित समाज सदियों से पीड़ा दुःख अपमान झेलता रहा उसके प्रति आक्रोश, नकार और विद्रोह का स्वर दिखाई पड़ता है। दलित साहित्यकारों ने महसूस किया उन्हें लगा कि हमारे लिए इन समस्याओं को दूर करना ही सबसे बड़ा कार्य है जो समाज व्यवस्था दलितों के प्रति घृणा, अन्याय और अत्याचार की धारा चल रही थी। उनको दूर करना ही हमारा फर्ज होना चाहिए। दलित जीवन से जुड़ी समस्याओं का सिलसिला कोई नया नहीं है बल्कि इनके बीच समस्याओं की शुरुआत तभी हो गयी थी जब से ब्राह्मणी व्यवस्था ने जन्म लिया था। तब से लेकर आज तक इसे समाप्त करने की जद्दोजहद चल रही है। अनेक संतों ने इन कुप्रथाओं को समाप्त करने का प्रयास किया।

"वैसे तो हिंदी में दलित जीवन से जुड़ी रचनाओं की शुरुआत के बीज निर्गुण संत कवियों की वाणियों में छिपें है। संतकवियों में समाज सुधार का कार्य किया तथा वर्णव्यवस्था, जाति-पाँति, ऊँच-नीच, ब्राह्मण, शूद्र, मूर्तिपूजा, पाखण्ड, ब्राह्मडम्बर का विरोध किया।"[41] हिंदी जगत के महान संत कवि कबीरदास ने जाति-पांति, पाखण्ड़ का जमकर विरोध किया। उनकी दृष्टि समदर्शी थी और कहा कि हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं ।

---

[40] डॉ.बी.आर.अम्बेडकर,सम्पूर्ण वांडमय, पृ. सं. : 65

[41] डॉ.जयप्रकाश कर्दम,दलित साहित्य, 'वार्षिकी' 2011 :44

आधुनिक दलित कविता की शुरुआत अचानक नहीं हुई । इसकी शुरुआत 1914 में प्रकाशित 'हीराडोम' की कविता 'अछूत की शिकायत' से हुई । उन्होंने ने अपना दुःख और पीड़ा की मार्मिक अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से किया । पहली बार लोगों को एहसास हुआ कि क्या ऐसा भी होता है ? पहली बार हीराडोम और उत्तर भारत में दलित आन्दोलन को चला रहे स्वामी अछूतानन्द ने मानवीय पीड़ा व संवेदनाओं की अनुभूति किया और अपने समाज के प्रति पीड़ा, अपमान और दुःख का जो कारण था, उनको अपनी कविताओं के माध्यम से सामाजिक चेतना के रूप में व्यक्त करने लगे ।

"आछूतानंद की केवल 'आदिवंश का डंका' रचना उपलब्ध है । प्रस्तुत ग्रन्थ में गीत, गजल, भजन और रसिया शामिल है । इस लघु संग्रह में 21 कविताएं संकलित । अछूतानन्द को दलित साहित्य का जनक माना जाता है । दलित जागरण के निम्न पक्तियों को कविता में उल्लेख करते थे -

"सभ्य सबसे हिन्द के प्राचीन हकदार हम

था बनाया शूद्र हमको, थे कभी सरदार हम

अब नही है वह जमाना,जुल्म 'हरिहर'मत सहो

तोड़ दो जंजीर जकड़े क्यों गुलामी में रहो ।"[42]

कवि ने स्पष्ट किया है कि हम कोई बाहरी नहीं हैं हम आदि निवासी है हमें तो इनकी कूटनीतियों का समय पर शिकार होना पड़ा । नहीं तो हम भी राजा थे । ब्राह्मणी नीतियों को मानने वालों ने हमारे साथ धोखा किया है । आगे उन्होंने चुनौती दी है कि अब वह समय नहीं है

[42] डॉ.जयप्रकाश कर्दम,दलित साहित्य, 'वार्षिकी' 2011 पृ. सं. :45

कि हम इस अन्नाय और जुल्म को सहें बल्कि सारे जंजीरों यानी सामाजिक बन्धनों को तोड़कर बाहर निकलने की घोषणा करते हैं।

सरदार का मतलब यहाँ राजा,मंत्री और मुखिया भी हो सकता है क्योंकि कि पुराणों में शूद्रों के राजा और मंत्री बनने का प्रमाण मिलते है। इससे यह पता चलता है कि शूद्र राजा भी हो सकते थे और शासन भी चला सकते थे। किसी भी तरह का भेदभाव नहीं मानना था, लेकिन बाद में गुलामी की ये जंजीर सोची समझी रणनीति के अनुसार बनाई गयी। "यह निर्विवाद सत्य है कि प्राचीन आर्य समाज में शूद्रों ने उच्च राजनीतिक गौरव प्राप्त किया था। वे राज्य के मंत्री बन सकते थे। महाभारत में इसका प्रमाण मिलता है। महाभारत अपनी स्मृति के आधार पर 37 मंत्रियों की सूची का उल्लेख करता है, उसमें चार मंत्री ब्राह्मण, आठ मंत्री क्षत्रिय, इक्कीस मंत्री वैश्य और तीन मंत्री शूद्र तथा एक मंत्री सूत था।"[43]

कविताओं की इस कड़ी में 'हीराडोम' की कविता 'अछूत की शिकायत' का वर्णन करना अति आवश्यक है। यह कविता उस समय की प्रसिद्ध पत्रिका सरस्वती में छपी थी। "यह कविता आ .महावीर प्रसाद द्विवेदी की संपादन में निकलने वाली सबसे प्रतिष्टित पत्रिका 'सरस्वती पत्रिका' में सन 1914 ई. में छपी। जिसे हिंदी की प्रथम दलित कविता का माना जाता है- " जिसमें हिराडोम जाति की पीड़ा को हीराडोम ने शब्दों में वर्षों पूर्व पिरोया था इनके द्वारा लिखे एक-एक शब्द आज प्रासंगिक है हीरा डोम की शिकायत सवर्णों के भगवान से है कविता की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार है-

"हमनी के रति दिन दुःख भोगत बानी

हमनी के सहेबे से विनती सुनाईबि |

[43] डॉ.बी.आर.अम्बेडकर,सम्पूर्ण वांडमय, खंड, सात, पृ. सं. 322

हमनी की दुःख भगवाओं नै देखताजे

हमनी की कबले कलेस्वा उड़ाइवि |"[44]

कवि की यह कविता भारतीय समाज की यथार्थ छवि को प्रस्तुत करती जो सदियों से चली आ रही परम्परा को उजागर करती है कि जिस भगवान की हम पूजा करते हैं , वह भी उन्ही की सुनता है जो संपन्न है वह हम गरीबों की क्यों नहीं सुनता है। यह एक बहुत बड़ा प्रश्न है।

कवि की पीड़ा आज प्रसांगिक है किस प्रकार यह भेदभाव होता है, क्या ईश्वर भी इन्हीं के बनाये मार्गों पर चलता है ? फिर वह यह कहता है कि आखिर जब भी उन पर किसी प्रकार का संकट आता है। हर बार नया अवतार लेता है। चाहे प्रह्लाद की रक्षा के लिए हो या फिर दुःशासन चीरहरण में द्रौपदी की की लाज बचाना हो या फिर अंगुली पर गोवर्धन पर्वत उठाकर' लोगों की रक्षा करना हो। हर समय उपस्थित रहते हैं। लेकिन हम दिन रात दुखों में डूबे रहते हैं, हमारी कोई खबर नहीं लेता। हम भी उनसे मिलेगें और अपना दुःख मिलकर बतायेगें कि हमारा दुःख कभी दूर करने की आप क्यों नही सोचते हैं ? यह कितना विचारोतेजक शब्द है जो कवि के हृदय से निकला हुआ दर्द है।

हिंदी साहित्य में दलित कविता तो तभी से लिखी जा रही है जब से भद्र जनों की कविता लिखी जाती थी लेकिन उसका कोई निश्चित स्थान नहीं था। अपना साहित्य नहीं था कि मुख्यधारा में जुड़ कर साथ चल सके इसलिए इसको स्थान बनाने में काफी समय लगा। इस आन्दोलन में 'डॉ.बाबासाहेब भीमराव अम्बेडकर' का आना बहुत बड़ा परिवर्तन था। जिन्होंने हर दबी हुई संवेदना को आवाज दी। लोगों में साहस भरा, 'शिथिल हुए नसों में उर्जा का संचार

[44] डॉ.जयप्रकाश कर्दम, दलित साहित्य,2011 वार्षिकी पृ. सं.:45-46

किया। तभी इस धारा को गति मिली जो आज अविरल बहती हुई दिखाई दे रही है। हर रचना में उनके तेजस्विता की छाप दिखाई पड़ती है। प्रसिद्ध आलोचक कँवल भारती का मानना है कि "डॉ अम्बेडकर के आन्दोलन ने दलित कविता को उर्जा और नयी तेजस्विता प्रदान की थी और नई कविता का नया चरण नई भूमिका के साथ शुरू हुआ।"[45]

दलित कविता की जो धारा चली आ रही थी। उसमें 'मलखान सिंह' की कविता में जो विचारोत्तेजक चेतना दलित समाज के लिए मिलती है। वह एक अलग तेवर के साथ अलग अंदाज के साथ मिलती है। इनकी कविताओं के सभी कायल हैं, जो दलित समाज को इतनी कम कविता लिखकर भी अनेक मार्ग दिखाते हैं । इनके पास वही तेवर और उत्साह है जो कबीरदास के पास था। किसी भी घटना को घुमा फिरा कर कहने की आदत नहीं है । जैसा समाज है उसका वैसा ही सीधा वर्णन करने में उन्हें कोई हिचक नहीं होती है 'मुझे गुस्सा आता है' कविता में यथार्थ का वर्णन है जो इस प्रकार है -

"आज

आजादी की आधी सदी के बाद भी

हम गुलाम है

पैदायशी गुलाम... ।"[46]

कवि भारत के आजादी की आधी सदी बीत जाने के बाद की स्थितियों का वर्णन कर रहा है। देश तो आजाद हो गया, लेकिन क्या वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को आजादी मिली। आज भी दलितों के साथ भेदभाव का व्यवहार किया जा रहा है।| दलितों के साथ ऐसा व्यवहार होता रहा है पहले की तरह रौब दिखाते लोग मिल जाते है, जो हमेशा से चली आ रही गलत

[45] कँवल भारती, दलित निवार्चित कविता, भूमिका पृ. सं. : 17

[46] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण : पृ. सं. 17

मानसिकता के शिकार हैं। इसको खुद मैंने होते देखा है वास्तविक आजादी तो तभी मिलेगी जब आजाद भारत में सबको समान रूप से देखा जाने लगेगा नहीं तो हम आजाद स्वयं को कैसे मान सकते हैं।

कवि ने 'आखिरी जंग' नामक कविता में पूरे ऐतिहासिक परिदृश्य का भेद कविता में खुलकर किया है -

"ओ परमेश्वर !

कितनी पशुता से रौंदा है हमें

तेरे इतिहास ने !

देख, हमारे चेहरों को देख

भूख की मार के निशान

साफ दिखाई देंगे तुझे।"[47]

हमारा देश धार्मिक देश है। धर्म को यहाँ प्रमुख स्थान दिया जाता है। हिन्दू धर्म में 33 करोड़ देवी –देवता मानव के कल्याण के लिए हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक के देवता हैं, तो सवाल उठता है कि जब इतने देवी-देवता हैं तो फिर क्या उन्हें यह कभी नहीं दिखता हैं कि समाज का एक वर्ग ऐसा है जो भूख और प्यास से तड़प रहा है। भूख उसकी सामान्य भूख नहीं वह तो समानता, स्वतंत्रता, और बंधुता की भूख की चाहत लिए बैठा है क्योंकि इतिहास गवाह हैं कि हमेशा से दलित वर्ग पर अन्याय और जुल्म ही होता रहा है जिसका वास्तविक रूप अभी दिखाई देता है दलित समाज शिक्षा, सत्ता, पूँजी सभी मायनों में पीछे ही है। कुछ अपवादों को छोड़कर

[47] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण : पृ. सं. : 26

वही प्रताड़ना अभी भी दिखाई देती है जो धर्मावलम्बियों ने मनमानी तरीके से गढ़ लिए हैं यह सवाल स्वयं कवि ने समाज से किया है।

यही नही आगे वह धर्म के ठेकेदारों का भी यथार्थ चित्र उपस्थित करते हैं, जो कविता में व्यक्त है -

"लीलाधर !

हम जहाँ खड़े हैं वहां

हर तरफ बहेलियो का ही बसेरा है।

धरती से आकाश तक... ।"[48]

कपटी, अन्धविश्वासी, पाखंडियों का तो जमघट चारों तरफ है, ओ लीलाधर हम जिस जगह में आज खड़े हैं, उसको तो चारों तरफ से पाखंडियों ने घेर रखा है। कविता का आशय यह है कि इन पाखंडियों ने ऐसा ब्रह्मजाल फैलाया जो धरती से लेकर से आसमान तक कब्ज़ा किये है। अर्थात् सभी निम्न पद से लेकर उच्च पदों पर अपना स्थान बनाये हैं जो मनुष्य-मनुष्य के बीच असामनता का प्रमुख कारण बना हुआ है। ऐसा सतरंगी जाल जिससे मनुष्यता नष्ट हो रही है। मानव-मानव के अंतर करने वाले कोई और नहीं यही पाखंडी हैं, जो आज भी अपना शिकार करने को तैयार रहते हैं। जातिव्यवस्था, वर्णव्यवस्था को कायम रखने के लिए चारों तरफ से मनुष्यता को जकड़ रखा है।

प्रो. चौथीराम का मानना है - "वर्ण व्यवस्था को अकाट्य और पुख्ता बनाने के लिए ब्राह्मण बुद्धिजीवियों ने गजब की किलेबंदी की। पुनर्जन्म, कर्मफल, भाग्यवाद, अवतारवाद के कल्पित-सिंद्दान्त उसके रक्षा कवच और ईश्वर तथा देवी-देवता उसके अमोध अस्त्र है। इतना ही नहीं इसे

[48] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण : पृ. सं. : 28

देवी विधान सिद्ध करने के लिये इन बुद्धिजीवियों ने कृष्ण के मुँह में डालकर यह कहवा लिया की 'चतुश्वर्ण मया सृष्टं' अत: इस शोधनकारी रक्षा कवच को भिन्न-भिन्न करना और हथियारों को कुंद बनाना दलित साहित्य का उदेश्य है । मलखान सिंह ने धर्मराज कृष्ण सहित सभी देवी-देवताओं तथा तथाकथित ईश्वर को भी कठघरे में ला खड़ा किया है-

मधुसूदन । सच-सच बताओ क्या ।

यही है निष्काम कर्म । पसीना बहा एड़ी तक ।

कमाई हम करें ।

धुस जाती है ससुरी । अमीरी के पेट में ।

ब्राह्मण जिसे सुकर्म । या वर्ण धर्म कहते है । षययंत्र है-षड्यंत्र ।

हिंसक षडयन्त्र है । आदमी से ।

आदमी होने का हक हडपने का ।"[49]

मलखान सिंह के समकालीन जितने भी कवि हुए है, वे समानतावादी सामाजिक व्यवस्था के पक्षधर हैं जो जाति और वर्गविहीन समाज चाहते हैं, क्योंकि वह अपने पुरखों की दशा पहचान गया हैं जिनकी आवाज हमेशा से दबी रही है । ओमप्रकाश बाल्मीकि की कविता 'मेरे पुरखे' में व्यक्त है –

" तुमने कहा-

ब्राह्मा के पांव से जन्मे शुद्र

और सिर से ब्राह्मण

[49] मलखान सिंह,अंधड़,भूमिका,प्रकाशनाधीन

उन्होंनें पलट कर नहीं पूछा

ब्राम्हा कहाँ से जन्मा ?"[50]

जय प्रकाश कर्दम भी अपनी कविताओं में सामाजिक यथार्थ का वर्णन करते हैं । जिन्होनें 'वर्णवाद का पहाड़ा' नामक कविता के माध्यम समाज की व्यवस्था पर व्यंग्य करते है -

"मास्टर जी-

हम शुक्रगुजार हैं कि तुमने

हमें पढ़ाया

जाहिल से आदमी बनाया...[51]

यह सत्य है कि दलितों को शिक्षा से वंचित रखा गया और उनको हमेशा, जातिवाद, वर्णवाद का पहाड़ा ही विद्यालयों में पढ़ाया जाता रहा है । जो पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहा है । उसी व्यवस्था के प्रति अक्रोश व्यक्त करती है । यह कविता बताती है कि गुरु जी हम आप के आभारी है कि आपने हमें जातिवाद को पढ़ाना कभी नहीं भूला है । कवि ने व्यंग्य का प्रयोग कर उस व्यवस्था का उल्लेख किया है । जिसकी शिकार दलित जाति सदियों तक रही है ।

समाज की जो व्यथा है । उसके प्रति प्रमुख दलित कवि मलखान सिंह ने अपनी चिंता व्यक्त की है । मलखान सिंह एक मात्र कवि ही नही बल्कि सामाजिक चिन्तक भी हैं जिनका मौलिक विचार इतना तीव्र है कि अब वह किसी भी प्रकार के झूठा आश्वासन मानने से इनकार कर रहे हैं । अब वह इस वर्णवादी, जातिवाद, अंधविश्वासी, किला को सीधे तोड़ देने को कहते हैं । अब वह स्पष्ट रूप से कह रहे हैं कि इसका अंत तभी होगा जब ब्राहमणवादी

[50] कँवल भारती, दलित निर्वाचित कविताएं, : 65

[51] जय प्रकाश कर्दम, गूंगा नही था मै,: 22

व्यवस्था का अंत होगा। 'सुनो ब्राह्मण' कविता की यह पंक्तियाँ दलित समाज को यही सन्देश दे रही हैं ।

"हमारी दासता का सफर

तुम्हारे जन्म से शुरू होता है

और इसका अंत भी

तुम्हारे अंत के साथ होगा।"[52]

स्पष्ट शब्दों में कहा जा सकता है जब तक यह व्यवस्था सामाप्त नहीं होगी, तब तक किसी भी देश या राष्ट्र को एकता के सूत्र में नही बांधा जा सकता।

कुछ कविताओं में उन्होंने प्राचीन काल से चली आ रही व्यवस्था वर्तमान व्यवस्था दोनों के प्रति विरोध को व्यक्त कर रहे हैं -

"तो सुनो वशिष्ठ

द्रोणाचार्य तुम भी सुनो

हम तुमसे घृणा करते हैं

तुम्हारे अतीत

तुम्हारे आस्थाओं पर थूकते हैं ।"[53]

कहना न होगा कि मलखान सिंह ने समाजवाद को एकता के सूत्र में बांधने को केंद्र में रखकर ही अपनी चिंता व्यक्त करते हैं। वह शोषित और पीडित जनता की मुक्ति चाहता है। जयप्रकाश

[52] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण : 45

[53] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण : 48

कर्दम ने दलित की मुक्ति आह्वान करते हुए लिखतें हैं -"इसलिए दलित साहित्य का प्रमुख उद्देश्य सामाज में जाति-पाँति का भेदभाव मिटाना है। जिन रूढ़ियों, परम्परा, आस्थाओं और विश्वासों, में जकड़ा यह समाज पशुओं से बदतर हालत में जीवन जीने को अभिशप्त रहा है उससे निकलकर वैज्ञानिक युग वाली दुनिया में लाना | हर तरह के शोषण, दमन, उत्पीड़न के खिलाफ आवाज उठाना। तर्क और आलोचनात्मक सोच को जन्म देना है।"[54]

2.3 राजनीतिक चेतना

राजनीतिक चेतना समाज का प्रमुख अंग है। राजनीति और साहित्य का अटूट सम्बद्ध है जो दलित साहित्य में डॉ॰ अम्बेडकर की देन है। बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर दलित समाज के लिए पथप्रदर्शक थे। उन्होंने स्वयं कहा था कि राजनीति के द्वारा दलितों का उद्धार किया जा सकता है। "सन1920 में उन्होंने 'मूकनायक'अख़बार की शुरुआत की तब वे दलितों के नेता के रूप में पहचाने जाने लगे थे।"[55]

डॉ. अम्बेडकर ने दलित समाज के सूचनार्थ कई पत्रिकाओं को निकालना शुरू किया सं 1926 में ही डॉ. अम्बेडकर ने 'आदिडंका' और 3 अप्रैल 1927 में ही 'बहिष्कृत भारत' नामक दूसरा समाचार पत्र निकाला जिसमें दलितों के अधिकारों के बारे में सूचनाओं सिलसिला शुरू हुआ था। डॉ. अम्बेडकर महान सामाज सुधारक, दलितों के मसीहा, कुशल पत्रकार एवं महान अर्थशास्त्री भी थे। वे ऐसे लोकत्रंत के स्थापना करना चाहते थे जिसमें सभी को सामान

[54] जयप्रकाश कर्दम , दलित साहित्य वार्षिकी,2007-2008 :326

[55] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मूद्दे,: 11

अधिकार मिले । जिसके लिए कवि के अनुसार राजनीति में भाग लेना आवश्यक है । उन्होंने कहा राजनीति समाज की कुंजी है दलितों के लिए अम्बेडकर के रूप में एक नेता, समाज सुधारक, दार्शनिक का मिलना ही दलित बदलाव का युग था । अब दलित का संगठन बनाना शुरू हो होता है, दलितों को अपनी राजनीतिक पहचान मिलना शुरू होती है -"इसी बीच डॉ. अम्बेडकर ने '1935 के गवर्मेंट आफ इण्डिया एक्ट' के अधीन राज्य सरकारों को स्वशासन का अधिकार मिला था तथा 1937 के चुनाव होने जा रहे थे इसी दौरान डॉ.अम्बेडकर ने 1936 में 'स्वतंत्र मजदूर पार्टी' बनाकर चुनाव लड़ा था । वह समय निश्चित ही दलित आन्दोलन के विकास और समृद्धि का था । आज दलित अपनी बात संगठन बनाकर मंच से कहने लगे थे ।"[56]

सबसे पहले डॉ. अम्बेडकर ने गरीबों, मजदूरों का संगठन बनाकर उनमें जोश और उत्साह भरने का काम किया । जिसमें वे बढ़-चढ़ कर भाग लेने लगे और विरोधी पार्टियों के अब छक्के छूटने लगे और विरोधी पार्टियों के कितना भी विरोध करने के बावजूद इस पार्टी को सफलता मिलती रही और निरंतर राजनीति में दलितों को पहचान मिलती गयी । इस महान चिन्तक दलितों को राजनीति का पहला पहाड़ा पढ़ाया था । जो आगे चलकर फलती फूलती रही । वे हमेशा से स्वतन्त्रता, समानता और एकता के पक्षधर थे ।

"डॉ॰ अम्बेडकर ने संविधान में ऐसी व्यवस्था की थी जिनसे एक राष्ट्र एक जाति एक सभ्यता और एक संस्कृति का निर्माण होता है और पृथकतावाद, अतिस्थानीयवाद, जातिवाद और व्यक्तिवाद का अवसान होता है । डॉ. अम्बेडकर के समकालीन एक और दलितों के नेता के रूप में विख्यात थे जो लम्बे समय तक राजनीति में जुड़े रहे और निरन्तर आगे बढ़ते रहे । एक अन्य महान दलित नेता जिनका नाम 'बाबू जगजीवन राम' था दलितों का इनके प्रति विश्वाश इतना बढ़ गया था 'कि बाबू जी एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बनेगे' और वे इस राजनीतिक परिपाटी में वे सफल भी हुए, लेकिन ब्राह्मणवादी व्यवस्था ने उन्हें प्रधानमंत्री नहीं

[56] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मूद्दे,: पृ. सं. 13

बनने दिया। आगे की राजनीति में दलितों की खास पहचान होने लगी | उसी समय दलित राजनीति के एक और मसीहा का जन्म होता है। जिनका नाम है 'मान्यवर कांशीराम' "70 के दशक में भारतीय सामाजिक आन्दोलन के इतिहास में कांशीराम का उदय हुआ। 1981 में उन्होंने डी.एस.फोर (दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) बनाकर पूरे देश में पूना पैक्ट की स्वर्ण जयंती को धिक्कार दिवस के रूप में मनाया तो परम्परागत राजनीति में भूचाल आ गया।"[57]

उसी क्रम 14 अप्रैल 1984 को बहुजन समाजवादी पार्टी का गठन हुआ। जिस पार्टी का प्रमुख उद्देश्य बहुजन हिताय बहुजन सुखाय था जो प्रमुख राजनीतिक पार्टी के रूप में उभरकर सामने आई है। 'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का विचार हमारे महापुरूषों ने समय-समय छेड़ते रहे हैं। "इस विचार को कामयाब बनाने के लिए समय-समय पर महापुरूषों ने अभियान छेड़ा और जीवन पर्यंत जारी रखा। जिसके लिए गौतमबुद्ध के बाद संत शिरोमणि गुरुरविदास, कबीरदास, दादूचोखामेला गुरुनानक, गुरुगोविंदसिंह, महात्मा ज्योतिबा फुले, छत्रपति शाहू जी महराज, नारायण गुरु, पेरियार रामास्वामी नायकर, बाबा साहेब डॉ अम्बेडकर, महाप्राण जोगेद्रनाथमंडल, हरिचन्द्रठाकुर, गुरुचन्द्र ठाकुर, गुरुघासीराम,बिरसा मुंडा , स्वामीअछूतानन्द ,स्वामी आत्माराम लक्ष्य जैसे अनेक पुरूषों का संघर्ष रहा है।"[58]

मान्यवर कांशीराम ने 6 दिसम्बर 1978 को 'बामसेफ' नामक पार्टी की स्थापना की थी। (बैकवर्ड एंड मैनोरिटिज कम्युनिटीज एम्प्लाइज फेडरशन) था और फिर बाद में 'डी.एस.फोर.(दलित शोषित समाज संघर्ष समिति) की स्थापना की। इनके प्रमुख तीन सिद्धांत हैं।

[57] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मूद्दे, : 13

[58] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मूद्दे : 53

1.जातीय सम्मान 2. भागीदारी 3. वोट को लूटने और विकने से बचाना प्रमुख सिद्धांत रहा है। जातीय सम्मान दिलाना उनका प्रमुख ध्याय रहा है जिसे उन्होंने अपना मुख्य केंद्र बनाया था। समाज में सब को सामान अधिकार दिलाना और नवजागरण पैदा कर सामाजिक परिवर्तन करना हैं। उनका मत था कि मात्र 15% मनुवादी हैं जो 85%जनता पर अन्याय, अत्याचार और मनमानी कर रहें हैं ।

"बकौल कांशीराम हम ऐसा परिवर्तन चाहते हैं जिसमें दलितों को मजलूमों को अति पिछड़े वर्गों को धार्मिक अल्पसंख्यकों, महिलाओं को स्वाभिमान और सम्मान पूर्वक जीने का अवसर मिले। पढ़ने- लिखने और आत्मनिर्भर बनने का मौका मिले।"[59] डॉ.अम्बेडकर से जो राजनीतिक आधार मिला था। दलित समाज के लिए वो अब आगे पहुँचकर बड़े आकार के रूप में दिखने लगता है।

दलित राजनीति में डॉ अम्बेडकर के बाद, बाबूजगजीवनराम, कांशीराम जैसे महान राजनीतिक नेता हुए जो इस कड़ी को आगे बढ़ाते रहे। कांशीराम का पार्टी के प्रति 'आत्मसर्पण' होना और 'अथक परिश्रम' के कारण ही उनकी पार्टी ने बहुत कुछ नया किया है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होनें देश के पांच स्थानों से साइकिल यात्राएँ भी निकालीं थीं जो 17 सितम्वर 1988 को कन्याकुमारी से चलकर 27 मार्च 1989 को दिल्ली में जाकर मिली थी । कांशीराम का सबसे पहला बसपा का राजनीतिक प्रचार उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरपुर जिले से शुरू हुआ जिसमें मायावती के अथक परिश्रम और लगन ने पार्टी को खास मुकाम तक पहुँचाया उत्तर प्रदेश की प्रभारी स्वयं मायावती थीं। पार्टी के प्रति लोगों के जुड़ाव से जनबल, आत्मबल, मनोबल बढ़ता गया, और फिर एक दिन आ ही गया जिसे सदियों से लोगो को इंतजार था जब "3 जून 1995

[59] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मूद्दे : 54

को मायावती उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनी 39 साल चार महीने और 17 दिन की आयु में ही मायावती मुख्यमंत्री बनने वाली दलित समाज की पहली महिला थी ।"[60]

जो सपना सदियों से दलित समाज प्रधानमंत्री बनने का देख रहा था वह सपना पूरा नहीं हुआ पर दलित समाज को एक राजनीतिक आधार मिला, जिससे इनको उत्साह, आत्मसम्मान, नवपरिवर्तन चेतना का प्रमाण मिला । यह सब कांशीराम के अथक परिश्रम और सम्पूर्ण दलितों के जागरण का परिणाम था । पार्टी में उत्साह भरने लिए कुछ नारे कांशीराम द्वारा दिए गये थे जो इस प्रकार है ।

1 जितनी जिसकी संख्या भारी, उसकी उतनी भागीदारी ।

2 वोट हमारा राज तुम्हारा नहीं चलेगा ।

3 21वीं सदी हमारी है अब बहुजन की बारी है ।

4 दारू पैसा लेना नहीं, चोरो को वोट देना नहीं है ।

5 बच्चा बच्चा भीम का कांशीराम टीम का ।

इस प्रकार दलित चेतना की दृष्टि से यह बहुत अच्छा समय कहा जा सकता था "अस्सी का दशक मान्यवर कांशीराम के दलित विमर्श के रूप में याद किया जायेगा । भारतीय राजनीति में सामाजिक परिवर्तन की दस्तक देने का श्रेय उन्हीं को जाता है । इससे पहले के दशकों का विश्लेषण करें तो दलित हाशिए पर दिखाई देते हैं। मान्यवर कांशी राम के संघर्ष से हशिए पर पड़े पुन:राजनीति में जोरदार दस्तक देने लगे ।"[61]

[60] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मुद्दे : 57

[61] हुकुमचंद्र भास्कर,दलित राजनिति के मूद्दे : 64

मान्यवर कांशीराम ने समाज में पिछड़े, उपेक्षित, शोषित, वर्गों को राह दिखाने का कार्य किया और दबे- कुचले पिछड़े, गरीब कमजोर वर्ग के लोगो को जागरूक कर,ज्यादती, अन्याय और अत्याचार का अंत करने का वीड़ा उठाया था। आज दलित वर्गों से निकले नेताओं की संख्या पहले की अपेक्षा बहुत अधिक है जो अम्बेडकर और कांशीराम के परिश्रम का ही फल है।

भारतीय राजनीति का सबसे बड़ा मुद्दा है 'जाति' का जिसका शिकार दलितों को हमेशा से होना पड़ता है। जातिवाद एक ऐसा मुद्दा है जिससे निकलना आज भी नही हुआ है। या कहें कि यह भारतीय समाज का सबसे बड़ा शत्रु है। सत्ताधारियों को 'जाति' रूपी राजनीति करने में महारथ हासिल हो गयी है। आज जातिवादी पार्टियों का बोलबाला है। भारत में पहली बार 'जातिगत' जनगणना भी 1931ई॰ में हो चुकी है। "सच तो यह है कि जातिगत जनगणना से सवर्णों का वर्चस्व कम नहीं होगा। इनका सत्ता, शिक्षा, व्यापार, एवं धर्म पर कब्ज़ा है।"[62] आज यह बहुत बड़ा मुद्दा है कि पहले 'जाति' विहीन राजनीति हो तभी एक अच्छे समाज की कल्पना की जा सकती है। बौद्ध धर्म को छोड़कर जाति हर समाज व देश में मौजूद है। स्थिति चाहे जैसी हो दलितों की भागीदारी में अब कमी नहीं है। इनमें से कुछ प्रमुख नेताओं नाम इस प्रकार है।

डॉ॰ बी॰ आर॰ अम्बेडकर, बाबूजगजीवनराम, बुद्धप्रिय मौर्य, मान्यवर कांशीराम, डॉ॰ के॰ आर॰ नारायण (कोचेरिल रमन नारायण) भारत के प्रथम दलित राष्ट्रपति सन् 1979 में बने, माता प्रसाद, बंगारू लक्ष्मण, बहन कुमारी मायावती, (प्रथम दलित महिला मुख्यमंत्री) उत्तर प्रदेश, रामविलासपासवान, सत्यनारायण जटिया, सुशील कुमार शिंदे, मीराकुमार (प्रथम दलित लोकसभा अध्यक्ष) आर.एस.गवई, कुमारी शैलजा आदि नेताओं से दलित राजनीति की खास पहचान है। जिनसे आगे आने वाले पीढ़ियों को प्रेरणा मिलती है। हमारा साहित्य भी राजनीति

[62] वही : 71

से काफी प्रभावित रहा है । जो दलित राजनीतिक मुद्दों को लेकर समय-समय पर चर्चा का विषय बनता रहा है ।

"दलित साहित्य का आन्दोलन की इस भावना एवं स्वतंत्र चेतना का विस्फोट साहित्यिक, राजनीति, वैचारिक स्तर पर हुआ है ।"[63] दलित साहित्य अपने विषय में दलित मुक्ति-संघर्ष को स्थान प्रमुख रूप से देते हैं । वह हजारों वर्षों से चली आ रही परम्पराओं का दमन कर नया समाज बनाते हैं । प्रसिद्ध दलित कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि का यह मानना है कि- "साहित्य और राजनीति का गहरा सम्बन्ध है कोई भी साहित्यिक आन्दोलन राजनीतिक आन्दोलन की भूमिका बनता है । हिंदी समीक्षक उस साहित्य में भी राजनीतिक प्रभाव ढूँढ लेते हैं, जो पूर्ण रूपेण पलायनवादी और रोमैंटिक होता है ।"[64] दलित साहित्य मानव केन्द्रित है, वह समाज के मात्र किसी एक पक्ष तक सीमित नहीं है बल्कि वह समाज का कोना-कोना देखता है ।

हिंदी दलित साहित्य का प्रमुख केन्द्र बिंदु अम्बेडकरवादी रहा है । ज्यादा से ज्यादा दलित रचनाकार अम्बेडकरवादी चिंतन से प्रभावित होकर रचना करते हैं । मलखान सिंह भी अम्बेडकरवाद से प्रभावित कवि हैं । उन्होंने व्यक्त किया की जिस आजादी के लिए बाबा साहेब ने इतना प्रयत्न किया है, और कुशल नीति से वे उस राजनीतिक चुनौती भरे माहौल में राजनीतिक नींव डालते हैं । उनके बाद की पीढ़ी किस प्रकार से बंदरो के बीच फँसी जा रही है |

प्रसिद्ध आलोचक कँवल भारती ने कविताओं की राजनीतिक व्याख्या करते हुए लिखते कि "कवि का दुःख इस बात को लेकर है कि दलितों ने अपनी आजादी के जो आन्दोलन चलाये, उसका

---

[63] ओमप्रकाश बाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. सं : 64

[64] वही : 65

परिणाम यह हुआ की उन्हें सिर्फ झंडा टँगी प्रतीकात्मक आजादी मिली और उनकी सुविधाओं के सारे फैसले कलंदरो ने अपने हाथों में रखे । पर कवि का दुःख अपनों में भी एक नया ताड़ वृक्ष उग आने को लेकर है-

"उफ ! कैसा यह ताँता है
कि हमारी बस्ती का
जो चतुर सुजान /नगर को जाता है
डूबता है दल-दल में
जंगल के बीचो-बीच
एक नया ताड़ वृक्ष /और उग आता है ।"[65]

यहाँ राजनीति का वह जाल प्रतिबिम्बित हुआ जो पूना पैक्ट में गांधी और कांग्रेस के नेताओं द्वारा दलितों के लिए बुना गया था तब से आज तक चतुर सुजान उसी दल-दल में डूबे रहे हैं । यही वजह है की दलितों के सारे रेडिकल संघर्ष ख़त्म हो गये है । उन्हें आरक्षण मिलता रहे बाँकी नीतियों योजनाओं और सुधारों से उन्हें क्या लेना देना ।"[66] कवि ने राजनीति पर किस प्रकार व्यंग्य किया है की हमारा शासन तंत्र 'काग़ज का घोड़ा' के सामान लगता है जो देखने में घोड़ा है । परन्तु वह कागज का है जिसका अपना अस्तित्व ही नहीं है ।

आज इस तंत्र में
हमारा वजूद
कागज का घोड़ा बन
गाँव चौपाल से

[65] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ.सं : 33
[66] कँवल भारती ,दलित कविता सघर्ष : 217

भव्य कंगूरे तक ... ।"[67]

कवि शासन व्यवस्था का वास्तविक रूप प्रस्तुत किया है । कवि शोषण करने वाली व्यवस्था को बेनकाव कर रहा है कि यह घोड़ा, हमारा बजूद है वह सत्ता पर बैठने के बाद, अपने तक ही सीमित हो जाता है । गांव से निकल कर भव्य महलों तक पहुंच तो गए हैं । परन्तु अब वह बस डींगे मार रहा हैं । जब कि सपने कुछ और दिखाए थे यहाँ से जाने के पहले, अब वह सपना, 'सपना ही रह गया है । दलित कविता हमेशा से बदलाव की मांग करती है । दलित कविता केवल इसलिए दलित कविता नहीं की वह दलित जीवन से जुड़ी है बल्कि वह इसलिए है कि उसमें शोषण, अन्नायाय, उत्पीड़न करने वाली ब्राह्मणवादी व्यवस्था के प्रति विद्रोह के स्वर है, तो दूसरी तरफ एक समानतावादी समाज की स्थापना करना मुख्य उद्देश्य है । ऐसे ही राजनीतिक बदलाव की कविता को प्रसिद्ध दलित कवि श्यौराज सिंह वेचैन' की कविता के बारे में कँवल भारती ने कहा हैं कि-"कवि मुख्य रूप से राजनीतिक बदलाव का कवि है उनकी कवितायें नये विश्व का निर्माण चाहती है, जिसमें न रंगभेद हो, न लिंगभेद, न जातिभेद और न आर्थिक विषमता यह फले-फूले और किसी के भी सपनों की हत्या न हो । कवि ऐसी रहनुमाई चाहता है जो देश को जाति-पाँति और साम्प्रदायिकता की आग में झोंक देता है । 'नया जहाँ' कविता में कवि पूरी तरह आश्वत है कि देश के नौजवान नया जहाँ बनायेगें और नहीं सुबह को लेकर आयेगें -

नौ जवां नया जहाँ बनायेंगें –बनायेंगें

जात-पाँत का तनाव ।

ऊँच नीच भेदभाव

पेट के सवाल का ।

[67] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण : 39

जो दे नहीं सके जवाब ।।

ऐसे रहनुमाई को हटायेंगें –हटायेंगें ।"[68]

मलखान सिंह की यही सबसे बड़ी खूबी है, कि वे मात्र समानता, स्वतंत्रता, विषमता,जातिवाद रंगभेद वर्णभेद तक सीमित नहीं रह जाते है। बल्कि राजनीतिक स्तर पर बनने वाली योजनाओं का उल्लेख 'कागज का घोड़ा' नामक कविता में किया है कि हमारे वजूद को लाने के लिए प्रतिदिन योजना बनती हैं । सामाज के विकास के लिए शासन स्तर पर योजनायें तो बहुत बनती हैं कि अब कोई भी व्यक्ति भूखा नहीं रहेगा । 'सब को काम मिलेगा और उसका उचित दाम मिलेगा' गरीबों के लिए बनने वाली योजना, बनती तो बहुत अच्छी है लेकिन उसका लाभ उनको नहीं मिलता है। सवाल यह उठता है कि इसका लाभ कौन पाता है ? यह बिल्कुल स्पष्ट है कि जो राजनीतिक दलाल होते हैं। उन्हीं को इन योजनाओं का लाभ मिलता है। वर्तमान में बहुत सारी सरकारी योजनायें हैं जो विशाल सभागृह मतलब (विधासभा, लोकसभा, राज्यसभा) ही हो सकता है । जो विद्धानों से भरा रहता है । वहां योजनाएं बनती हैं फिर असफल क्यों होती है ?

गरीब जनता को हमेशा छला जाता रहा है। यही हमारे देश की राजनीतिक कमी है । इसमें सुधार तभी होगा जब समाज के सभी लोग शिक्षित और राजनीतिक रूप से जागरूक होगें। कवि अगली पंक्तियों में कहता हैं कि देश कि जनता को समझना होगा की यह ढ़ोंग है कि वास्तविकता है ।

आप ही बतायें अब

कैसा यह अनूठा तंत्र

ढोंग तंत्र

[68] कँवल भारती,दलित कविता का सघर्ष,स्वराज प्रकाशन : 168

जाति तंत्र

या कहें जौंक तंत्र ?"[69]

जोंक की तरह खून चूसने वाली राजनीति के सत्य को प्रकट किया गया है जिसे समझना होगा किस प्रकार की नीति है । मलखान सिंह से साक्षात्कार के दौरान राजनीति कैसी होनी चाहिए के सन्दर्भ में पूछने पर उन्होनें बताया कि "मेरी नजर में राजनीति राज्य का एक सशक्त माध्यम है सामाजिक समानता स्थापित करने का, दलित राजनीति का लक्ष्य भी वास्तविक लोकतान्त्रिक समाज की स्थापना करना होना चाहिए, जातिविहीन, वर्ग विहीन, समाज की स्थापना, राजनीति का लक्ष्य होना चाहिए, उसी स्थिति में अम्बेडकर वादी समाज की स्थापना होगी ।"[70]

'अंधड़' इनका दूसरा काव्य संग्रह है जिसमें उन्होंने ब्राह्मणवादी राजनीतिक व्यवस्था का विरोध करते हुए कहा हैं कि यदि तुम कार्य, व्यवस्था में बाधा न बनतें तो आज लोक तंत्र का चेहरा कुछ और होता -

"वाह रे ! बेताब बादशाह

हमारी सत्ता में हिस्सेदारी पर

तुमने टांग न अडाई होती

तो आज देश के

लोकतंत्र का चेहरा

[69]कँवल भारती,दलित कविता का सघर्ष,स्वराज प्रकाशन : 41

[70] शोधार्थी द्वारा लिया गया साक्षात्कार

दूसरा होता ...[71]

कविता में सदियों से हो रहे शोषण के प्रति दुःख प्रकट किया गया है। अगर यह व्यवस्था ऐसी न होती तो आज समाज का चेहरा कुछ अलग होता हमारा जीवन दूभर न होता, 'बल्कि सभी को समान सत्ता पर अधिकार होता ।

2.4 सांस्कृतिक चेतना

संस्कृति मनुष्य के जीवन का अभिन्न अंग है। जो प्राचीन काल से चली आ रही है। जिसमें समय-समय पर परिवर्तन भी होता रहा है मनुष्य के जीवन में इसका गहरा प्रभाव रहता हैं - "संस्कृति किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र रूप का नाम है जो उस समाज को सोचने, विचारनें, कार्य करने, खाने-पीने, बोलने, नृत्य, गायन, साहित्य और कला-वस्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति का वर्तमान रूप किसी समाज के दीर्घ काल तक अपनायी गई पद्धतियों का परिणाम होता है।"[72]

मनुष्य की कुछ मूलभूत जरूरतें होती हैं जिसको वह पूरा करता है। जिसके गुणों-अवगुणों से वह प्रभावित होता रहा है, ठीक उसी प्रकार हर देश की अपनी संस्कृति होती है। जो उस देश की जनता की पहचान होती है, जिससे उस देश की जनता प्रभावित होती है - "संस्कृति वह है जिसके माध्यम से लोग परस्पर सम्प्रेषण करते है जीवन के विषय में अपनी अभिवृत्तियों और ज्ञान को विकसित करते हैं।"[73] भारतीय संस्कृति की अपनी अलग पहचान है। वह दूर से देखने में कुछ है और नजदीक से देखने में कुछ है। ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार

[71] मलखान सिंह : अंधड़, प्रकाशनाधीन
[72] http:\hi.wikipidiya.org|s|12aa
[73] http:\hi.wikipidiya.org|s|12aa

'हाथी के दांत देखने के अलग और खाने के अलग होते है यह इसलिए है कि भारतीय संस्कृति के दो रूप मिलते हैं । एक 'सवर्ण' दूसरा 'अवर्ण' (दलित) संस्कृति के रूप में।

प्रथम सवर्ण (अभिजन वादी) इस संस्कृति का निर्माता रहा है । जिसने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का मंत्र तो दिया था पर यह कुछ विशेष वर्ग तक सीमित रहा है। भारतीय हिन्दू समाज को, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्गों में बाँटा था। लेकिन इसमें से प्रथम तीन को अलग और चौथे को अलग दृष्टि से देखा गया था । कह सकते है कि चौथे वर्ग को उपेक्षित कर दिया गया था । जिसे समाज में अपमान और घृणित जीवन लम्बे समय तक जीना पड़ा । हिन्दू संस्कृति पूर्णता ब्राह्मणवादी संस्कृति है । जो मनुवादी सोच पर निर्मित हुई है । जिसमें ऐसा जाल बुना गया था कि सत्ता उन्ही के हाथ में रहे । जिसके लिए उन्होंने धर्म, जाति, मोक्ष, पुनर्जन्म आदि का रास्ता दिखाया और चौथे वर्ग को धर्म, ज्ञान, न्याय, से वंचित रखा गया ।

दलितों को शिक्षा-दीक्षा से अधिकार विहीन ही नहीं स्वाभिमान-विहीन भी बना दिया गया है । अपने हित के लिए दूसरे के जीवन को नरक बना दिया । जो न तो मंत्र सुन सकता था न गलियों में चल सकता था । ये भी भारतीय संस्कृति रही है जिससे हम इंकार नहीं कर सकते हैं । जिसमें एक पक्ष सुख-सुविधा का उपयोग करे और दूसरा पक्ष केवल अपमान घृणा भरी जिंदगी जीता रहा है । यह संस्कृति मनुवादी संस्कृति है जो मनु के बनाये नियमों पर चलती रही है । रमणिका गुप्ता ने भारतीय संस्कृति का उल्लेख इस प्रकार किया है कि "अभिजनों सवर्णों मनुवादी-संस्कृति दरअसल अपसंस्कृति है जिसने मानवता के अर्थ और मानव संवेदना का दायरा केवल कुछ जातियों तक ही रखा इनसे इतर अधिकार प्राप्त किये और बाकी समूह को अधिकार-विहीन बनाकर दासता से पशुतुल्य जीवन जीने के लिए बाध्य ही नही किया गया है प्रत्युत उसकी संवेदना को जड़ बनाकर उन्हें उसी में संतुष्ट रहना सिखाया ।"[74]

[74] रमणिका गुप्ता,दलित चेतना साहित्यतिक एवं सामाजिक सरोकार, पृ.सं. : 51

जबकि यह भी कहा जाता है कि सभी मनुष्य एक ही ईश्वर की संतान हैं। एक राजा बन सकता है राजमहलों में रह सकता है, तो दूसरा मानवीय जिंदगी भी नहीं जी सकता है। यही समाज का प्रमुख दोष रहा है "आज दलित साहित्य ने ऐसे बर्बर सोच की कायल संस्कृति की जोर शोर से खिलाफत करना शुरू कर दिया है इसलिए सामंती मानसिकता से ओत-प्रोत हिन्दी भाषी भौगोलिक क्षेत्र बौखला उठा है। दलित साहित्य के साथ-साथ दलित चेतना आन्दोलन के रूप में भी जमीन शनै: शनैःउतरी है। आरक्षण नीति के अनुसार नौकरी और उच्च शिक्षा में हिस्सेदारी भूमि का बँटवारा, न्यूनतम मजदूरी, सत्ता में भागीदारी, समाज में समानता, प्रतिष्ठा और आदर की उत्कृष्ट इच्छा और ललक आदि इन सब सवालों पर दलित और पिछडे समाज का सुधार होने लगा है।"[75] आज के समय में रुढ़ियों और अन्धविश्वासों के खिलाफ कवियों ने आक्रोश व्यक्त किया है। जिन्होनें इसको महसूस किया था कि वास्तविकता या सच्चाई कुछ और ही है। इसी प्रकार की चेतना मलखान सिंह की कविता में दिखाई देती है। जिन्होंने 'सुनो ब्राह्मण'संकलन के 'सफ़ेद हाथी' कविता में भारतीय संस्कृति का यथार्थ व्यक्त किया है –

गाँव के दक्खिन में

पोखर की पार से सटा

यह डोम पाड़ा है... ।"[76]

भारतीय समाज का वह वर्ग जो दीन हीन गुलामी की जिंदगी जीता रहा जिसके साथ पशुवत व्यवहार किया गया तथा इन जातियों को अछूत माना गया इनके लिए अक्सर गाँव से बाहर रहने की व्यवस्था रहती थी, कविताओं में ऐसे ही गाँव का वर्णन है जो दक्षिण दिशा में स्थित है। 'ड़ोमपाड़ा' से मतलब दलितों में ड़ोम जाति की बस्ती से है। जिसका जीवन उसी प्रकार है

[75] वही : 54

[76] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण,पृ.सं :12

जिस प्रकार से किसी मेढ़क का जो मात्र 'कुँए तक ही सीमित रहता है मसलन आशय है कि ये उस व्यवस्था के शिकार है जहां से निकलना मुश्किल लग रहा है । ये अन्धविश्वास छुआछूत,जातिवाद, आदि संकीर्ण विचारों से घिरे हैं ।

आगे की पंक्तियों में कवि ने गाँव के बुद्धिजीवियों और सत्ताधीन चालक लोगों के बारे में स्पष्ट किया-

कभी-कभी

ऐसा लगा है कि

गाँव के चन्द चालक लोगों ने

***

सफेद हाथी की पूँछ से

कस कर बांध दिए गये हैं ।"[77]

ब्राह्मणवादी व्यवस्था के संस्थापक की उन नीतियों को उजागर किया गया है, जिनको इस समाज में पूरी चालाकी के साथ लागू किया गया है । कवि 'सफ़ेद हाथी' को सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में रखा है जो राज सत्ता और सवर्ण सत्ता का प्रतीक है ।

पुराणों में भी 'सफ़ेद हाथी' का उल्लेख मिलता है जो इन्द्र का वाहन है । जो सबको अपना शिकार बनाने का आदी है । यह हाथी समाज का ऐसा शक्तिशाली पुरुष वर्ग का प्रतीक है जो सबको अपने गिरफ्त में लेना चाहता है । चौथीराम यादव ने 'अंधड़' संग्रह के भूमिका में लिखा है कि "हिन्दू संस्कृति और राजसत्ता के शर्मनाक गठजोर को यह कविता जिस तरह सफेद हाथी, देवालय, देवतागढ़,यमराज और देवताओं के प्रिय राजा शब्दों के प्रयोग से नंगा करती है,

[77] वही : 13

उसमें सामानता ब्राह्मणवाद और पूँजीवाद के लिए काम कर रही राजसत्ता के खिलाफ दलित कविता के संघर्ष को स्पष्ट देख सकते है ।"[78]

मलखान सिंह ने 'अंधड़'संकलन की विरासत' नामक कविता में सही मार्ग में चलने का सन्देश दिया है जो कविता में व्यक्त –

"यूं झुण्ड के झुण्ड

हाथ में ध्वज दण्ड लिए

हल्दिया वस्त्र पहने

जिस तीरथ को जा रहे हो... ।"[79]

आदिकाल से आ रही धार्मिक परम्परा का कवि ने विरोध व्यक्त किया है । 'कि आप लोगों ने उस ईश्वर के पीछे बहुत भाग लिया है पर आपको वह आजादी नहीं मिली जो चाहिए । न धर्म में, न समाज में, न राष्ट्र में, नहीं मिल रहा है उसका सबसे बड़ा कारण आँखे बंद करके पीछे भागना है । वह धर्म के पीछे भागने वालों को बता देना चाहता हैं कि जिस धर्म में आप के लिए कोई स्थान न हो, जहाँ मानव कि गरिमा तार-तार हो गई हो । जिसके दरबार में जाने से रोका जा रहा हो जिसको मूर्ति छूने से रोका जाए ।

वह मानव उसके पीछे क्यों भाग रहा है । मृत्युपरांत बाद स्वर्ग में ईश्वर के मिल जाने की कल्पना छोड़ कर, वास्तविक जीवन जिए, ऐसा समाज बनाओ जिसमें सम्पूर्ण समाज शांति पूर्वक खुशहाल जिन्दगी जिए । कवि ने रचना के माध्यम से प्राचीन भारतीय संस्कृति के सच्चाई को सामने रखा है और आगे परिवर्तन कर उज्ज्वल भविष्य की कल्पना भी की है । प्राचीन

[78] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

[79] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

भारतीय संस्कृति अंध विश्वास और पाखंड से दूर रहने की सलाह देता है। चौथीराम यादव ने अंधड़ नामक संग्रह की भूमिका में लिखा है कि "आज दलित नया इतिहास लिख रहे हैं जिसका वर्णन उन्होंने आगे किया है कि आज दलित लेखक झूठ फरेब से भरे इतिहास से सीखते हुए नया इतिहास लिखने की पहल कदमी कर रहे हैं। वह इतिहास राजाओं-महराजाओं का, देवी-देवताओं और ईश्वर का पाप-पुण्य तथा स्वर्ग-नरक के पाखण्ड़ों का नही अपना अलग इतिहास होगा, समता मूलक ऐसी अलग दुनिया होगी जिसका संचालन सूत्र किसी जनेऊधारी सूरज के हाथ में नही होगा। सामाजिक क्रांतिया ही सही लेकिन कवि नव-निर्माण के प्रति आत्म विश्वास से लवरेज है। 'नही चाहिए-2' शीर्षक कविता की कुछ पंक्तिया उलेखनीय हैं -

'गढ़ेगे नया सूरज हम। नीले आसमान में

ओढ़ेगा हमारे दुःख-दर्द। फटेहाल जो

हमारी टूटी खाट पर।

संग-संग सोयेगा। तोड़ेगा पहाड़।

जाति,धर्म,राज्य भाषा के नये राग-नये फाग।

नही आग घोलेगा।"[80]

कवि ने उन सभी परिस्थितियों को चित्रित करने की कोशिश किया है। जिससें ब्राह्मणवादी संस्कृति निर्मित हुई थी जो आज 21वीं सदी में भी जीवित है। ये सामंती लोग किस तरह से इसको लेकर चल रहे है। कँवल भारती की इस कविता में व्यक्त है :-

बस बारह तीलियों का एक चक्र

[80] मलखान सिंह,अंधड़,मूमिका,प्रकाशनाधीन

और पूरा होगा

और भारत के लोग

करोड़ों निरक्षरों नंगे-भूखों...।"[81]

आज हम आजाद भारत में जी रहें हैं पर यह सामंती व्यवस्था अभी तक खत्म नहीं हुई है |

यहाँ तो सारा जीवन भाग्य पर ही टिका है । भाग्य के सहारे जीने वालों का क्या हश्र होता है । मलखान सिंह की 'हिंसक षड़यंत्र' नामक कविता में उल्लेख करते हैं -

सुना है कि ईश्वर

रंग भरता है आत्मा में

धूप-छांव हार-जीत

* * *

हमारे हिस्से सदैव

धूप-हार आता है ।"[82]

बस इसी का शिकार होता रहा दलित वर्ग जो सिर्फ उस ईश्वर को जिसका दर्शन भी नहीं कर सकता है । लेकिन विश्वास करता रहता है कि एक दिन जरूर हमारे जीवन को बदल देगा । क्योंकि वह सभी के जीवन में रंग भरता है । लेकिन उसको यह भी सोचना पड़ेगा कि अगर धूप छाँव का निर्धारण वह करता है, तो हमारे हिस्से में सदैव धूप ही क्यों आती है, धूप से

[81] कँवल भारती,शुभकामनायें,मेरे साथी वर्ष 2002 पर कँवल भारती, दलित निर्वाचित कविताएँ : 210

[82] मलखान सिंह,अंधड़, प्रकाशनाधीन

तात्पर्य यहाँ कोई साधारण बात नहीं है बल्कि शोषण और अन्याय का बोधक है जिसका शिकार होना पड़ता है।

कँवल भारती की ये पंक्तियाँ स्पष्ट करती हैं कि-

सुन रहे हो न

नंगे- भूखे-निरक्षर समाज के जन

की तुम क्यों हो अविकसित ?" [83]

स्पष्ट है कि अपनी छवि को सुधारने के लिए मूर्खों तुम्हे स्वयं नया राग छेड़ना पड़ेगा। क्योंकि जब तक तुम स्वयं नहीं आगे बढ़ोगे तुम्हारा विकास नहीं हो सकता है। भारतीय संस्कृति की सत्यता को स्पष्ट करते हुए चौथीराम यादव ने लिखा है कि "ज्वालामुखी के मुहाने' शीर्षक कविता के माध्यम से मलखान सिंह मनुष्य विरोधी ब्राह्मणवादी दर्शन की महान झूठ 'ब्रम्हा सत्य जगत मिथ्या'का पर्दापाश करते हुए 'न मानुषत श्रेष्ठतम ही किंचित'का पुनर्पाठ प्रस्तुत किया है –

तुमने कहा। ब्रम्हा सत्यम् जगत मिथ्या। हमसे आकाश

पूजाया गया। तुमने कहा। मैंने जो कुछ भी कहा।

वही सच है। हमें अन्धा। हमें बहरा। हमे गूंगा बना

गटर में धकेल दिया। ताकि चुनौती न दे सके

[83] कँवल भारती, दलित निर्वाचित कविताएं, 211

तुम्हारी पाखंडी सत्ता को ।

दरअसल झूठ को सच सच को झूठ साबित करने वाले एड़ी-चोटी का पसीना एक करने वाले शंकराचार्य के सूत्र वाक्य 'ब्रह्म सत्यम् जगत मिथ्या' को भारतीय वेदांत में मंत्र की तरह रटा-रटाया जाता है इसी तरह सत्यम,शिवम, सुन्दरम पारम्परिक कलावादी का सौन्दर्य शास्त्र का केन्द्रीय स्वर है । ये दोनों काल्पनिक आधार पर गढ़ी हुई भाववादी अवधारणाएँ है । जिनके आधार पर दलित साहित्य का मूल्यांकन किया जा सकता दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र कलावादी सौराष्ट्र का विरोधी है और मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र से भी कुछ अलग स्वतंत्र है । फिर भी दोनों के बीच सामांजस्य के इतने बिन्दु हैं की उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती । सोचने की बात है की विभिन्न जातियों उपजातियों धर्म विश्वासों एवं संस्कृतियों में विभाजित समाज का कोई सत्य सबका सत्य कैसे हो सकता है ।"[84]

2.5 आर्थिक चेतना

अर्थ जीवन का सबसे महत्वपूर्ण घटक है । विना धन के जीवन रुपी नैया का पार होना असंभव है । समाज में सबसे मूलभूत जरूरतों को पूरा करने के लिए धन की जरूरत सबको पड़ती है । इसके विना जीवन जीना हो जाता है जिसके पास धन सम्पदा नहीं होती है वह दयनीय जीवन जीता है । ठीक इसी प्रकार का जीवन दलित समाज का रहा है । जिसनें सदियों से अभाव भरी जिंदगी जिया है । इनका सामाजिक स्तर जिस प्रकार से गिरा हुआ था, उसका सबसे बड़ा कारण आर्थाभाव है क्योंकि जीवन की जितनी मूलभूत जरूरतें हैं वह धन के अभाव में पूरी नहीं हो सकती है । दलित जीवन की स्थिति के बारे में ओमप्रकाश बाल्मीकि ने कहा है कि "दलितों का जीवन जहाँ सामाजिक उत्पीड़न, शोषण, दमन से भरा हुआ है, वहीं व्यवस्था के नाम पर लादी गयी मर्यादाएं बंधन दलित जीवन की विपत्तियाँ बनकर रहीं हैं ।

[84] मलखान सिंह,अंधड़, प्रकाशनाधीन

आर्थिक विवशताओं और विसंगतिपूर्ण स्थितियों ने दलित जीवन को नर्क बनाया है । ग्रामीण परिवेश की जातीय उत्पीड़न से पलायन कर शहरों, महानगरों की ओर आने वाले दलितों के भीतर हीनता भाव इतना गहरा होता है कि उसे कोई भुक्तभोगी ही जान सकता है ।"[85]

प्राचीन काल से जिस मान्यताओं और धारणाओं के ये शिकार हुए हैं । उसमें श्रम करने का तो अधिकार इनके पास था 'परन्तु पूँजी संचयन का अधिकार इनके पास नहीं था । सिर्फ श्रम के बाद खाने को जूठन और पीने को पोखर का पानी ही नसीब होता रहा है । मलखान सिंह ऐसे कवि हैं जिन्होनें समाज की वास्तविक सच्चाई को उजागर किया है । जिसमें समाज में आर्थिक अभाव में जी रहे लोगों की पीड़ा दिखाई पड़ती है । 'मलखान सिंह कबीर और हीरा डोम' की परम्परा के कवि हैं । जिन्होनें ने सामाजिक और आर्थिक दोनों मोर्चो पर आवाज उठाई है । जिस भाषा का तेवर हम कबीर और हीराडोम में देखते हैं वही भाव भाषा और तेवर हमें मलखान सिंह की कविताओं में भी दिखाई देता है । दलितों की समस्याएं केवल सामाजिक ही नहीं आर्थिक भी हैं । इसलिए डा. अम्बेडकर ने भी समाजवाद पर विचार दिया था । दलित साहित्य का लक्ष्य, जैसा कि प्रख्यात मराठी दलित लेखक शरण कुमार लिम्बाले ने कहा है कि "सामजिक विषमता के साथ-साथ ही आर्थिक विषमताएं भी लोगों का शोषण करतीं हैं । हाँ दलितों को सामाजिक और आर्थिक दोनों अर्थो पर संघर्ष करना होगा |"[86]

दलितों को संघर्ष तो करना ही होगा, साथ ही अपने श्रम के मूल्य को भी समझना होगा क्योंकि जब तक ये यह नहीं समझ पायेगा, तब तक उसका जीवन सुखमय नहीं होगा । मेहनत उन्होंने हमेशा से की है परन्तु उनके मेहनत की कमाई पर दूसरों का कब्ज़ा रहा है । जिसका वर्णन कवि ने 'धरती की गति' नामक कविता में किया है -

---

[85] ओम प्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, पृ.सं : 76

[86] कँवल भारती,दलित कविता का संघर्ष, पृ.सं : 223

दूसरों की मेहनत पर

कब्ज़ा जमाने वाले साँप

तुम्हारे पैर नहीं होते ।

तुम्हारी हवेली की ढहती हुई बुनियादें

यही सब तो कह रही हैं खुलके ।"[87]

स्पष्ट है की जिस प्रकार सांप अपना बिल नहीं बनाता है । वह दूसरों के बिल में रहता है और फिर उसी में कब्ज़ा जमा लेता है । ठीक उसी प्रकार मेहनत का लाभ कोई और लेता रहा है । उसको जानो और अपने अधिकार को भी जानो तभी तुम्हारा जीवन सुखमय होगा । कवि ने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को भी अपना निशाना बनाया है और कहता है कि वह अपने श्रम की रूप रेखा को पहचान चुका है । तभी तो कह रहा है । हम रात -दिन मेहनत करते हैं और हमारे पसीने से बू आती है । मेहनत का फल खाने में कोई बू नहीं आती 'सुनो ब्राह्मण' नामक कविता में श्रम के सौंदर्य का वर्णन कवि ने किया है -

सुनो ब्राह्राण

हमारे पसीने से

बू आती है तुम्हें

फिर ऐसा करो

एक दिन

[87] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण,पृ. सं :44

अपनी जनानी को

हमारी जानानी के साथ

मैला कमाने भेजो ।"[88]

इतना ही नहीं वह कहता है कि तुम मेरे साथ आओ चमड़ा पकाओं और अपने बेटे-बेटी को भी मजदूरी के लिए भेजो तभी समझोगे की श्रम मूल्य की अहमियत क्या होती है |

शाम को थक कर

पसर जाओ धरती पर

सूँघें खुद को

बेटे को

बेटी को ...|"[89]

इन पक्तियों में श्रम के सौंदर्य को स्पष्ट किया गया है। श्रम में उसको थकान और दर्द को समझने के लिए एक बार हमारे बराबर श्रम करके देखो तभी समझोगे हमारी सम्वेदनाओं को । प्रो. चौथीराम यादव ने शोषण करने वालों के बारे में इस प्रकार से कहा कि "अकर्मण्यता और उपभोक्ता संस्कृति का विकास करने वाले तथा उत्पादन-श्रम से कटे हुए ये वर्णवादी लोग श्रमिक संस्कृति का विकास करने वाले शूद्रो को छूने से परहेज करते थे लेकिन उन्होंने ऐसी कोई आचार संहिता नहीं बनाई की उच्च वर्ग के लोगों को शूद्रों द्वारा उत्पादित अन्न का सेवन नही करना चाहिए । बुद्ध ने कहा था कि बड़ा आदमी वही होता है जो उत्पादन करता है । कवि को दुःख

[88] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण,पृ. सं : 45

[89] वही : 89

यही है की उत्पादन करने वाले दलितों का शोषण करते हैं और उसके उत्पादन श्रम को गालियॉ देता है -

“कि हल की मूठ भी पकड़ना नहीं जानते हैं

कहलाते है लम्बरदार। हम पूरी उम्र। बैल बन

हांफते है। हरामखोर कहलाते हैं ।”[90]

वर्तमान समय पूंजीपतियों का युग है | इस युग में यह कल्पना की गई है कि सबको शिक्षा और रोजगार मिलेगा। 1990 में आर्थिक उदारतावाद की नीतियां लागू हुई यह माना जाने लगा कि अब देश में गरीबी समाप्त हो जायेगी और सब को सामान रूप से सुविधाओं का लाभ मिलेगा। भुखमरी, बेरोजगारी, अशिक्षा, से लड़ने के लिए हमारे पास बहुत से रास्ते हैं। ऐसी बहुत सी घोषणाएं हुई। परन्तु गरीब आदमी गरीब ही बनता जा रहा है। उसके पास ऐसा कोई साधन नही है कि वह अपनी भूख को शांत कर सके | सारा माल तो पूँजीपतियों के पास जा रहा है। जो अपना पैसा विदेशों में जमा कर रहे हैं। जिसे काला धन का नाम तो दिया गया है। परन्तु वापस लाने में सरकार कभी कामयाब नहीं हुई। अन्ना हजारे ने तो पुरजोर प्रयास किया लेकिन वह अन्ततः अपने प्रयास में असफल हो हुए क्योंकि पूँजीपतियों की जड़ इतनी मजबूत है कि वह आसानी से समाप्त होने वाली नहीं है। जिसका वर्णन ‘कैसा महाख्यान नामक’ कविता में किया गया है, कि पूँजीपतियों का सब कुछ सोने का होता है पर गरीव आदमी भूख से तड़प कर मर रहा है। इस कविता में यह उल्लेखनीय है –

“सोने का मुकुट

[90] मलखान सिंह,अंधड़, प्रकाशनाधीन

सोने की बांसुरी

सोने का बाजूबंद

सोने की करधनी ... ।"[91]

एक तरफ गरीब व्यक्ति आर्थिक अभाव के कारण भूख से व्याकुल है वहीं दूसरी तरफ पूँजीपति विलासितापूर्ण जीवन व्यतीत कर रहा है। कवि मलखान सिंह ने कविता में दिखाया है कि किस प्रकार गरीब व्यक्ति जीवन जी रहा है -

बाहर- परकोटे के बाहर नंग- धडंग

पचपन चीथड़े लपेटे बसंत

कंकालों बुढ़ापा

आँखों में भूख

हाथ में में कटोरा

झुण्ड के झुण्ड बनाये मुठ्ठी भर खिचड़ी के लिए

शीत में ठिठुर रहा है।"[92]

इस कविता को पढ़ने से अनायास ही निराला की 'भिक्षुक' कविता याद आ जाती है। एक तरफ पूंजीपतियों की शान है, तो दूसरी तरफ गरीबों को दो वक़्त की रोटी नसीब नही होती है आज गांव से लेकर शहर तक आकाश से लेकर पाताल तक उन्हीं पूंजीपतियों का राज है।

[91] मलखान सिंह,अंधड़, प्रकाशनाधीन

[92] मलखान सिंह,अंधड़, प्रकाशनाधीन

2.6 शैक्षिक चेतना

शिक्षा मनुष्य के लिए महत्वपूर्ण अंग है । जिस -प्रकार मनुष्य को भोजन पानी और हवा की जरूरत होती है ठीक उसी प्रकार शिक्षा की जरूरत होती है । शिक्षा एक ऐसी पद्धति है जो आदिकाल से चली आ रही है और इसमें निरंतर परिवर्तन भी होता रहा है । प्राचीन काल में इसकी प्रक्रिया भिन्न थी जो आश्रमों, मठों, गुरुकुलों में दी जाती थी और इसका दायरा भी कुछ खास वर्गों तक सीमित रहा । उस समय समाज को चार वर्गों में बांटा गया था ब्राह्माण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जिसमें चौथे वर्ण को वेदों, पुराणों, यहाँ तक कि मंत्रोच्चारण का अधिकार नहीं था । जिसका परिणाम यह रहा है कि इस कहर को एक लम्बी अवधी तक यह समाज झेलता रहा । या कहें की शिक्षा के अभाव में जीवन को जीनें के लिए बाध्य रहा है । कालांतर में समय बदला और सबको शिक्षा का अधिकार दिया गया । समाज के उपेक्षित वर्गों ने भी शिक्षा की वास्तविक पहचान की है - " दलित-शिक्षा का अस्त्र से सबल बन गया और उसने हिन्दू धर्म के इतिहास को नकली मानते हुए उसे ढ़ोने से इंकार कर दिया । उसने इतिहास में हुए दलितों के साथ षड्यंत्र, दूजाभाव तथा पक्षपात को देखा और उसमें आक्रोश, विद्रोह की क्रोधाग्नि प्रज्ज्वलित हो गयी तथा उसने इसका विरोध करते हुए सरेराह कहा है- “मर्यादा के नाम पर शम्बूक का वध उजागर करता है । उस व्यवस्था को घृणित चेहरे को । जिसमें दलित विकास के अवसरों को । दमनकारी सत्ता द्वारा कुचलने का रचा गया षड्यंत्र ।"[93] दलित कवि अब अज्ञानता, अंधविश्वास को अपना सबसे बड़ा शत्रु मानता है और अज्ञानता को भगाकर ज्ञान को अपनाना चाहता है । शिक्षा ही सबसे बड़ा मूल तत्व है । परन्तु भूख को शांत करने के लिए रोटी की तलाश में परेशान रहा । शिक्षा के साथ रोटी की व्यवस्था भी होनी चाहिए जिसका वर्णन कविता में किया गया है-

[93] www.pravatkta.com

"इस तथ्य को बचपन में ही

जान लिया था मैंने कि-

पढ़ने लिखने से कुजात

सुजात नहीं हो जाता...।"[94]

कविता में दो प्रकार के सवाल उठाये गये है। एक सामाजिक व्यंग्य जिसका सामना करना पड़ता है। वह व्यंग्य 'जाति' को लेकर है, कि यह अभी भी नहीं बदली लोगों की मानसिकता कितनी दूषित है कि वह जाति-पांति के भेदभाव को लेकर अभी चल रहा है। दूसरा सवाल यह है कि पेट को भरने के लिए साधन तो कुछ होना चाहिए, दलितों का जीवन आर्थिक अभाव में बीतता है, जिसके पास खाने का अभाव हो तो वह शिक्षा कैसे ग्रहण कर सकता है। सरकारी स्तर पर शिक्षित समाज के निर्माण के लिए बहुत-सी योजना तो बनायी गई है। पर वे योजनायें उतनी मददगार साबित नहीं हो पाई, जितना इससे अपेक्षा की गयी थी। फिर भी आज दलित समाज शिक्षा की तरफ अपना रुझान बढ़ा रहा है।"दलित कवि डा. बाबा साहब अम्बेड़कर के विचारों को मानने वाले हैं, उनसे प्रेरणा उनको मिलती है। अज्ञान हमारा सबसे बड़ा दुश्मन है। अतः अज्ञान को भगाकर ज्ञान को अपनाना चाहिए, दलित कवि इन्हीं विचारों की हिमायत देता है। भक्ति से बड़ा ज्ञान है, जिसे पाने के लिए पढ़ना चाहिये। शिक्षा ज्ञानी बनने और अज्ञान को भागने का बड़ा महत्वपूर्ण साधन है। अत: दलित रचनाकर कह उठता है -

भक्ति से

बड़ा ज्ञान है

[94] मलखान सिंह, ब्राह्मण : 16

अंध भक्ति से बड़ी जागृति

मंदिर नहीं चाहिए

विद्यालयों के दरवाजे खटखटाइए।

कहना सही है की शिक्षा पाने का सन्देश दलित कविता में बार-बार परिलक्षित होता है जो अम्बेड़कर के विचारों के प्रभाव स्वरुप है।"[95]

अंधभक्ति, आड़म्बर, अन्धविश्वास का चक्कर छोड़कर ज्ञान का मार्ग ही हमारे जीवन को खुशहाल और समृद्ध बना सकता है। जब शिक्षा का स्तर बढ़ेगा तभी सब कुछ सामान्य हो पायेगा। कवि मलखान सिंह 'छत की तलाश' कविता के माध्यम से यह स्पष्ट करते है कि एक समय आयेगा जब मजदूर के हाथ में स्वतंत्र सत्ता होगी -

मेहनत कश हाथ में

सब तंत्र होगा

मंच होगा

बाजुओं में।"[96]

मेहनत कश हाथ, यानी श्रमिक वर्ग और दलित समाज हमेशा से इसका शिकार रहा है। उसके हाथ में न तो तंत्र' यानि शासन-सत्ता का अधिकार रहा है और न ही मंच यानी शिक्षा व्यवस्था रही है। हमेशा से यह वर्ग इन दोनों व्यवस्था से वंचित रहा है। जिसका मुख्य कारण अशिक्षा

[95] प्रो.अर्जुन चव्हाण,दलित कवयित्री की कविता प्रवृत्ति मूलक मूल्यांकन,डॉ.मनोहर भंडारे दलित साहित्य का समग्र परिदृश्य, पृ. सं : 105

[96] मलखान सिंह,सुनो ब्राह्मण, पृ. सं : 130

था। यह समाज अगर शिक्षित होता तो अपना अधिकार प्राप्त कर लेता। आगे वह ऐसे समाज की स्थापना करना चाहते हैं। जिसमें सब लोग सामान होगे और पूरा विश्व हमारा घर होगा|

मतलब स्वतंत्रता, समानता और बन्धुत्व आदि समाज की स्थापना करेंगे। हमारा यही मूल उद्देश्य होगा। दलित रचनाकार अब क्या पढ़ना चाहिए क्या नहीं इसका भी चयन करने लगा है। जो इस प्रकार है - "दलित रचनाकार अब शिक्षा के प्रति सावधान है। लेकिन वह इस अंतर को समझने लगा है की क्या पढ़ना चाहिये क्या नहीं। संतोष और सुखद आश्चर्य की बात यह है कि दलित कवयित्री भी अब सतर्क हो गयी हैं। हमे किस तरह की रचनाये पढ़नी चाहिए और कौन-सा सबक लेना चाहिए इनका सन्देश देने में अब दलित कवयित्री भी पीछे नहीं दिखाई देती। उनकी मान्यता है कि दलित स्त्री भले ही रामायण, महाभारत पढ़े किन्तु वह न सीता बने न कैकेयी। दलित नारी को इन सबसे ज्यादा कानून की किताबें पढ़नी चाहिए, अज्ञान का अन्धकार मिटाने के लिए अन्याय और अत्याचार को ख़त्म करने के लिए बकौल रजनी तिलक का कहना है -

"तू पढ़ महाभारत

न बन कुंती,न द्रौपदी।

पढ़ रामायण

न बन सीता न कैकेयी...।"[97]

किसी भी ज्ञान को प्राप्त करने से पहले सोचनें के लिए स्पष्ट संकेत देते हुए कहा गया है कि अंधकार को मिटाने वाला ज्ञान प्राप्त करो और अपना परचम लहराओ। शिक्षा समाज को

[97] प्रो.अर्जुन चव्हाण,दलित कवयित्री की कविता प्रवित्ति मूलक मूल्यांकन,डॉ.मनोहर भंडारे दलित साहित्य का समग्र परिदृश्य,पृ. सं : 112

आईना दिखाती है । समाज में रहने-चलने और परिस्थितियों में जीना सिखाती है । वह आज आम आदमी से दूर होती जा रही है । विश्व बैंक अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष ने भारत के उच्च शिक्षा पर होने वाले व्यय को भी फिजूल खर्ची कह डाला है । वर्तमान में सबसे बड़ी समस्या यह है कि आज सभी शिक्षा पद्धति का निजीकरण होता जा रहा है । शिक्षा इतनी महंगी है कि वह आम आदमी के पहुँच से दूर होती जा रही है । शिक्षा महंगी होने के कारण दलित परिवार का विद्यार्थी, मेडिकल, इंजीनियर, व्यवसायिक, तकनीकी और औद्योगिक शिक्षा में से वंचित रह जाता है । वहां पहुंच पाना गरीब आदमी के बस में नहीं है । वहां तो सिर्फ पूंजीपतियों की पहुंच है जिस पर उनका कब्ज़ा है । मलखान सिंह की यह कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय है -

"आज

देश की शिक्षा

देश की चिकित्सा

देश के बाजार

आकाश-पाताल

धरती की कोख तक

बस उन्हीं की सत्ता चलती है ।"[98]

पूँजीपतियों की पहुँच शिक्षा, चिकित्सा, बाजार सब जगह पहुँच है । भूमंलीकरण के इस दौर में आज पूँजीपति की ओर सब की दृष्टि है । लेकिन वह अपना हित साधनें से बाज नही आ रहा है सब कुछ अपनी मर्जी से चला रहा है । इंजीनियरिंग व्यावसायिक बौर औद्योगीकरण शिक्षा सब

[98] मलखान सिंह,अंधड़, प्रकाशनाधीन

इन्हीं के इशारे पर चल रही है शिक्षा के ठगों को असंग घोष की यह कविता माकूल जवाब दे रही है । इस प्रकार 'मैं इसका माकूल जवाब दूँगा' कवि असंगघोष की यह कविता दलित साहित्य में अपना खास पहचान बना चुकी है । यह कविता अपनी प्रस्तुति में जितनी सहज, सरल और बोधगम्य है, उतनी गहन अनुभूतियों को भी अभिव्यक्त करती है । दलित के भीतर आक्रोश की यह संवेदना को बहुत दूर तक ले जाती है । दलितों को शिक्षा से दूर रखने के लिए जो षड्यंत्र रचे गए यह कविता उनके लिए जवाब है इसलिए यह दलित कविता में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाने में सफल हुई है -

"समय के साथ । इसका । मै दूंगा माकूल जवाब

मेरे जगह । पढ़ेंगे मेरे बच्चे जरूर। "[99]

आज कवि समय के साथ-साथ जवाब देना सीख गया है । वह कह रहा है कि निराशा की कोई बात नहीं है । अगर जो चूक हमसे हो गयी है । उसको हमारे बच्चे पूरा करेंगे । अगर पिछड़ी पीढ़ी नही पढ़ पायी है, तो क्या हुआ इसको हमारे आगे आने वाली पीढ़ी पूरा करेगी । वह पूरी तरह जवाब भी देगा। क्योंकि आज शिक्षा सब का जन्म सिद्ध अधिकार बन गयी है । आज वर्तमान समय में शिक्षा सबके लिए अनिवार्य बन गई है । 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य और मुक्त शिक्षा विधेयक भी आ चुका है । जिसमें बच्चों को शिक्षा मध्यान भोजन, उन्हें पहननें के लिए ड्रेस तक की सुविधायें मिल रही है |

[99] www.bbb.co.uk

नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा विधेयक, 2009 भारतीय संसद द्वारा सन 2009 में पारित शिक्षा सम्बन्धी एक विधेयक है। इस विधेयक के पास होते ही बच्चो को मुक्त और अनिवार्य शिक्षा का मौलिक अधिकार मिल गया है|

तृतीय अध्याय

अभिव्यक्ति के विविध आयाम

3.1 भाषा

भाषा व्यक्ति के भावों-विचारों के अभिव्यक्ति का माध्यम है, जिसके द्वारा व्यक्ति अपनी संवेदनाओं और अनुभूतियों अनुभवों को सम्प्रेषित करता है। दलित साहित्य की भाषा के विषय में लोगों ने ऐसा आरोप लगाया है, कि उनकी भाषा में वह सौंदर्यबोध और शिल्प विधान नही है जो मुख्य धारा के कवियों में है। ओमप्रकाश वाल्मीकि का मानना है - "हिंदी समीक्षक दलित साहित्य पर कई प्रकार से आरोप भी लगाते रहे हैं। विशेष रूप से गुणवत्ता को लेकर, भाषा को लेकर दलित साहित्य को खारिज करने वाले आलोचक हिंदी में भरे पड़े है।"[100]

दरअसल दलित साहित्य की अपनी अलग भाषा है। वह अपने अनुभव और संवेदनाओं को व्यक्त करने के लिए पूर्व परम्परागत भाषा को त्यागकर, नई भाषा, नये सौंदर्य और नये साहित्य का सृजन करती है। जो सीधे-सीधे सरल भाषा में अपनी अभिव्यक्ति करता है, और वह अपनी बोलचाल की भाषा का प्रयोग करता है। वह विवशताओं, विडंबनाओं, कुप्रथाओं, पाखंडों को दूर करने के लिए बोल चाल की भाषा का कलात्मक प्रयोग करता है।

[100] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ.सं : 80

दलित साहित्यकार समाज में हो रहे भेदभाव, उत्पीड़न, छूआछूत, दरिद्रता, भूख से पीड़ित और जीवन को प्रभावित करने वाले हर मुद्दे को अपनी भाषा में समेटने का प्रयास करते हैं और पूरी निर्भीकता के साथ सामाजिक बुराइयों, रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, मिथ्याचारों को उजागर करतें हैं । जो उनके जीवन का अनुभव रहता है । वह बिना किसी लाग-लपेट के सहज-सरल जनभाषा की शब्दावली में अभिव्यक्त करते हैं । इस सन्दर्भ में मलखान सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, मोहनदास नैमिशराय, श्यौराज सिंह बेचैन आदि अन्य दलित कवियों की भाषा उल्लेखनीय है, जो समाज के पाखंड, आडम्बर, ब्राहाणवाद, जातिवाद, विड़म्बनाओं को समाज के समक्ष प्रस्तुत करते हैं । दलित कविता के विषय में विमल थोराट का कहना है - "दलित कविता व्यक्तिगत अनुभवों से सम्पृक्त होने के साथ ही समूह-मन के अनुभवों कि अनुभूति भी है ।"[101] मलखान सिंह की भाषा में नयापन दिखाई पड़ता है वे प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि है । उन्होंने स्वयं अपनी अनुभूतियों को नई-नई भाषा में गढ़कर व्यक्त किया है । इसीलिये वे अपने भाषा में सरल से सरल और मारक शब्दों का प्रयोग करते हैं । जिससे उनकी भाषा व्यक्ति की चेतना पर सीधे असर करती है । ये अपने अनुभूतियों को सशक्त एवं सटीक रूप से पाठक तक पहुँचाना चाहते हैं । इसीलिए नए-नए शब्दों का इस्तेमाल करते हैं । 'सुनो ब्राह्मण, नया शब्द प्रयोग करके उन्होंने पाठक के मस्तिष्क पर सीधा चोट किया है जिससे पाठक के मस्तिष्क में कई प्रकार से बिम्ब बनते है और वह सोचने पर मजबूर होता है । उन्होंने ग्रामीण बोलचाल की भाषा को भी गढ़ा है । जिसका प्रयोग करते हुए समाज में लोगों के मुख से सुना जाता है ,जो बात-बात में 'मा-चो-बहन चो, कमींन कौम आदि का प्रयोग करता है, इन शब्दों का प्रयोग कवि ने कलात्मक ढंग से किया है । कहीं-कहीं इनकी कविता में मुहावरे का भी

[101] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. सं : 81

प्रयोग मिलता है, जिससे पाठक प्रभावित होतें है और जीवन कि सच्चाइयों से रूबरू भी होते हैं। मुहावरे के प्रयोग से कविता जीवन्त हो उठती है। उन्होंने अपनी पीड़ा को समाज की पीड़ा के रूप में व्यक्त किया है, जो केवल कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं है बल्कि समाज में पूरी तरह हावी है। भाषा के विषय में डॉ विजयेंद्र नारायण सिंह ने कहा है कि "भाषा वह बैरोमीटर है। जिससे कवि की अनुभूति का दबाव नापा जा सकता है। कविता के संघटन में भाषा-प्रयोग की स्थिति केंद्रीय है। अनुभूति के नाभिक तक पहुँचने का निकटतम बिंदु यही है।"[102]

उनकी भाषा से उनकी अनुभूति और अभिव्यक्ति का अनुमान लगाया जा सकता है क्योंकि कि उन्होंने जो अनुभव किया है उसी के अनुरूप भाषा के रूपों का इस्तेमाल किया है। बाबा साहब डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने जिस समाज कि कल्पना की थी। उसी सपना को शब्दों के माध्यम से शब्द-बद्ध करने का प्रयास रहा है।

दलित लेखक भोगा हुआ सच लिखता है हम इसको इस रूप से समझ सकते है - "कि दलित लेखक भोगा हुआ सच लिखता है। वह कल्पना के आकाश में नहीं उड़ता। वह रामायण महाभारत जैसा साहित्य नहीं रचता, जिसके पात्र बिना उद्देश्य लड़ते है या आत्म हत्या करते है और एक वर्ग को तो भूदेव, बनाता है, और दूसरे वर्ग को जानवरों से भी बदतर बनाता है। दलित साहित्य वह लिखता है जो सच होता है, जो उसने खुद भोगा है, खुद जिया है और पीड़ा का एहसास किया है।"[103] यह तो 'बारह आना' सत्य है कि दलित साहित्यकार अपनी भाषा में यथार्थ को प्रस्तुत करता है। इस रूप का वर्णन मलखान सिंह की 'सफ़ेद हाथी' नामक

[102] विमल थोराट,मराठी दलित कविता और हिंदी कविता में, सामाजिक और राजनितिक चेतना, पृ. सं : 13

[103] अ.ला.उ के, दलित चिंतन के विविध आयाम, पृ. सं : 9

कविता दिखाई देता है, जिसमें गांव में मद में अँधा भेड़िये का चित्रण है, जो अपने आगे किसी की नही सुनता है -

"मदांध हाथी

लदमद भाग रहा है

हमारे बदन

गाँव की कंकरीली

* * *

ज़िंदा रहने कि भीख माँग रहे हैं

गाँव तमाशा देख रहा है ।"[104]

मदांध हाथी उच्च वर्ग का प्रतीक है जो मद में अँधा है ।जिसके पास इंसानियत नाम की कोई चीज नहीं है जो सिर्फ अपना ही स्वार्थ चाहता है । हर किसी को अपना गुलाम बनाना चाहता है, बेगार कराना चाहता है और न करने पर धमकियाँ देता है, मारता है, घसीटता है लेकिन लोग केवल तमाशा समझ देख रहे है । इसी प्रकार किसी दलित कवि कि भाषा का निर्माण उसके परिवेश के अनुरूप बनता है जिसका वह उसी रूप में वर्णन करता है । जिसको इन पंक्तियों में देखा जा सकता है -

"मेरी माँ मैला कमाती थी

बाप बेगार करता था

[104] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , बोधिसत्त्व प्रकाशन : 13

और मैं मेहनताने में मिली जूठन को

इकट्ठा करता था, खाता था...|"[105]

माँ मैला ढ़ोती है भाषा का नव निर्मित शब्द है जो कविता में प्रयोग किया गया है 'मैला कामना' एक प्रकार का घृणित कार्य है या इसको सरल भाषा में गन्दगी साफ करना भी कहते हैं। परन्तु इस कार्य को करने वाले को खाने को सिर्फ जूठन रोटी मिलती है। जिसके बदले बेगार करवाया जाता रहा है। आज परिवर्तन तो आया है परन्तु उतना नहीं आया जितने की जरूरत है | कविता से स्पष्ट है की माँ की जगह पत्नी ने ले लिया है। मैं उसी समस्या का समाधान ढूँढ़ने के लिए बैठा लिख-पढ़ रहा हूँ, यही सोचकर कर कि शिक्षा से ही बदलाव आयेगा।

इस प्रकार के कार्य करने वालों को बुलाने के लिए जाति सूचक नामों का प्रयोग किया जाता रहा है। समाज जिस प्रकार से जाति सूचक शब्दों का प्रयोग करता है उसी प्रकार कविता में वर्णन किया गया है | दलित समाज में आज भी इस तरह के शब्द सुनाई देते है | जिसका उल्लेख 'आखिर कब तक' कविता में किया गया है |

खतरनाक बना देती है

ओ ! चमट्टे

ओ ! चूहड़े

धोबड़े- खटीकरे,जुलहट्टे

कुम्हटटे,नउअट्ते,लुहट्टे

[105] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , बोधिसत्त्व प्रकाशन : 16

लोधड़े कछट्टे मलहट्टे .. ।"[106]

इस तरह के शब्दों का प्रयोग लोगों द्वारा किया जाता रहा है जिसका रूप कविता में देखा गया है। ठीक इस प्रकार बहुत से शब्द दलित साहित्य में दिखायी देते हैं। जो वास्तविकता को बयान करते है। इसलिए कहा भी जाता है की दलित साहित्य की भाषा सिर्फ नकार और विद्रोह की भाषा ही नहीं है बल्कि परिवर्तन की छटपटाहट और अंतरसम्बन्धों की ऊर्जा अपने भीतर संजोये हुए है वह अपने दु:खद स्थितियों पर संताप व्यक्त करता है।

"ओ, मेरे अज्ञात अनाम पुरखों

तुम्हारे मूक शब्द जल रहे है

दहकती राख की तरह

राख: जो लगातार कप रही है... ।"[107]

दलित साहित्यकारों ने शब्दों की भाषा गढ़ना सीख लिया है। अब वह किसी भी प्रकार की बुराइयों का विरोध करना सीख गया है। अब उसके हाथ में कलम आ गयी है जिसके माध्यम से वह गंदगी को साफ कर डालना चाहता है -मोहनदास नैमिशराय की कविता 'झाड़ू और कलम है' उल्लेखनीय है|

"कल मेरे हाथ में झाड़ू था

आज कलम

[106] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

[107] ओमप्रकाश वाल्मीकि, बस बहुत हो चुका, पृ. सं : 83-84

कल झाड़ू से मै तुम्हारी गंदगी हटाता था

आज कलम से

मै तुम्हारे भीतर की गंदगी धोऊंगा... ।"[108]

आज दलित कवि के पास कलम है, अपना शब्द है । वह अब किसी भी प्रकार का अन्याय और शोषण को निर्भीकता के साथ चुनौती देता है । कवि कहता है मैं जिस गंदगी का भुक्तभोगी रहा वह अब आगे साफ सुन्दर निर्मल रहेगी । मलखान सिंह ने भी भाषा के माध्यम से किस प्रकार श्रम के सौंदर्य का वर्णन किया है कि अगर तुम्हे हमारे कामों से घृणा आती है तो फिर ऐसा करो एक दिन हमारे साथ ही आ जाओ सब मालूम चल जायेगा कि क्यों हमारे पसीने से बू आती है । क्योंकि एक गरीब आदमी दिन भर खेतों, खलियानों, मकानों, कारखानो में काम करता है । उसका जीवन देख कर नाक भौ सिकोड़नें वालों सिर्फ उनके साथ कुछ दिन साथ व्यतीत करो सब कुछ समझ जाओगे | जिसका स्पष्ट वर्णन कविता में देखा जा सकता

है जो प्रकार है -

सुनो ब्राह्माण

हमारे पसीने से

बू आती है तुम्हें

फिर ऐसा करो

एक दिन

[108] मोहनदाश नैमीशराय, झाड़ू और कलम, दलित निर्वाचित कविताएं,कँवल भारती, पृ.सं : 111

अपनी जनानी को

हमारी जनानी के साथ

मैला कमाने भेजो ।"[109]

उनकी भाषा में स्पष्ट है कि जो बिना किसी लाग-लपेट के सीधा और सपाट शब्दों में कह देने का साहस है । यह सब उनकी भाषा का ही कमाल है कि सारी बातों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं । कोई भी 'सुनो ब्राह्माण' जैसा शब्द सुनने के बाद प्रभावित होता है । यह उनकी भाषा की विशेषता है जो पाठक को पढ़ने के लिए तैयार करती है ।

3.2 शैली

शैली एक प्रकार की रचना पद्धति है जो किसी भी रचनाकार में अनुभव और ज्ञान के आधार पर निर्मित होती है । शैली विचार प्रधान होती है । जो किसी भी रचनाकार के विचारों द्वारा भिन्न- भिन्न तरीके से सृजित की जाती है । सेमूर चैटमैन द्वारा शैली का अर्थ चार कोटियों में निर्धारित किया गया है ।

"1.शैली का अर्थ उत्तम लेखन है । 'शैली' शब्द यहाँ रचनाकार द्वारा किये गए शब्दों के चयन और उसके व्यवस्थापन के आह्लाद को निर्दृष्टि करता है ।

2.आशंसात्मक न होकर वस्तुनिष्ट रूप में विभेदता को जाहिर करता है । जिस प्रकार शरीर मुख -मंडल और व्यक्तित्व की दृष्टि से प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग होता है । 'शैली' का यह अर्थ शुद्ध वर्णात्मक अर्थ कहलाता है । शैली के इस अर्थ में जीवन की सारी सक्रियताओं और कलाओं को

[109] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , बोधिसत्त्व प्रकाशन : 45

सामान्यीकृत कर दिया है । इसलिए प्राय: भोजन पकाने की शैली, चित्रकला की शैली, घुड़सवारी की शैली, तैरने में गोता लगाने की शैली आदि की बाते की जाती हैं ।

3.शैली वैचारिक तत्व या कथ्य तत्व की अपेक्षा अभिव्यंजना का संवहन करती है।

4.वास्तव में शालीनता का शाब्दिक प्रक्षेपण है, जिसे एक और सामाजिक स्थिति प्रस्तुत और व्यवस्थित करती है दूसरी ओर श्रोता नियत निर्धारित करता है । इसी अर्थ में हम औपचारिक-अनौपचारिक शैली का प्रयोग करते हैं ।"[110]

भाषा और शैली की दृष्टि से मलखान सिंह की कविता अत्यंत उच्च कोटि की है । जो उनके विचारों-जीवन अनुभवों, आत्म संघर्षों से निर्मित हुई है । जिसके निरूपण में भाषा-शैली का रूप बड़ा ही गंभीर और सशक्त मिलता है । उसकी कविता की भाषा शैली सम्बन्धी प्रमुख विशेषताओं को निम्न में देख जा सकता है ।

1. भावात्मक शैली 2. संवादात्मक शैली 3. व्यंग्यात्मक शैली 4. समास शैली

भावात्मक शैली- भावात्मक शैली उनके व्यक्तित्व की स्पष्टता का बोधगम्य कराती है, जो उसके जीवन के अनुभव जनित यथार्थ को प्रकट करती है । उनकी भाषा-शैली चिंतन पद्धति, बौद्धिकता और आत्म संघर्ष की प्रक्रिया से निर्मित है । भावनाओं का यथार्थ रूप 'मै आदमी नही हूँ ' नामक कविता में दृष्टव्य है-

"मै आदमी नही हूँ स्साब

जानवर हूँ

[110] पाण्डेय शशिभूषण 'शीताशु' शैली और शैली विश्लेषण,वाणी प्रकाशन,दरियागंज नयी दिल्ली : 23-24

दो पाया जानवर

जिसकी पीठ नंगी है ।"[111]

2. संवादात्मक शैली - कवि ने कविता संग्रह में संवादात्मक शैली का भी प्रयोग किया है । जो उनके कई कविता में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है |

"फिर ऐसा करो

एक दिन

अपनी जनानी को

हमारी जनानी के साथ

मैला कमाने भेजो ।" [112]

वर्णित कविता में ऐसा प्रतीत हो रहा है कि कवि किसी और से बात कर रहा है, और अपने साथ चलने के लिए कह रहा है । जिससे की दलित समुदाय की वास्तविकता को समझ पाओगे । ठीक ऐसे ही अन्य कविताओं में भी देखा जा सकता है जो इस प्रकार है -

"तुम अक्सर कहते हो कि

आत्मा कुआँ है

जुड़ी है जो मूल सी

फिर निश्चय ही हमारी घृणा...।"[113]

[111] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , बोधिसत्त्व प्रकाशन : 7

[112] वही : 45

कवि का यह संवादात्मक रूप समाज के लोगों और बुद्धिजीवियों से हो रहा है जिसमें कोई एक व्यक्ति नही है बल्कि पूरे समाज को इस दायरे में रखा गया है |

3. व्यंग्यात्मक शैली - कविताओं में व्यंग्यात्मक शैली का भी प्रयोग हुआ है, समाज में हो रहे मिथ्या आडम्बर, पाखंड, अंधभक्ति और राजनीतिक विसंगतियों को बड़े तीखे शब्दों में व्यंग्य किया गया है जिसका वर्णन अंधड़ संग्रह की 'हिंसक षड़यंत्र' कविता में किया गया है -

"हम रोज गंगा नहाये

चरणामृत पिये रोज

नरक के दरवाजे हमारी

चौखट से जाते है

वे हर गली

हर सड़क

हर चौराहा पर... ।"[114]

पाखंड और अन्धविश्वास का व्यंग्यात्मक शैली में वर्णन किया गया है, कि हम रोज चरणामृत पीते हैं गंगाजल से नहाते हैं फिर भी हम नरक ही जाते हैं। लेकिन पाखंडी लोगों की सेवा में स्वयं धर्मराज आते हैं। इसी प्रकार कुछ कविताएं राजनीति पर भी व्यंग्य करती है जो इस प्रकार है -

"दैनन्दिनी अस्तबल की

---

[113] वही : 47

[114] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

साफ-साफ कहती है

की घोड़ा दूध पीता है

की घोड़ा भात खाता है

की घोड़ों के विकास पर पैसा

पानी सा बहाया जाता है ।"[115]

घोडा सत्ता पर बैठा हुआ पुष्ट राजनीतिक है । जो हमेशा अपना स्वार्थ चाहता है, जिसको सम्पूर्ण सुविधाओं का लाभ चाहिए ।

4 .समास शैली - मलखान सिंह की कविता में समास शैली का भी प्रयोग मिलता है । समास शैली वह होती है जिसमें कम शब्दों में अपनी बातों को कहा जाता है । कम शब्दों में अधिक भाव व्यक्त करने के लिए भाषा की समास शैली का प्रयोग मलखान सिंह ने बड़ी चतुराई के साथ किया है । वे अपनी बातों को कम शब्दों में ही कहते है जो उनकी खास विशेषता है | समाज में व्याप्त सदियों के वास्तविक सत्य को सिर्फ कुछ पंक्तियों में व्यक्त करने की उनकी शैली अद्‌भुत है । जिसको 'सुनो ब्राह्मण' की कुछ पंक्तियों में समास शैली देखा जा सकता है ।

"हमारी दासता का सफर

तुम्हारे जन्म से शुरू होता है

और इसका अंत भी

तुम्हारे अंत के साथ होगा |"[116]

[115] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , पृ. सं : 44

3.3 बिम्ब

बिम्ब को काव्य का सबसे महत्वपूर्ण अंग माना जाता है । जिसके प्रयोग से रचनाकार का सृजन विधान स्पष्ट होता है । बिम्ब का प्रयोग रचनाकार के परिवेश क्षमता और ज्ञान की शक्ति कर्म पर निर्भर होता है ।दलित कविता में यह उनके पीड़ा और आक्रोश को अभिव्यक्त करने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक है । इसकी महता के विषय में केदारनाथ सिंह का मानना है ।"प्राचीन काव्य में जो स्थान चरित्र का था आज कविता में वही स्थान बिम्ब अथवा इमेज का है |"[117]

जब मनुष्य कोई भी वस्तु देखता है । सुनता है, भोगता है और समय पाकर उस संवेदना को व्यक्त करता है, तो वह विम्बात्मक अवस्था होती है । "दलित कविता में बिम्ब दलित जीवन की त्रासदी और उसके यथार्थ को व्यक्त करते हैं दलित कविता में अँधेरा, आस पास के परिवेश गन्दगी की सड़ाँध, सीलन भरे तंग मकानों में सिसकती जिंदगी दलित जीवन के यथार्थ हैं जो उसके जीवन की अविभाज्य घटक बन गए हैं । उन वस्तुओं को दृश्य बिम्ब के स्थान पर रखकर दलित कवि इन्हीं वस्तुओं में अपने जीवन के प्रतिबिम्ब ढूँढ़ता है ।"[118] मलखान सिंह की कविता में भी जीवन यथार्थ का बिम्ब बनता है । इनके बिम्ब की प्रमुख विशेषता यह है कि उनके पीछे कोई न कोई घटना या ऐसा प्रसंग रहा है, जिसे इन्होनें लम्बे समय तक महसूस किया, समझा और उसकी पीड़ा स्वत: भोगा और अपनी आँखों से निरंतर देखते रहे हैं, आगे चलकर कविता के रूप में प्रस्फुटित हुआ है । इसलिए बिम्बों के यथार्थ को समझने के लिए उनकी घटनाओं, मर्मों, वेदनाओं को समझना अति आवश्यक है ।

---

[116] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , पृ. सं : 45

[117] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. सं : 85

[118] ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र,राधाकृष्ण, पृ. सं : 85

उन्होंने भारतीय कथा का बिम्ब 'सफ़ेद हाथी' नामक कविता में स्पष्ट रूप से वर्णन किया है । ऐसा कथा बिम्ब दलित कविता में कभी नहीं हुआ । कविता में दृष्टव्य है -

गांव के दक्खिन में

पोखर की पार से सटा

यह डोम पाड़ा है-

जो दूर से देखने में

ठेठ मेढ़क सा लगता है

और अंदर घुसते ही

सूअर की खुड़रो में बदल जाता है ।"[119]

'पूस के एक दिन' नामक कविता में भारतीय ग्रामीण जीवन का बिम्ब देखने को मिलता है जिसमें उन्होंनें मूछों को माध्यम बनाया है, कि सामंतवादी व्यवस्था का असर किस प्रकार से हावी रहा है । कविता उल्लेखनीय है -

"सामने आलाव पर

मेरे लोग देह सेक रहे हैं ।

पास ही घुटनो तक कोट

हाथ में छड़ी

मूंछे बतिया रही हैं...।"[120]

[119] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , पृ: सं : 12

सामंतवाद का चरित्र स्पष्ट रूप से कविताओं में दिख रहा है । यहाँ पर अलाव, मूंछ, छड़ी, कोट आदि का बिम्ब उपस्थित है । ऐसे ही ठीक ओमप्रकाश वाल्मीकि जी कविता में देखा जा सकता है । जहां बिम्ब के रूप इस प्रकार है झाड़ू, गंदगी,बाल्टी कनस्तर आदि को देखकर एक इस बिम्ब बनता है, जो आदि काल से चला आ रहा है । उसके खिलाफ आक्रोश के रूप में जो कविता में दृष्टव्य है-

"जब भी देखता हूँ मैं

झाड़ू या गन्दगी से भरी बाल्टी कनस्तर

किसी हाथ में

मेरी रगों में

दहकने लगते है... ।"[121]

दलित कवियों ने अपने अंदर की वेदना को बिम्बों के माध्यम से प्रस्तुत किया है । वह अपने उपयोगिता के अनुसार नए-नए बिम्बों को गढ़ता है, और पुराने परम्परागत बिम्बों से बचता है । बिम्ब की दृष्टि से मलखान सिंह की कई कविताएं महत्वपूर्ण हैं, जिसमें, एक नया ताड़ वृक्ष, सुनो ब्राह्राण, 'आखिरी जंग, 'धरती की गति' और मैं निराश नही हूँ मित्र कविताएँ सबसे महत्वपूर्ण है । 'एक नया ताड़ वृक्ष में पूरा दलित आंदोलन मौजूद है, न केवल डॉ. अम्बेडकर का बल्कि स्वामी अछूतानन्द का आंदोलन भी । स्वामी जी के अनुसार आर्य चरवाहे के रूप में भारत में आये थे और बाद में यही बस गए । उन्होंने मूलनिवासियों के विरोध को छल-बल और

---

[120] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , पृ. सं : 19

[121] ओमप्रकाश वाल्मीकि, बस्स बहुत हो चुका, पृ. सं : 79

शास्त्र-बल से कुचला और उनके सारे संसाधनों पर कब्ज़ा कर उन्हें दास बना लिया यही बिम्ब हमें इस कविता में मिलता है। यथा -

“निबिड़ एकांत में । पर्वत पुत्र

सुधड़ ऊँचाईयों को याद करता है

सागर पुत्र अटल गहराईयों को,

और हम, उस पाखंडी । चरवाहे को याद करते है

जिसने चरैती छोड़ । जीवन का हर सुख

सूत के धागों में बांध दिया था

बगल में लटका लिया था |”[122]

कविता में बिम्ब के रूप में सागर, चरवाहे, चरैती, सूत, अग्नि, नदियों, पर्वत-पातल, सड़ियल कुत्ते, हवाओं, पेड़ पौधे आदि रूपों का प्रयोग होता है ।

कवि की एक अन्य कविता 'फटी बंडी' बिम्ब की दृष्टि से महत्पूर्ण है । 'फटी बंडी' गांव के गरीब, भूखे, लचारों की पहचान बनी हुई है । ऐसी पहचान जो सदा 'जाति' के रूप में उसके साथ ही रहती । जो सिर्फ गांव तक सीमित नहीं है, बल्कि गांव से निकलकर जाने पर भी वह बाजार, कारखाने, सभागार तक पीछा नहीं छोड़ती है । जो इन पक्तियों में दृष्टव्य है -

“मै खेत- खलिहान

[122] कँवल भारती, दलित कविता का संघर्ष, पृ.सं : 216

बाजार में हूँ

बंडी मेरे कंधों में है।

मै कल-कारखानों

सभागार में हूँ

बंडी मेरे कंधों में है।"[123]

यह हर समय साथ-साथ रहती है। ऐसा लगता है कि बंड़ी देखते ही हजारों वर्ष पुरानी परम्परा का बिम्ब बनता है। दलित कविता में समाज के यथार्थ का वर्णन करने के लिए बिम्बों का भरपूर प्रयोग साहित्यकारों द्वारा किया गया है। दलित कविता इस रूप को मोहनदास नैमिशराय ने इस रूप में वर्णन किया कि दलित कविता में राजनीतिक बिम्ब भी गहरे सरोकारों से जुड़े हैं। राजनीतिक प्रपंच भय उत्पन्न करते हैं।

मलखान सिंह विद्रोही और अग्नेय शब्दों से नया बिम्ब गढ़ते है। जो सीधा सूरज को बदलना चाहते हैं क्योंकि वह सृष्टि को रोशनी प्रदान करने वाला हैं। उनका मानना है की ऐसा समाज का निर्माण होना चहिये कि जिसमें जाति, धर्म, और भाषा के आधार पर किसी प्रकार का भेद न हो, बल्कि सब साथ- साथ चले। प्रो.चौथीराम यादव ने मलखान सिंह की कविताओं में बिम्ब को इस प्रकार देखा है। कि - "मलखान सिंह की अधिकांश कवितायें दलित विमर्श के सूत्रों से संचालित है और दलित मन से लिखी गई ऐसी जनवादी कवितायें है जो शोषक और शोषित के 'कंटास्ट' में महलों के बरक्स झोपड़ी के दुःख-दर्द का ब्यान दर्ज करती है। गरीबी और फटेहाली के इन चित्रों में नए बिम्बों का सर्जानात्मक उपयोग किया गया है जो दलित जीवन का आख्यान प्रस्तुत करता है। इस संग्रह में कैसा महाख्यान ऐसी ही लम्बी कविता है जिसमें तो एक ओर

[123] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण , बोधिसत्त्व, पृ.सं : 20

राजा राजधानी में शीतोत्सव मानते हुए रंगरेलियाँ मना रहा है । और दूसरी ओर गांव में हमारी बूढ़ी माँ । जर्जर शरीर । जर्जर वस्त्र । खुले आसमान तले

उपले पाथ रही है । जीवन दे रही है मुर्दे को थप -थप,

थुप-थुप का स्वर । सन्नाटा तोड़ रहा है । कोड़े बरसा रहा है

बर्फीली हवा । हाथ सुन्न । पांव सुन्न । देह

बेर-सी कंप कंपा रही है ।"[124]

दलित कवियों में बिम्बों का अपना स्वाभाविक आधार नहीं है, बल्कि वह उनकी सम्वेदना को व्यक्त करने का साधन है । वह प्रतिदिन जिन वस्तुओं का प्रयोग करता है , उन्हीं वस्तुओं के विरोध का माध्यम बनाता है जो उसकी सृजनात्मकता का अनोखा काव्य-कौशल है । दलित कवियों की यही प्रमुख विशेषता है ।

3.4 प्रतीक

कविता में प्रतीकों का प्रयोग वहां किया जाता है जहां अपनी बातों को सामान्य रूप से अभिव्यक्ति करना सम्भव न हो । प्रतीकों के प्रयोग से अभिव्यक्ति की स्पष्टता और युगबोध में सहायता मिलती है । कबीर दास ने भी कविता में प्रतीकों का भरपूर प्रयोग किया है और 'मुक्तिबोध' की कविता 'ब्रहाराक्षस' प्रतीक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है | मलखान सिंह की कविता में वेदना एवं अनुभूति की प्रधानता है । उन्होंने अपने अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए प्रतीकों का सहारा लिया है । प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग इन्होंने अपने समय और सुविधा अनुसार

[124] मलखान सिंह, अंधड़,भूमिका,प्रकाशनाधीन

किया है । प्रतीक के रूप में गरीबों, मजदूरों के द्वारा श्रम में उपयोग किया जाने वाला 'औजार' और उनके बेबसी, मजबूरी, जीवन संघर्ष की दास्तान प्रस्तुत किया है -

"कंधों पर

मैला है

गट्ठर है

मवेशी का ठठ्ठर है / हाथो में ... ।"[125]

ये औजार उनके श्रम सौंदर्य से जुड़े हैं, जिसका वह प्रयोग करतें हैं । मैला [गंदगी] ढ़ोना हो या किसी मकान कारखाने या अन्य जगहों में अपना औजार लिए मिल जाते हैं । इतना ही नहीं अगली पंक्तियों में

"बगल में

मूंज है मुगरी है

तसला है- खुरपी है

छैनी है - हथौड़ी है ...|"[126]

प्रतीकों को आधार बनाकर समाज का वास्तविक यथार्थ रूप को प्रस्तुत किया है, जहां दलित जीवन के मजदूर वर्ग का जीवन कितना कठिनाइयों में बीतता है | ये लोग श्रम करते हैं परन्तु शोषण, उत्पीड़न का शिकार रहे हैं | इनके सामने लाचारी, बेकारी, दरिद्रता, गंदगी, भूख से

[125] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण,पृ.सं : 7

[126] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, पृ. सं : 7

छटपटाहट अभी भी मौदूत है |

“दलित साहित्य के प्रतीक भिन्न है जो यथार्थ के कोख से उपजे हैं | ये प्रतीक इनके दैनिक कार्य से जुड़े हैं | वे नफीस और नाजुक नहीं बल्कि खुरदुरे और मैले कुचैले हैं | भौड़े है पर मजबूत हैं | वे नए पुराने टूटे फूटे सामान टेढ़े मुड़े टुडे होते है और उनकी दशा और अकिंचनता के प्रतीक होते हैं | वे कल्पना के रंगीनियां लिए हुए नही बल्कि तथ्यों, तार्किक निष्कर्षो तथा सत्य से पैदा होते हैं | झाड़ू, टोकरी, खपची, चमड़ा, जूता, सिलाई करने वाला सूआ, चमड़ा छीलने वाला छुरा या अन्य औजारों अथवा यन्त्र आदि सब उनके दैनिक कार्यो से जुड़े है, उनके अपने पुश्तैनी वाद्यंत्र भी उनके प्रतीक हैं ।”[127] मलखान सिंह की कविता में आदमखोर भेड़िया, सूअर, सांप, रखैल, मुफतखोर, सांडों, सियारो, जोंक आदि प्रतीक का प्रयोग हुआ है । एक पूरी उम्र नामक कविता उल्लेखनीय है -

“यकीन मानिये

इस आदमखोर गांव में

मुझे डर लगता है

बहुत डर लगता है ।”[128]

आदमखोर अस्मिता को नष्ट करने वाला प्रतीक है । गांव में उसका वर्चस्व कायम है । इसलिए एक सामान्य मनुष्य को वहां रहने से डर लगता है । वह इतना भयभीत है कि बिना कोई अपराध किये ही फंसाये जाने का भय उसे सता रहा है । ‘भूख’ नामक कविता में हिन्दू संस्कृति

[127] दलित हस्तक्षेप,रमणिका गुप्ता, ओमप्रकाश वाल्मीकि, पृ.सं: 21

[128] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण,बोधिसत्व : 11

में पूजनीय 'तुलसी' के पेड़ को प्रतीक के रूप में रखा गया है जो कविता में दृष्टव्य है -

"भूख ! हमारी बस्ती में जो

तुलसी का विरवा है

उसे उखाड़

झाड़ू बनाने की बात ... ।"[129]

दलित समाज की यह 'भूख' सामान्य भूख नहीं है, बल्कि जो अनंत काल से समाज में अन्धविश्वास, जातिवाद और छूआछूत चला आ रहा है । उसे मिटाकर स्वतंत्रता, समानता, बंधुता का निर्माण करना ही उनकी भूख है । वह जानता है कि 'तुलसी का वृक्ष' प्रमुख जड़ है अत: इसे उखाड फेंक देना चाहिए क्योंकि इसी ने हमे पशुवत जीवन जीने के लिए बाध्य किया है और हमारी मजाक उड़ाता रहा है ।

और इसी क्रम में श्यौराज सिंह बेचैन की कविता का वर्णन किया जा सकता है जो प्रतीक की दृष्टि से महत्वपूर्ण है -

"आदि कविता

क्रौंच का वध

देखकर पैदा हुई थी

मै परन्तु

आदि कवि के वंशजों में नही हूँ

[129] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण,बोधिसत्व : 24

वाल्मीकि

मैं नहीं हूँ ।

क्रौंच हूँ मै... ।"[130]

माना जाता है कि आदि कविता की उत्पत्ति 'क्रौंच' के वध को देखकर हुई थी। परन्तु यहां पर क्रौंच स्वयं भारतीय समाज के तिरस्कृत दलित वर्ग का प्रतीक है जो ब्राह्मणवादी व्यवस्था का शिकार हुआ है वह आज मूकहीन,जातीय हीनता बोध में मानव समुदाय का प्रतीक है। मलखान सिंह ने कविताओं में विभिन्न प्रतीकों का प्रयोग किया है। उन्होंने प्रतीक के माध्यम से पूंजीपाति, शिक्षा, चिकित्सा, आदि का वर्णन भी किया है और इतना ही नही उन्होंने सामंतवाद, ब्राह्मणवाद का भी चित्रण किया है ।

प्रो.चौथीराम उनकी कविता में बिम्ब का इस प्रकार से वर्णन करते हैं- "वर्ण व्यवस्था सामंतवाद का प्रमुख स्तम्भ है जो ब्राह्मणवाद को सुदृढ़ बनाता है। यह ब्राह्मणवादी व्यवस्था आम आदमी का शोषण करने के लिए आदमखोर भेड़िये पैदा करती आई है। 'विरासत' कविता में इसी प्रकार के भेड़ियों के प्रति आक्रोश व्यक्त किया गया है तो शोषितो के प्रति हमदर्दी है। एक सीमा के बाद जब शोषण उत्पीड़न और अन्याय असहज हो जाता है, तो व्यक्ति सीधी कारवाही करने को मजबूर हो जाता है।

पेट का दर्द जब। पीठ को रूलाता है। बेहद मौसम

हमारी अस्मिता को। गांव की गलियों में।

नंगा घूमता है तब। आँखों में चुभती है विरासत

[130] कँवल भारती, दलित निवाचित कविताएँ पृ. सं : 91

सामने मस्करी करते भेड़िये की गर्दन पकड़ने को

हाथ मचल मचल जाता है।

हिन्दी की प्रगतिशील कविता में हर तरह का शोषण करने वाली शक्तियों के लिए आदमखोर, भेड़ियां और सांप आदि प्रतीकों का प्रयोग करना आम बात है और मलखान सिंह ने अपनी कविता में बार-बार इसका प्रयोग करते हैं।"[131]

उन्होंने कविताओं में सामंती लोगों के चरित्र का वर्णन किया है जो 'सुनो ब्राह्मण' में वशिष्ट (सतयुग) और द्रोणाचार्य (महाभारत) काल के प्रतीक हैं | पंक्तियों में इन्हीं प्रतीकों का प्रयोग कर उन्होंने भरतीय संस्कृति का उल्लेख किया है। किस प्रकार से सामंती चरित्र गढ़े गए है, ऊँच -नीच, भूत-भभूत, मंत्र- तंत्र से दलितों के जीवन को नरक बना दिया गया है | उन्होंने उन आस्थाओं का बहिष्कार किया है अगर वह उसे अच्छा मार्ग नहीं देखाते है तो फिर वह व्यर्थ है | कविता-

"तो सुनो वशिष्ट

द्रोणाचार्य तुम भी सुनों

हम घृणा करते हैं

तुम्हारे अतीत

तुम्हारी आस्थाओं पर थूकते है।"[132]

अब हम उन आस्थाओं, विचारों संस्कारो में घृणा करते है हमें नहीं चाहिए मंत्र-तंत्र जिसने

[131] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशनाधीन

[132] मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण,बोधिसत्व : 48

हमारा जीवन अंधकार मय बना दिया है ।

उन्होंने 'शिव' के पूज्य प्रतीकों में दलित विचारोत्तेजक बिम्ब प्रस्तुत किया है । वह शिवलिंग में एकलव्य का कटा अगूंठा और 'अर्धकुम्भाकर योनी' पर विखरी पखुड़ियों में बलात्कार की शिकार रोती बिलखती स्त्रियों के छीने गए सपनों को देखता है |

यथा-

"हम जब भी

तेरे कदमों में सर रखने की सोचते हैं

तेरा धरती में गड़ा स्थूल लिंग

अग्रज एकलव्य का कटा अंगूंठा... ।"[133]

इसी प्रकार उन्होंने प्रतीक के माध्यम से समाज के बहुत से गंभीर मुद्दों को समेटने का प्रयास किया है और बुराइयों को दूर कर अम्बेडकरवादी समाज की स्थपना करने का सन्देश कविताएं देती हैं ।

3.5 मिथक

मिथक का प्रयोग मानव आदिम युग से कर रहा है । आदिम युग में मनुष्य प्रकृति के बीच रहता था और प्रकृति कभी-कभी विकराल रूप धारण कर लेती थी । तो मनुष्य भयभीत हो जाता था । तभी भय से बचने के लिए वह 'मिथक' का निर्माण करता था । 'मिथ' जैसा की इसके नाम से स्पष्ट है- इसमें सत्य नहीं होता है । यूरोपीय भाषाओं में इसका सत्य के विपरीतार्थक

[133] मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशाधीन

शब्द के रूप में भी प्रयोग होता है। किन्तु यह निम्न जातियों के द्वारा कहा - सुना जाता है उसमें यह सत्य माना जाता है।

किम्वाँल यंग ने मिथक के विषय में लिखा है की "मिथ और आख्यान विश्वास करने वाले व्यक्तियों द्वारा सत्य माने जाते हैं। हम अपने मिथों और आख्यानों को मनोरंजन के लिए गढ़ी गई विचित्र या विदेशी कथाएँ नहीं, वरन वास्तविक घटनाओं और अभिप्रायों का विवरण मानते हैं। यह स्पष्ट है कि असंस्कृति जातियों के मिथ और आख्यान हमारे लिए मुख्यत: इसलिए अर्थ नहीं रखते की वे हमारी संस्कृति से बाहर पड़ते है |"[134]

दलित कवियों ने भी मिथक का प्रयोग किया है, लेकिन उस रूप में नहीं जिस रूप में मिथकों का निर्माण किया गया है। दलित कवि ने मिथक का प्रयोग उन पौराणिक मिथकों के आधार बनाकर अपनी संवेदना को व्यक्त करने के रूप में किया है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने इस प्रकार उल्लेख किया है - "दलित कवियों ने भी ऐतिहासिक, पौराणिक, मिथकों के द्धारा दलित जीवन की विसंगतियों और सामाजिक सन्दर्भो की वास्तविकता को रेखांकित किया है। कारण एकलव्य, शम्बूक, सीता दलितों की जिजीविषा और विद्रोह के प्रतीक बन गए हैं। रामायण और महाभारत के अनेक मिथकों के द्धारा दलित जीवन की दाहक स्थितियों को उभरा गया है। दलित रचनाओं में मिथक कथाएं, जातक कथाएँ दलित जीवन की पीड़ाओं का चित्रण करती हैं। उनके विद्रोह, विक्षोम, भावनाओं, अस्मिता की तलाश, अस्तित्व के लिए जूझते सरोकार को रेखांकित करती है |"[135]

[134] डॉ. गुरदीप रानी,मिथक सिंद्धात और स्वरुप,वुकमार्क,दिल्ली : 23:29

[135] ओमप्रकाश बाल्मीकि,दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, पृ. सं : 88

समकालीन दलित कवियों ने मिथकों का भरपूर प्रयोग किया है, जिनमें प्रमुख कवियों में मलखान सिंह, ओमप्रकाश वाल्मीकि, जयप्रकाश कर्दम, श्यौराज सिंह बेचैन, कँवल भारती, मोहनदास नैमिशराय आदि। मलखान सिंह की यह कविता विशेष रूप से उल्लेखनीय है -

" देखो

बंद किले से बाहर

झांक कर तो देखो

बरफ़ पिघल रही है।

बछेड़े मार रहे है फूर्रा...।" [136]

उन्होंने ऐतिहासिक पात्रों का प्रयोग कर समाज के सामने सच को प्रस्तुत किया है। एकलव्य जिसके साथ छल किया गया। वह उस छले जाने के बाद से बदल चुका है और चुनौती दे रहा है कि बंद किलों से बाहर निकलकर झांको आज सब कुछ बदल गया है। एकलव्य पुराने जंग लगे तीरों को आग में तपा नहीं रहा बल्कि ब्राह्मणवाद को बढ़ावा देने वाले शास्त्रों को आग के हवाले कर रहा है जिसका निर्माण कर उन्होंने दलितों का शोषण किया। वह उनका विरोध करने के लिए नवीन मिथकों का निर्माण कर रहा है। प्रो. चौथीराम ने मलखान सिंह की कविता 'अंधड़' की भूमिका में लिखा है कि 'महज इत्तेफाक नही है' शीर्षक कविता आज भी अर्थ के मिथ से आक्रान्त उन तथाकथित शुद्धवादियों के मिथ्या दंभ पर तीखा व्यंग्य है। जो रक्त-गोत्र की शुद्धता से लेकर भाषा, साहित्य एवं कला-संस्कृति तक में शुद्धता की तलाश करते है। और अपने को लम्बी नाक वाले आर्यों की संतान कहने में गर्व का अनुभव करते हैं । शुद्धता के अहं से पीड़ित ऐसे ही लोगों को सम्बोधित करते हुए आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'अशोक के फूल' निबंध में

[136] मलखान सिंह, सुनो ब्राहमण,पृ.सं : 48

लिखा था कि सब कुछ अविशुद्ध है । सब कुछ मिलावट है । इस कविता को पढ़ते समय आर्य ग्रंथों की याद सहसा ताजा हो जाती है । जिसमें द्रविड़ों के लिए काले, अनासे और नकटे आदि शब्दों के प्रयोग से उनके प्रति घृणा का भाव व्यक्त किया गया है । उनको अपने से नीचे कहकर अपमानित किया गया । आज सवर्ण शैली में दलितों को जलील करता आ रहा है यह कविता उसी और संकेत करती है -

"महज इत्तेफाक नही है यह की सदियों से वे ।

साढ़े तीन हाथ लम्बी नाक लिए । अवतरित होते है ।

हम पैदा होते है। नकटे । नकटे ही मर जाते है ।" [137]

कवि ने 'तुम्हारा न्याय' नामक कविता में सदियों पुरानी चली आ रही 'मोक्ष' रुपी मिथक परम्परा का वास्तविकता को स्पष्ट किया है कि इस मिथकीय कल्पना का शिकार हमेशा से दलित समाज होता रहा है । कविता में द्रष्टव्य है -

"मोक्ष के नाम

पूजाता है पत्थरों को

सुधर्म के नाम

गुलामी पढ़ाता है ...।"[138]

[137] मलखान सिंह, अंधड़, भूमिका, प्रकाशनाधीन

[138] मलखान सिंह, अंधड़, भूमिका, प्रकाशनाधीन

दलित समाज मोक्ष, धर्म, स्वर्ग, नरक, आदि ब्रहाजाल का शिकार बनाया गया। धर्म के नाम पर बेगारी और गुलामी कराते रहे। जाति के नाम पर हमेशा उस दौड़ से बाहर ही रखा गया था। उस दौड़ का मतलब सामाजिक अधिकार से वंचित करता रहा है वह समाज जिस समाज के इस मिथकों का हम पालन करते रहे हैं। वही दलितों के साथ निर्ममता और अमानवीय व्यवहार करता है।

दलित कवियों ने हजारों साल से चली आ रही कुप्रथाओं,अन्धविश्वासों, पारम्परिक मान्यताओं को पौराणिक मिथकों का प्रयोग कर जड़ से समाप्त करने की एक पहल शुरू की है। जिससे एक सौंदर्य समाज की स्थापना की जा सके। इसीलिये वह सिर्फ पौराणिक कथाओं और मिथकों की पुनर्व्याख्या करता है। "धर्म, दर्शन, पौराणिक मिथकों की पुनर्व्याख्या दलित कविताओं की विशेषता है। हिन्दू दर्शन समस्त मानव की ही नहीं सजीव मात्र की आत्मा को एक ही आत्मा को एक ही ब्रम्हा का अंश मानता है। लेकिन दलितों के प्रति उसकी निर्ममता अमानवीय है -

तुम्हारे रचे शब्द

तुम्हें ही डसेंगे सांप बनकर

गंगा के किनारे कोई वट वृक्ष ढूंढ लो

* * *

मै नहीं जनता

शायद आप जानते हो।"[139]

[139] ओमप्रकाश बाल्मीकि,दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र , पृ. सं : 89

कवि ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में इस व्यवस्था को रचने वालों को सन्देश देते हुए कहा है कि वह अब उसी के लिए खतरा उत्पन्न कर देगी क्योंकि अगर कहीं गलती से उसकी आत्मा किसी चूहड़े के घर पैदा हो जाए तो वह उसके लिए पाप होगा इसलिए वह अब कहीं एकांत में अपने लिये कोई वटवृक्ष ढूंढ ले यह एक प्रकार का व्यंग्य है |

उपसंहार

कविता साहित्य की लोकप्रिय विधाओं में से एक है। दलित साहित्यकारों ने कविता की अनुभूति को अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बनाया है। यह कविता प्रेम, सौन्दर्य, श्रृंगार से रहित दलितों के शोषण उत्पीड़न एवं दर्द भरी दासता को बयां करती है। यह स्वंतत्रता, समानता और बधुत्व की स्थापना एवं लोकतंत्र की प्रतिष्ठा को बरकरार रखती है इसीलिए इसमें समतामूलक और समाजवादी समाज की परिकल्पना गयी है।

मलखान सिंह समकालीन दलित कवियों में से एक है क्योंकि उनकी कविता में जो अनुभव वर्णित है, वह आत्म कथानक संघर्ष के रूप में उकेरा गया है। जिस प्रकार अन्य दलित कवियों को आत्मकथा लिखने के बाद प्रसिद्धि मिलती है। उसी प्रकार मलखान सिंह को अपनी कविता संग्रह 'सुनो ब्राह्मण' से पहचान मिलती है। मलखान सिंह की कविता अनुभव पर आधारित है। जिसे उन्होंने स्वयं स्वीकार किया है। 'सुनो ब्राह्मण' मेरा भोगा हुआ याथार्थ सच है जो दलित के रूप में आज भी दलित समाज भोग रहा है। उसी भोगे हुए सच की यथार्थ अभिव्यक्ति 'सुनो ब्राह्मण' में हुई है। अधिकांश दलित कवि गाँव से आये हैं। मलखान सिंह की पृष्ठभूमि भी गाँव से ही है। पर जिस तरह से गाँव उनकी कविताओं में आता है, वह इससे पहले किसी अन्य दलित कवि में नहीं आया है।

उनकी कविताओं में गाँव की वास्तविक छवि पाठक के सामने प्रस्तुत होती है। जिसे वे पहली कविता 'मै आदमी नहीं हूँ' से अंतिम कविता 'सुनो ब्राह्मण' तक में हमें दलितों के उसी गाँव से रू-ब-रू कराते हैं जिसे डॉ॰ आबेडकर ने 'घेटो' की संज्ञा दी थी। मलखान सिंह इस दौर के पहले ऐसे कवि हैं जिन्होंने आदमी और 'दलित के बीच फर्क को उभारा है और आदमी के नाम पर लिखी जा रही समकालीन जनवादी कविता को चुनौती दी है। नागार्जुन जैसे (मार्क्सवादी)

जनकवियों में हमें दलित पीड़ा की वह अनुभूति नहीं मिलती है जो मलखान सिंह की 'मै आदमी नही हूँ' कविता में मिलती है। जिस कविता में दलित को दो पाया जानवर बताया गया है जिसकी पीठ नंगी है। 'पीठ नंगी' बहुत ही मार्मिक और गहरे अर्थबोध को समेंटे हुए है। जानवर की पीठ तो उसका मालिक ढक देता है पर दलित उस जानवर के समान है जिसकी पीठ कोई नहीं ढ़कता है। सबके सब मात्र सहानुभूति दिखाते हैं। पर समाज से लेकर सत्ता तक कोई भी उसका साथ नहीं देता है।

गाँव में आज भी जातिवाद, गरीबी, अशिक्षा, अन्याय, अत्याचार पल रहा है। जिसे मार्मिकता और आक्रोशपूर्ण शब्दों के माध्यम से इन्होंने अभिव्यक्त किया है। मलखान सिंह घनीभूत दलित संवेदना के कवि है। यह संवेदना चार स्तरों से होकर निर्मित हुई है।

पहले स्तर पर दलितों में यातना का तीव्र बोध है। यह यातना वैयक्तिक नहीं, सामुदायिक है। सदियों से दलित समुदाय पर जो अत्याचार होते रहे हैं वह सामूहिक स्मृतिकोष में मौजूद है। यातना के इस पूँजीभूत रूप को कवि ने अपनी रचना की पूँजी बनाया है। दूसरे स्तर पर मलखान सिंह ने उन कारणों की पहचान की जो इस यातना के लिए जिम्मेदार रहे हैं। तीसरे स्तर पर उत्पीड़नकारी, ब्राह्मण केन्द्रित समाज व्यवस्था का सम्पूर्णतया नकार है और चौथे स्तर पर उनका भास्वर आक्रोश व्यक्त है यह आक्रोश उन ताकतों के खिलाफ है जो दमन का सिलसिला टूटने नहीं देती और समता मूलक समाज बनाने की हर कोशिश को नाकाम करने में जुटी रहती है। असल में मनुवादी समाज व्यवस्था के प्रति कवि का गुस्सा इतना प्रबल है कि उनकी रचनाशीलता के अन्य पक्ष नहीं दिखते, सिर्फ आक्रोश का ज्वर उमड़ता नजर आता है। उनकी कविता में आक्रोश निश्चित ही केन्द्रीय तत्व है और वही उनकी रचना–प्रक्रिया है।

मलखान सिंह की भाषा में नयापन दिखाई पड़ता है वे प्रगतिशील चेतना से युक्त कवि हैं। उन्होंने स्वयं अपने अनुभूतियों को नई-नई भाषा में गढ़कर व्यक्त किया है। इसीलिए वे अपने भाषा में सरल से सरल और मारक शब्दों का प्रयोग करते हैं। जिससे उनकी भाषा व्यक्ति

की चेतना पर सीधा असर करती है। ये अपनी अनुभूतियों को सशक्त एवं सटीक रूप से पाठक तक पहुँचाना चाहते हैं। इसीलिए नए-नए शब्दों का इस्तेमाल करते हैं । 'सुनो ब्राह्मण, नया शब्द प्रयोग करके उन्होंने पाठक के मस्तिष्क पर सीधा प्रहार किया है जिससे पाठक कविता की ओर आकर्षित होता है। उन्होंने ग्रामीण बोलचाल की भाषा को भी गढ़ा है। जिसका प्रयोग करते हुए समाज में लोगों के मुख से सुना जाता है, जो बात - बात में 'मा-चो-बहन चो, कमींन कौम आदि का प्रयोग करता है। इन शब्दों का प्रयोग कवि ने कलात्मक ढंग से किया है। कहीं-कहीं इनकी कविता में मुहावरे का भी प्रयोग मिलता है। जिससे पाठक प्रभावित होते हैं और जीवन की सच्चाइयों से रूबरू भी होते हैं। मुहावरे के प्रयोग से कविता जीवन्त हो उठती है। इनकी भाषा में बोधगम्यता, आक्रामकता और सम्प्रेषणीता का नयापन दिखाई देता है। यही विशेषता मलखान सिंह को अन्य कवियों से अलग करती है।

अन्ततः कहा जा सकता है कि मलखान सिंह की कविताएँ दलित समाज के श्रमशील और उपेक्षित वर्गों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती है। साथ ही समाज के लोगों को स्वतंत्रता और समानता का सन्देश देती है की वे शोषित पीड़ित एवं असहाय जन के प्रति मानवीयता का भाव रखें।

परिशिष्ट

'कविता कर्म अर्जित कौशल है'

प्रश्न - आपने कविता लिखना कब शुरू किया ?

उत्तर – मैं यह स्वीकार नहीं करता कि कविता लिखनें की शक्ति प्रकृति प्रदत्त होती हैं हाँ इतना अवश्य स्वीकार करता हूँ कि कविता पढ़ने का शौक बचपन से ही था यही शौक कालांतर में जाकर लेखन में परिवर्तित हो गया । शुरुआती कविताओं के पीछे किशोर मन की भावुकता अधिक थी । लेकिन उम्र बढ़नें के साथ-साथ सामाजिक विद्रूपताएं हावी होकर कविता का रूप लेने लगी । छात्रावास जीवन में पग-पग पर 'जाति' अपमान झेलना, मेस में दलित छात्रों के साथ भेदभाव बरता जाना, कतिपय अध्यापकों द्वारा 'जाति' आधार पर व्यवहार करना कविता लिखने की लालसा को और तीव्र करने लगे ।

प्रश्न - आपके अनुसार 'दलित' और 'दलित चेतना' किसे कहेंगे ?

उत्तर - भारतीय सामाज के अंतिम पायदान पर बैठा हुआ व्यक्ति दलित है । जिसके पास शताब्दियों तक सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक अधिकार नहीं थे, जो सामाजिक असामनता और घृणा का शिकार था । ब्राह्मणी व्यवस्था द्वारा थोपी गयी बन्दिशों के अधीन वह पाशविक जीवन जीने के लिए बाध्य था । इन बन्दिशों के प्रति जागरूकता और उन्हें उखाड फेकना ही दलित चेतना है जो वर्तमान दलित साहित्य की विभिन्न विधाओं में प्रकट हो रही है । जिसका लक्ष्य लोकतांत्रिक समाज की स्थापना करना है ।

प्रश्न - आपकी नजर में भारत की सामाजिक संरचना में दलित-दुर्दशा के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक का कारण क्या है ?

उत्तर - व्यक्ति के चेतना और उसके व्यवहार के निर्धारण में धर्म की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है । जिसे हम संस्कृति के नाम से पुकारते हैं । भारतीय समाज में ब्राह्मणी संस्कृतिक व्यवस्था ने पूरे-पूरे दलित समुदाय को वस्तु के रूप में बदल दिया । उसकी स्वतंत्र चेतना को सदैव के लिए नष्ट कर परिवर्तन के हर रास्ते को रोक दिया । यह ब्राह्मणी व्यवस्था ही है । जिसे आज भी हमारा समाज कोढ़ की तरह झेल रहा है ।

प्रश्न - आपके अब तक दो कविता संग्रह 'सुनो ब्राह्मण' और 'अंधड़' आ चुके हैं पहले संग्रह का शीर्षक 'सुनो ब्राह्मण' रखने के पीछे की दृष्टि क्या है ? उद्देश्य ब्राह्मण का ह्रदय परिवर्तन करने का या दलितों में परिवर्तन की चेतना जागृत करना ?

उत्तर - मेरा दूसरा कविता संग्रह 'अंधड़' नाम से प्रकाशन हेतु तैयार है । पहले संग्रह 'सुनो ब्राह्मण' शीर्षक रखने के पीछे दलित वर्ग में परिवर्तन की चेतना पैदा करना प्रमुख था । रहा सवाल ब्राह्मण के ह्रदय परिवर्तन का वह इतना चिकना घड़ा है कि उसके ऊपर शब्दों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता साथ जाति के रूप में प्राप्त वह अपने विशेषाधिकारों को छोड़ने के लिए आज भी तैयार नहीं है ।

प्रश्न - 'सुनो ब्राह्मण' संग्रह की इसी शीर्षक की अंतिम कविता में 'ब्राह्मण' के अंत की कामना की है । यहाँ ब्राह्मण के अंत से क्या अभिप्राय है ?

उत्तर - 'सुनो ब्राह्मण' कविता की प्रथम दो पक्तियां 'हमारे दासता का सफर तुम्हारे जन्म से होता हैं और इसका अंत तुम्हारे अंत के साथ होगा' इस तथ्य को दर्शाती है कि भारतीय सामाज

में व्याप्त चतुष्वर्णी सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करने का श्रेय ब्राह्मणी व्यवस्था को है। जब तक हमारी चेतना से ब्राह्मणी व्यवस्था के संस्कार समाप्त नहीं होगें तब तक यह व्यवस्था भी बनी रहेगी। अस्तु वर्ण व वर्ग विहीन समाज की स्थापना करने के लिए ब्राह्मणवाद का समाप्त होना अनिवार्य है।

प्रश्न - 'सुनो ब्राह्मण' संग्रह में दलित के आदमी से जानवर बनने की अमानवीय त्रासदी का चित्रण है। जीते जागते मनुष्य को डी ह्युमनाइज करने वाली व्यवस्था के जानवर से ज्यादा खूँखार और नृशंस होगी ?

उत्तर - ब्राह्मणी व्यवस्था कितनी नृशंस और खूँखार है इसका अंदाजा आप केवल शब्दों से नही लगा सकते इसके वास्तविक स्वरुप को समझने के लिए किसी दलित परिवार में एक पूरी उम्र गुजारनी होगी तब महसूस कर सकेगें की यह व्यवस्था कितनी कुरूप अमानवीय और कितनी पाशविक है।

प्रश्न - 'सुनो ब्राह्मण' संग्रह की एक कविता में दलित जीवन में गुणात्मक परिवर्तन दिखाया गया है जहाँ बाप बेगार करने के बजाय कविता लिखने लगा और बेटा स्कूल किन्तु माँ अभी भी 'मैला' कमाने गई। आपके अनुसार दलित स्त्री के जीवन में परिवर्तन कब आयेगा।

उत्तर - संकलन की कविता 'मुझे गुस्सा आता है' के अन्तर्गत तीन पिढ़ियों के मानसिक सोच को दर्शाया गया है। जिसमें मैं (मुझे) उस पीढ़ी का प्रतीक है जिसका जन्म परतंत्र भारत में हुआ, स्वतंत्र भारत में उसने शिक्षा दीक्षा प्राप्त की इसके बावजूद भी वह सामाजिक सम्मान नही प्राप्त कर सका, पढ़नें लिखनें के बावजूद भी ब्राह्मणी व्यवस्था ने उसे कुकर दृष्टि से देखा और वैसा ही व्यवहार किया। 'मै' को 'मैं' में खुले विद्रोह की क्षमता नहीं है इसलिए नहीं की अर्थ व्यवस्था उसे ऐसा करने से रोकती है।

इसलिए वह अपने क्रोध को शब्दों में व्यक्त करता है । बेटा द्वितीय पीढ़ी का प्रतीक है जो आजाद भारत में पैदा हुआ है । जो सामाजिक अन्याय भेदभाव, आसमानता के प्रति खुला विद्रोह के लिए उतारू है लेकिन मै के रूप में पहली पीढ़ी उसे करने से रोक रही है । क्योंकि उसकी दृष्टि में सामाजिक परिवर्तन के लिए मात्र एक व्यक्ति का विरोध पर्याप्त नहीं है ।

पत्नी मैला कमाने गयी है का प्रतीक समय के साथ अंतिम पायदान में खड़े वाल्मीकि समुदाय से लिया गया है । जहाँ आज भी मैला साफ करने का दायित्व महिला के कंधों पर है शिक्षा ही वह अस्त्र है जिसके द्वारा दलित स्त्री की स्थिति में गुणात्मक परिवर्तन आ सकता है ।

प्रश्न - आपकी कविताओं में दलितों की आर्थिक दुर्दशा का चित्रण अधिक है इसलिए आलोचकों ने आपको 'दलित कविता का मुक्तिबोध' कहा है | आप इससे कहां तक सहमत हैं ?

उत्तर - दलित साहित्य के प्रमुख आलोचक कँवल भारती के शब्दों में मैनें अपनी किसी टिप्पणी में कहा था कि मलखान सिंह दलित कविता के मुक्तिबोध हैं । इसको लेकर यह निष्कर्ष निकाल लिया गया की वे मुक्तिबोध के परम्परा के है । यह एकदम गलत निष्कर्ष है । दरअसल मेरे कहने का अर्थ यह था कि जिस तरह मुक्तिबोध अपनी कविता 'ब्रह्मा राक्षस' के परिकल्पना के कारण हिन्दी कविता में उपेक्षित किये गये, उसी तरह मलखान सिंह रापी, सुतारी, कन्नी, वसूली छैनी, हथौड़ी और भूख की वजह से दलित कविता में उपेक्षित कर दिए गये ये सारी चीजें दलित से सम्बन्ध रखती है । यह उनके आलोचकों ने नही सोचा । उनकी दृष्टि ने मलखान सिंह की कविताओं में जाति का वह दर्द भी नहीं देखा जिसका चित्र 'मै आदमी नही हूँ' से 'सुनो ब्राह्मण' तक हर कविता में मिलता है । मुक्तिबोध को काफी लम्बे समय के बाद हिन्दी साहित्य में स्वीकार किया गया, मलखान सिंह को पूरे दस साल बाद मान्यता मिली । इस समानता को छोड़कर मुक्तिबोध और मलखान सिंह में कोई समानता नही है । मुक्तिबोध में प्रगतिशीलता है पर हिन्दू संस्कृति और ब्राह्मणवाद के सवाल पर वे संशोधनवादी है । लेकिन मलखान सिंह

संशोधनवाद के धुर विरोधी है। वे ब्राह्मणवाद के अंत के साथ दलितों की दासता का अंत मानते है।

प्रश्न - मुक्तिबोध के सर्वहारा और आपके 'दलित' में क्या समानता या भिन्नता है।

उत्तर - नि:संदेह मुक्तिबोध जनवाद के बेजोड़ कवि है। उन्होंने अपनी कविता 'ब्रह्मा राक्षस' में स्वयं को हिन्दू संस्कृति और ब्राह्मणवाद के सवाल पर संशोधनवादी के रूप में प्रस्तुत किया है।

जबकी दलित साहित्य ब्राह्मणवाद का हर दृष्टि से खात्मा करने के लिए कटिबद्ध है। दलित साहित्य मानता है कि ब्राह्मणी व्यवस्था में किसी भी प्रकार का संशोधन मानवीय नहीं बन सकता है और न ही उसे लोकत्रांत्रिक व्यवस्था के अनुरूप ढाला जा सकता है। यही अंतर मुक्तिबोध के सर्वहारा और दलित साहित्य के सर्वहारा में भिन्नता पैदा करता है।

प्रश्न - आपने अपनी कविता हमारे गाँव में अब्दुल विस्मिल्लाह जैसे लोगों की भारतीय गाँव की आदर्शवादी अवधारणा के जवाब में लिखी है यह दलित नजरिए से भारतीय गाँव का प्रमाणिक चित्रण है। आप गाँव और शहर के दलितों में क्या अंतर देखते हैं।

उत्तर – संकलन की कविता हमारे गाँव में भारतीय समाज का समाजशास्त्रीय विश्लेषण है जिसमें 'हरि' शब्द सवर्ण जातियों के व्यक्तियों के लिए और 'जन' शब्द दलित के लिए आया है। गाँव का दलित आज भी सवर्ण के कुँए से पानी नही भर सकता, सवर्ण के रसोई में प्रवेश नहीं कर सकता और न हि साथ एक पंक्ति में बैठ भंडारा का सावर्जनिक प्रसाद ग्रहण कर सकता है। गांव की पूरी-पूरी अर्थ व्यवस्था दलित के कंधे पर है और पूरे-पूरे उत्पादन पर सवर्ण का अधिकार है। कविता में व्यक्त दूसरी पंक्ति का जन्म पिछड़े वर्ग का प्रतीक है जो सवर्ण मानसिकता से ग्रसित है और दलित वर्ग के साथ वैसा ही व्यवहार करता है। जैसा की सवर्ण और दलित वर्ग के साथ होने वाले संघर्ष में वह सवर्ण का साथ देता है।

शहर का दलित गांव के दलित अपेक्षा सामाजिक भेदभाव का उतना शिकार नही है जितना गाँव का है।

प्रश्न - बाबा साहब डा.अम्बेडकर ने दलितों को गांव छोड़ने की सलाह दी है। आज के सन्दर्भ में आप इस सलाह को किस रूप में देखते है ?

उत्तर - एनिलिएशन ऑफ़ कास्ट पृष्ट 47 पर बाबा साहब ने कहा था कि भारतीय समाज में दो बड़े शत्रु हैं ब्राह्मणवाद और पूंजीवाद मेरी कविताएँ उक्त दोनों शत्रुओं से जूझने के लिए पाठक की चेतना को तैयार करती है। तभी हम बाबा साहब की वर्ण व वर्ग विहीन समाज की सामाजिक संकल्पना को साकार कर सकते है।

प्रश्न - आपने ने अपनी कविताओं में भारत के सभी प्रमुख धर्मो ब्राह्राण, इस्लाम, सिख और ईसाई आदि के पाखण्ड को उजागर किया दलितों के सन्दर्भ में आप धर्म को किस रूप में देखते हैं ?

उत्तर - इस सम्बन्ध में मेरे द्वितीय कविता संकलन 'अंधड़' में सम्मिलित कविता 'पतित पावनी गंगा' पठनीय है

कैसा अजूबा यह

कि आज

मंदिर हो

मस्जिद हो

गिरजा हो

या हो गुरुद्वारा

सभी के द्वार से

निकलने वाले रास्ते

उन्हीं सकरें-सड़ांध भरे

गलियारों मे जा सिमटतें है

जिन्हें छोड़ने के लिए कभी

टोपियाँ बदली थी हमने।

अस्तु यह कटु सत्य है कि आज भारत में उपस्थित प्रत्येक धर्म ब्राह्मणी व्यवस्था के दोषों से ग्रसित हो चुका है। ऐसी स्थिति में केवल बौद्ध धर्म ही एक ऐसा धर्म है। जो व्यक्ति को वैज्ञानिक सोच वैश्विक दृष्टि प्रदान करते हुए हर प्रकार के पाखण्ड और आसमानता के विरोध में आवाज उठाते हुए लोकत्रांत्रिक समाज की ओर ले जाता है|

प्रश्न - आपकी कविताओं में ब्राह्मण व्यवस्था के पाखण्ड के साथ उसके अमानवीय क्रूर चेहरे को उघाड़ने की सफल कोशिश की गई है जिससे दलित कविता का प्रतिरोधी स्वर बड़े तीखे रूप में व्यक्त हुआ है। लेकिन ऐसा लगता है कि उसमें दलित की अपनी वैकल्पिक व्यवस्था स्पष्ट रूप से नहीं उभर सकी है। आपकी नजर में क्या दलित अभी अपनी वैल्कपिक स्थिति बनाने की स्थिति में नहीं है।

उत्तर - 'सुनो ब्राह्मण' मेरा भोगा हुआ सच है जो दलित के रूप में आज भी दलित समाज भोग रहा है। उसी भोगे हुए सच की अभिव्यक्ति ही 'सुनो ब्राह्मण' के अन्तर्गत हुई है मेरा द्वितीय

संकलन 'अंधड़' उस वैकल्पिक व्यवस्था को प्रस्तुत है। जो कि दलित समाज को जी रहे पाशविक जीवन से निकलने का रास्ता दर्शाता है।

प्रश्न - आपके अनुसार भूमण्डलीकरण के दौर में दलित की स्थिति कैसी होगी ?

उत्तर - भूमण्डलीकरण को उत्तर साम्राज्यवाद के नाम से भी पुकारते हैं जिसका आधार नवउदारवाद है। भूमण्डलीकरण पूँजीवादी व्यवस्था का सर्वाधिक क्रूर चेहरा है। जो दलित समाज को हर क्षेत्र से बेदखल कर उस स्थान पर खड़ा कर देगा। जहाँ उसकी प्रगति का हर रास्ता बंद होगा।

मेरे द्वितीय कविता संकलन अंधड़ में भूमण्डलीकरण पर लिखी यह कविता उसी यथार्थ को व्यक्त कर रही है।

कैसा उदारवाद यह

जो हमें

हमारे रछोड़

मुफतखोरों को लूट की

खुली छूट दे

तिजोरियां खुद की भरता है।

आज !

देश की शिक्षा

देश की चिकित्सा

देश के बाजार

आकाश-पाताल

धरती की कोख तक

बस उन्हीं की सत्ता चलती है

नगर चौराहों पर बिकने वालों की

इतनी भीड़ है कि

पाँव रखने की जगह नही

गाँव बंजर हो गये है

हम सिमाने पर खड़े पेट के भेडिये से जूझ रहे है

और सत्तासीन

खुद की गर्दन मोटाई

छिपाने के लिए

मुफ्तखोर गर्दन को

प्रगति का पैमाना बना

घोषित कर रहे है कि

देश समृद्धि कर रहा है।

प्रश्न – दलित कविता के वैचारिक-दार्शनिक पक्ष में आप क्या कहना चाहेंगें ?

उत्तर – बिना किसी लाग लपेट के यह कहा जा सकता है की लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था है जो प्रत्येक व्यक्ति को समानता, स्वतंत्रता और प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए समान अवसर प्रदान करती है।

दलित साहित्य की वैचारिकी का दार्शनिक पक्ष लोकतांत्रिक वैचारिकी ही है जिसकी पहल सर्वप्रथम बुद्ध दर्शन ने की थी कालांतर में ज्योतिबा फुले, बाबा साहब अम्बेडकर, इसी वैचारिकी के पथ प्रदर्शक बने।

प्रश्न - आपकी नजर में दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र कैसे होगा ?

उत्तर- दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र चार तत्वों को लेकर चलता है।

1 श्रम के प्रति प्रतिष्ठा

2 व्यक्ति की गरिमा

3 व्यक्ति का कल्याण

4 व्यक्ति जीवन की सुन्दरता

यही दलित साहित्य के मूल आधार है।

प्रश्न - अन्य दलित कवियों से आपकी कविता कैसे और किस रूप में भिन्न है ?

उत्तर – इस प्रश्न का निर्णय मुझसे अधिक पाठक पर छोड़ दिया जाये तो ज्यादा श्रेष्ठ है।

प्रश्न- आज कल आप क्या लिख रहे है और भविष्य में क्या लिखने की योजना है ?

उत्तर- इस समय लेखन कार्य विल्कुल बंद है। जीवित रहने के लिए संघर्ष कर रहे हैं।

प्रश्न – क्या कविता के आलावा आप अन्य विधा लिखेगें ?

उत्तर- कविता के अलावा साहित्य की अन्य विधा लिखने का प्रयास ही नहीं किया ।

प्रश्न - दलित आत्मकथाएं दलित साहित्य का सर्वश्रेष्ठ रूप है । आपकी आत्मकथा कब आयेगी ?

उत्तर - निश्चित ही दलित आत्मकथाएं दलित जीवन की सर्वश्रेष्ठ कृतियाँ हैं । रहा सवाल मेरी आत्मकथा का अभी कुछ भी नहीं कहा जा सकता है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूंची

आधार ग्रन्थ

1. मलखान सिंह, सुनो ब्राह्मण, बोधिसत्व प्रकाशन, रामपुर उत्तर प्रदेश, प्र.सं. 1996

सहायक ग्रन्थ

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि, सदियों का संताप, समता प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 1990

2. ओमप्रकाश वाल्मीकि, बस्स बहुत हो चुका, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, प्र.सं. 1997

3 ओमप्रकाश वाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्य शास्त्र, राधा कृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 2014

4 कँवल भारती, दलित विमर्श की भूमिका, इतिहास बोध प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र.सं. 2002

5 कँवल भारती, दलित निर्वाचित कविताएँ, इतिहास बोध प्रकाशन इलाहाबाद 2006

6. कँवल भारती, दलित कविता का संघर्ष, स्वराज प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2012

7 जयप्रकाश कर्दम, जाति एक विमर्श, नवभारत प्रकाशन नई दिल्ली, द्वि. सं. 2004

8. जय प्रकाश कर्दम, गूंगा नहीं था मै, सागर प्रकाशन शाहदरा दिल्ली, तृ. सं. 2006

9. डॉ दयानंद क्रांती, साहित्य और सामाजिक क्रांती, विकल्प दिल्ली, 1997

10. मलखान सिंह, अंधड़, प्रकाशाधीन

11 मोहनदास नैमीशराय, आवाजें, समता प्रकाशन, नई दिल्ली 1998

12 रमणिका गुप्ता, दलित चेतना, नवलेखन प्रकाशन हजारी बाग 1998

13. रमणिका गुप्ता, दूसरी दुनिया का यथार्थ, नवलेखन प्रकाशन. प्र.सं. 1997

14 रमणिका गुप्ता, पीड़ा जो चीख उठी, भारतीय दलित साहित्य मंच, प्र.सं. 1998

15 रमणिका गुप्ता, दलित चेतना साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार, दिल्ली, प्र.सं. 2000

16 रमणिका गुप्ता, दलित रिपोर्टिंग, नटराज प्रकाशन दिल्ली 2007

17 रामशरण शर्मा, शुद्रो का प्राचीन इतिहास, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नई दिल्ली प्र.स.1984

18 शरण कुमार लिम्बाले, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र.सं. 2002

19 हुकम सिंह भास्कर, दलित राजनीति के मुद्दे, नई दिल्ली

पत्र-पत्रिकाएं

1.कथादेश, अगस्त हरिनारायण, दिल्ली 2008

2.दलित साहित्य वार्षिकी, जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली 2011

3. दलित अस्मिता, जुलाई दिसंबर ,विमल थोराट दिल्ली 2011

4. दलित अस्मिता, जनवरी जुलाई , विमल थोराट, दिल्ली 2014

5. दलित साहित्य, वार्षिकी जयप्रकाश कर्दम, दिल्ली 2009

अंतरजाल(इंटरनेट)

wikipidiya.org.com